हॅसना मना है. . . –1

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Hansna Manaa Hai-1 (Laughing is Prohibited-1)
Cover Page picture : Laughing Face
Published Under the Auaspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

हॅसना मना है... –1 7

1 ज़िन्दगी अक्लमन्दी से जियो 9

2 दो नुकसान 12

3 बलोनी से भरा हुआ 14

4 घोड़ों में अन्तर समझना 17

5 नौ भाई 20

6 सात खुश गॉव वाले 24

7 नौ बेवकूफ भाई 29

8 तीन बेवकूफ़ 32

9 बर्तन जो चलता नहीं 40

10 पीटर के दादा जी 44

11 याउन्डे शहर चला 53

12 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी 61

13 जिद्दी पत्नी 70

14 एक मेरा एक तुम्हारा 72

15 एक बछड़ा जो तीन बार बेचा गया 75

16 एक संत और एक विद्यार्थी 89

17 मैगा दवा 91

18 एक आदमी ने चोरी करना सीखा 94

19 न्यायप्रिय राजा फ़िरदी 97

20 नर मच्छर क्यों नहीं काटते? 104

21 भिखारी और रोटी 108

23 पादरी की आत्मा 118

24 यह सच है 129

25 मरजोरम का बर्तन 135

26 टिक्की टिक्की टैम्बो 144
27 किसान ज्योतिषी 149
28 दिमियॉ किसान 155
29 चमार ज्योतिषी 158
30 बहरा परिवार 187

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

हॅसना मना है... – 1

हॅसना स्वास्थ्य के लिये बहुत फायदेमन्द है। कहते हैं कि जो ज़िन्दगी में दिल खोल कर हॅसते हैं वे ज़्यादा दिन ज़िन्दा रहते हैं और स्वस्थ रहते हैं इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए हमने कुछ ऐसी कहानियों का संग्रह किया है जो तुम सबको हॅसा सकें। पर हम यहॉ तुमसे कह रहे हैं कि हॅसना मना है। है न कुछ उलटी बात। जानते हो ऐसा क्यों है?

क्योंकि "हॅसना मना है..." एक ऐसी कहानियों का संग्रह है जिसमें वे लोक कथाऐं शामिल की गयी हैं जिनको पढ़ कर यह लिखने के बावजूद कि "हॅसना मना है..." कोई भी हॅसे बिना नहीं रह सकता और कोई तो इतना हॅस सकता है कि शायद उसको हॅसी का ऐसा दौरा पड़ जाये कि उसकी हॅसी ही नहीं रुके। फिर क्या होगा ज़रा सोचो। इसीलिये हमने ऐसा लिखा है। हालॉकि ऐसी लोक कथाऐं कम मिलती हैं पर फिर भी कुछ ऐसी ही लोक कथाऐं यहॉ दी जा रही हैं जो इतनी हॅसी की हैं। इनमें कुछ लोक कथाऐं बेवकूफी की हैं तो कुछ अक्लमन्दी की हैं।

आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में ऐसी लोक कथाऐं भी अपना स्थान बना पायेंगी।

1 ज़िन्दगी अक्लमन्दी से जियो[1]

एक बार एक मल्लाह एक बहुत पढ़े लिखे और अक्लमन्द आदमी को नदी पार ले जा रहा था। नदी गहरी थी और चौड़ी थी सो रास्ता लम्बा था।

रास्ते में अक्लमन्द आदमी ने मल्लाह से बातें करनी शुरू कर दीं। आदमी ने मल्लाह से पूछा — "तुम कहॉ तक पढ़े हो?"

मल्लाह बोला — "हुजूर हम लोग तो मल्लाह हैं हमको पढ़ने लिखने का मौका ही कहॉ मिलता है?"

आदमी ने फिर पूछा — "तब तो तुमको गणित और विज्ञान भी नहीं आता होगा?"

मल्लाह अपनी नाव खेते हुए बोला — "नहीं सरकार। मैं यह सब कुछ नहीं जानता।"

आदमी बोला — "ओह तुम्हारी भी क्या ज़िन्दगी है। तुम्हारी तो चौथाई ज़िन्दगी बेकार चली गयी। अगर तुमने गणित और विज्ञान पढ़ा होता तो आज तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत अच्छी होती।"

कुछ देर बाद उस आदमी से रहा नहीं गया वह फिर बोला — "क्या तुमने साहित्य पढ़ा है?"

---

[1] Live Your Life Wisely – a story from unknown place. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=257
Adopted, retold and written by Mike Lockett.
[We used to hear this story from my father in our childhood]

मल्लाह कुछ सकुचाते हुए बोला — "नहीं जनाब। मैं तो अपना स्कूल भी पूरा नहीं कर सका। मुझे अपने परिवार का पेट भरना था सो मुझे अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी। मैं तो ठीक से पढ़ना भी नहीं सीख सका इसलिये मैं साहित्य भी नहीं पढ़ पाया।"

आदमी बोला — "उफ़ तब तो तुम्हारी आधी ज़िन्दगी बेकार चली गयी। पढ़ाई बहुत अच्छी चीज़ है। अगर तुमने पढ़ लिया होता तो तुम्हारी ज़िन्दगी बहुत अच्छी होती।"

यह कह कर मल्लाह के लिये अफसोस करते हुए वह आदमी चुप हो गया। कुछ देर बाद उससे फिर नहीं रहा गया तो वह उससे फिर बोला — "क्या तुम कभी दूसरे देशों में गये हो?"

मल्लाह सिर झुकाते हुए बोला — "नहीं जनाब। मैंने तो अपनी सारी ज़िन्दगी इसी नदी में नाव चलाते हुए ही गुजार दी।"

अबकी बार वह आदमी इस मल्लाह के लिये सचमुच में ही बहुत दुखी था। वह दुखी मन से बोला — "ओह तब तो तुम्हारी तीन चौथाई ज़िन्दगी बेकार चली गयी। तुमको स्कूल में रहना चाहिये था और मेरी तरह से अपनी पढ़ाई पूरी करनी चाहिये थी।"

उसी समय मल्लाह को अपने पैरों के पास कुछ पानी महसूस हुआ। उसने नीचे देखा तो उसको लगा कि उसकी नाव तो डूबने वाली है और नदी का दूसरा किनारा अभी बहुत दूर था।

उसने तुरन्त ही उस आदमी से पूछा — "सरकार अब मैं आपसे एक सवाल पूछूँ?"

"हॉ हॉ पूछो।"

"सरकार आपने तैरना सीखा है?"

आदमी की कुछ समझ में नहीं आया कि वह मल्लाह उससे यह सवाल क्यों पूछ रहा है।

वह अपनी मस्ती में बोला — "नहीं। मैंने तो अपनी सारी ज़िन्दगी गणित, विज्ञान और साहित्य पढ़ने में ही गुजारी है। और जवानी अपने काम धन्धे के सिलसिले में विदेश घूमने में। मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि तैरना सीखना कोई बहुत जरूरी था।"

मल्लाह बोला — "ओह तब तो आपने अपनी सारी ज़िन्दगी बेकार कर दी।"

"क्यों?"

पर तब तक तो मल्लाह अपनी जान बचाने के लिये नदी में कूद पड़ा था।

सोचो बच्चो उस पढ़े लिखे अक्लमन्द आदमी बेचारे पर क्या गुजरी होगी और उसका क्या हुआ होगा?

2 दो नुकसान[2]

हॅसी और दया की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ली है। यह कथा भी इससे पहले वाली लोक कथा "ज़िन्दगी अक्लमन्दी से जियो" जैसी है।

एक बार की बात है कि एक विद्वान एक जहाज़ समुद्र में यात्रा कर रहा था। कुछ ही देर में समुद्र में तूफान आने के लक्षण दिखायी देने लगे।

समुद्र में तूफान आने के समय उस विद्वान ने सुना कि जहाज़ का कैप्टेन अपनी टीम को कुछ हुक्म दे रहा था पर वह उसको समझ में नहीं आया कि वह कह क्या रहा था।

जब खतरा टल गया तब उसने कैप्टेन से पूछा कि वह किस भाषा में बोल रहा था। नाविक ने जवाब दिया — "अपनी मातृभाषा में।"

विद्वान ने इस बारे में अपना अफसोस प्रगट किया कि देखो एक आदमी ने अपनी आधी ज़िन्दगी बिता दी और वह ठीक से अपनी भाषा भी नहीं बोल पाया।

[2] Two Losses – a folktale from Georgia, Europe.
Taken from the book "Georgian Folktales" by Marjorie Wardrop. Its Hindi translation is available at hindifolktales@gmail.com in E-book form free of charge.

कुछ घंटों बाद तूफान फिर आया। इस बार जहाज़ में एक दरार पड़ गयी और जहाज़ में पानी भरने लगा। सो कैप्टेन विद्वान के पास गया और उससे पूछा कि क्या उसको तैरना आता था।

विद्वान आदमी बोला कि यह तो उसने कभी नहीं सीखा। उसको तो इसकी कभी जरूरत ही नहीं पड़ी।

कैप्टेन बोला — "मुझे बहुत अफसोस है जनाब कि तब तो आपकी सारी ज़िन्दगी ही गयी। क्योंकि कुछ ही देर में यह जहाज़ समुद्र की तली में डूब जायेगा। मैं और मेरे साथी तो तैर कर किनारे चले जायेंगे। पर आप क्या करेंगे।

आपने बहुत अच्छा किया होता अगर आपने अपनी ज़िन्दगी का कम से कम कुछ हिस्सा तैरना सीखने में लगाया होता।"

3 बलोनी से भरा हुआ[3]

एक बार बहुत सारे कौए एक पेड़ पर बैठे हुए थे। उनमें से काफी कौए तो चुपचाप बैठे आराम कर रहे थे पर तीन बूढ़े कौए कॉव कॉव किये जा रहे थे। वे एक दूसरे से अपनी बड़ाई किये जा रहे थे कि वे क्या क्या कर सकते थे।

बाकी कौए जानते थे कि वे तीनों कौए जो कुछ कह रहे थे वह सब झूठ था पर क्योंकि वे बड़ी उम्र के थे सो वे उनकी इज़्ज़त करते थे इसलिये अपना मुॅह बन्द किये चुप बैठे हुए थे।

जब वे तीनों कौए उस पेड़ पर बैठे इस तरह बात कर रहे थे तो उनकी नजर सामने के खेत पर पड़ी और फिर वहॉ बने एक मकान पर पड़ी। उन्होंने देखा कि उस मकान की एक खिड़की खुली हुई है।

उस खिड़की में से उन्होंने देखा कि किसान की पत्नी ने एक बर्तन भर कर बलोनी[4] बनाये हैं और उनको बना कर उसने खिड़की पर ठंडे होने के लिये रख दिया है।

---

[3] Full of Bologna – a story from an unknown place of Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=178
Adopted, retold and written by Mike Lockett. This story seems like from Germany or Italy, Europe.

[4] Bologna / baloney. “Bologna” is the name of a city in Italy, pronounced “boh-LOAN-ya.” But although the sausage named after the city in English is spelled the same, it is prononced “buh-LOAN-ee” and is often spelled “baloney.” Either spelling is acceptable for the sliced meat product.

बहुत सारे कौए आदमियों से बचते हैं पर ये तीनों कौए तो यह दिखाने के लिये तैयार थे कि वे कितने बहादुर थे।

सो वे तीनों कौए होशियारी से पेड़ से उड़े और उस घर की तरफ उड़ चले जिसकी खिड़की पर वे बलोनी ठंडे हो रहे थे। वहाँ जा कर वे उस बर्तन के हैन्डिल पर बैठ गये जिसमें बलोनी रखे हुए थे और उन बलोनियों को खाने लगे। कुछ ही देर में उन्होंने वे सारे बलोनी खत्म कर दिये।

जब वे बलोनी खा रहे थे तो एक कौआ अपनी शान और बघारी। वह बोला कि वह उड़ने में इतना अच्छा था कि वह अपनी सबसे ज़्यादा तेज़ गति से दूर खेत के चारों तरफ उस पार तक बिना रुके उड़ कर फिर वहीं वापस आ सकता था।

अब तक दूसरे कौए उसकी इस शान बघारने से तंग आ चुके थे सो उन्होंने कहा कि अगर वह ऐसा कर सकता था तो वह अपनी बात साबित कर के दिखाये।

सो वह कौआ उड़ चला। आधी दूर पहुँचने से पहले ही वह जमीन पर गिर गया और दिल के दौरे से मर गया।

दूसरा कौआ बोला — "मैं तो बहुत अच्छी हालत में हूँ।" कह कर वह भी उस बर्तन के हैन्डिल से अपनी सबसे ज़्यादा तेज़ गति से उड़ा। वह खेत के चारों तरफ उड़ आया पर जब वह वापस आ रहा था तो आधे रास्ते में ही मर गया।

तब तक तीसरा कौआ अपनी शान बघार रहा था — "मैं तो इन सबमें अच्छा हूँ।" कह कर वह भी उस बर्तन के हैन्डिल से अपनी सबसे ज़्यादा तेज़ गति से उड़ चला।

वह भी खेत के चारों तरफ उड़ आया और आखीर में आ कर दूसरे कौओं के साथ बैठ गया। पर वहाँ आ कर वह हाँफता ही रहा और फिर मर गया।

दूसरे कौए अब यह जान गये थे कि पेट भर कर बलोनी खाने के बाद इतनी तेज़ी से उड़ना कोई अक्लमन्दी की बात नहीं थी।

यह कहानी हमें यह सिखाती है कभी इतनी ज़्यादा डींगें नहीं हाँकनी चाहिये जिसमें जान जाने का खतरा हो।

4 घोड़ों में अन्तर समझना[5]

यह बहुत पुरानी बात नहीं है कि एक जगह दो बेवकूफ रहते थे। एक दिन वे दोनों एक साथ घोड़े पर सवार हो कर घूमने निकले। पर एक उलझन थी वे दोनों अपने अपने घोड़ों में अन्तर नहीं कर पा रहे थे कि कौन सा घोड़ा किसका है। ।

सो वे एक लोहार के पास पहुँचे क्योंकि उसको घोड़ों के बारे में अच्छी जानकारी थी।

लोहार बोला — "ज़रा घोड़ों की तरफ तो देखो। इन घोड़ों में कुछ तो है जो दोनों घोड़ों को अलग अलग करता है। ज़रा ध्यान से देखो तो तुम लोगों को पता चलेगा कि तुम इन घोड़ों में अन्तर कर सकते हो।"

पहला बेवकूफ खुशी से बोला — "मैं समझ गया। एक घोड़े की पूँछ दूसरे घोड़े की पूँछ से ज़्यादा लम्बी है। अबसे यह छोटी पूँछ वाला घोड़ा मेरा होगा।"

दोनों बहुत खुश थे क्योंकि वे अब अपने घोड़ों में अन्तर कर सकते थे कि एक दिन...

एक दिन उसके दोस्त के घोड़े की पूँछ दरवाजे में फँस गयी तो उसको अपने घोड़े की पूँछ को थोड़ा सा काटना पड़ गया इससे

[5] Horse Sense – a story from an unknown place. Taken from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=219
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

उसके घोड़े की पूँछ पहले बेवकूफ के घोड़े की पूँछ के बराबर हो गयी। अब वे फिर से अपने घोड़ों में अन्तर नहीं कर सके।

वे फिर से उसी लोहार के पास गये क्योंकि वह लोहार घोड़ों के बारे में बहुत कुछ जानता था।

लोहार फिर बोला — "ज़रा घोड़ों की तरफ तो देखो। इन घोड़ों में कुछ तो है जो दोनों घोड़ों को अलग करता है। ज़रा ध्यान से देखो तो तुम लोगों को पता चलेगा कि तुम इन घोड़ों को अलग कर सकते हो।"

पहला बेवकूफ बोला — "आहा मैं जान गया। एक घोड़े के कान में एक छोटा सा कॉटा है। आज से वह मेरा घोड़ा होगा।"

दोनों बहुत खुश थे क्योंकि वे अब अपने घोड़ों में अन्तर कर सकते थे कि एक दिन फिर...

एक दिन दूसरे बेवकूफ का घोड़ा एक बाड़ के पास घास चर रहा था कि उसके कान में वहॉ की बाड़ का एक कॉटा घुस गया।

अब क्या था दोनों घोड़ों के दोनों कान एक से हो गये। अब वे फिर से एक दूसरे के घोड़ों को नहीं पहचान सकते थे सो वे एक बार फिर उसी लोहार के पास गये क्योंकि वह लोहार घोड़ों के बारे में बहुत कुछ जानता था।

लोहार बोला — "ज़रा घोड़ों की तरफ तो देखो। इन घोड़ों में कुछ तो है जो दोनों घोड़ों को अलग करता है। ज़रा ध्यान से देखो

तो तुम लोगों को पता चलेगा कि तुम इन घोड़ों को अलग कर सकते हो।"

अबकी बार दोनों बेवकूफ एक साथ बोले — "आहा हम जान गये। अबकी बार हम दोनों घोड़ों को नापते हैं कि कौन सा घोड़ा ज़्यादा लम्बा है।"

दोनों घोड़े नापे गये तो पाया गया कि सफेद घोड़ा काले घोड़े से दो इंच ज़्यादा लम्बा था। उस दिन के बाद से उन दोनों को अपने अपने घोड़ों को पहचानने में कोई परेशानी नहीं हुई।

यह देख कर लोहार ने अपना सिर पीट लिया। अपने मन में उन दोनों बेवकूफों पर बहुत हॅसा पर उसने उन दोनों बेवकूफों को यह नहीं बताया कि दोनों के पास दो रंग के घोड़े थे – एक सफेद घोड़ा और एक काला घोड़ा।

इसके अलावा सफेद घोड़ा घोड़ा था और काला घोड़ा घोड़ी थी।

5 नौ भाई[6]

एक बार की बात है कि एक गॉव में नौ भाई अपनी मॉ के साथ रहते थे। वे सब के सब बहुत ही बेवकूफ थे।

एक बार किसी दूसरे देश ने उनके देश पर हमला कर दिया और दोनों देशों में लड़ाई छिड़ गई। तो इन नौ भाइयों ने मिल कर फैसला किया कि वे सब सेना में भरती हो कर अपने देश की रक्षा के लिये लड़ेंगे।

तो उनकी मॉ ने उनको समझाया — "मेरे बच्चों, तुम लोग वहॉ जा तो रहे हो मगर सावधानी से रहना। अगर तुम लोग एक साथ रहोगे तो सुरक्षित रहोगे पर अगर तुम लोग अलग अलग हो गये तो तुम लोगों को कभी भी कोई भी नुकसान पहुँच सकता है।"

उन्होंने मॉ की यह बात गॉठ बॉध ली और सबने एक साथ रहने का वायदा किया। फिर सबने अपने अपने कपड़े लिये, रास्ते के लिये कुछ खाना साथ में लिया और चल दिये सेना में भरती होने के लिये।

चलते चलते कुछ देर के बाद ही सबसे बड़ा भाई रुक गया और बोला — "ज़रा रुको, हम देख तो लें कि हम सब यहॉ मौजूद हैं कि नहीं क्योंकि चलते समय हमारी मॉ ने कहा था कि सब साथ ही रहना।"

[6] Nine Brothers – a folktale of Jablawi Tribe of Ethiopia, East Africa, Africa

सो उसने सबको गिनना शुरू किया – एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह, सात और यह आठ। और एक कहॉ रह गया? हम तो नौ भाई साथ चले थे।"

उसने फिर गिना, एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह, सात और यह आठ। वह बार बार सबको गिनता था पर उसकी गिनती आठ से आगे बढ़ ही नहीं पाती थी।

वह बहुत परेशान हुआ और बोला — "यह तो बड़ी गड़बड़ हो गयी। हम लोग तो नौ भाई घर से चले थे और अब हम लोगों में से केवल आठ ही हैं। हम लोगों में से एक गायब है। कहॉ जा सकता है वह? मैं बार बार गिनता हूँ पर मैं केवल आठ तक ही गिन पाता हूँ।"

दूसरे भाइयों ने भी कोशिश की परन्तु वे भी आठ तक ही गिन पाये। असल में हर भाई अपने सब भाइयों को तो गिनता था पर अपने आपको गिनना भूल जाता था।

सभी भाई बहुत दुखी और परेशान थे। एक बोला — "कहीं हममें से एक किसी पहाड़ी से नीचे तो नहीं गिर गया?"

दूसरा बोला — "हो सकता है रास्ते में उसे कोई शेर खा गया हो।"

तीसरा बोला — "या फिर उसे सॉप ने काट लिया हो।"

वे थक कर सड़क के किनारे लगे एक पेड़ के नीचे बैठ गये। वे सोच ही नहीं पा रहे थे कि वे करें तो क्या करें। बिना अपने नवें

भाई को ढूँढे वे आगे नहीं बढ़ सकते थे क्योंकि माँ के कहे अनुसार अब उन पर कोई भी आफत आ सकती थी।

कुछ समय बाद वहाँ से एक अक्लमन्द आदमी गुजरा। उसने देखा कि नौ नौजवान लड़के एक पेड़ के नीचे मुँह लटकाये बैठे हैं। उसको यह कुछ अटपटा सा लगा सो वह रुक गया और उनसे पूछा "बच्चों, तुम लोग इस तरह से मुँह लटकाये क्यों बैठे हो? क्या तुम्हारा कुछ खो गया है?"

सबसे बड़ा भाई बोला — "हाँ, हमारा एक भाई खो गया है और वह हमको मिल नहीं रहा है। हम लोग उसी की वजह से परेशान हैं। हम लोग जब घर से चले थे तो हम नौ भाई थे अब हम केवल आठ हैं। एक पता नहीं कहाँ खो गया है।"

उस आदमी ने उन सबको एक नजर देखा और मुस्कुरा कर बोला "अगर मैं तुम्हारे इस खोये हुए भाई को ढूँढ दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"

वे बोले — "हम अपना सारा खाना तुमको दे देंगे। तुम हमारा भाई ढूँढ दो।"

उस आदमी ने उन सबको एक लाइन में खड़ा कर दिया और सबको एक एक कर के गिना तो वे पूरे नौ थे। सभी भाई यह देख कर बहुत खुश हुए। खुशी खुशी उन्होंने अपना सारा खाना उस आदमी को दे दिया।

वह आदमी भी उन भाइयों की बेवकूफी पर मन ही मन हॅसता हुआ उनका खाना ले कर अपने रास्ते चला गया और उधर वे भाई भी खुशी खुशी सेना में भरती होने चले गये।

6 सात खुश गॉव वाले[7]

यह लोक कथा भी इससे पहले दी गयी इथियोपिया देश की लोक कथाओं से ली गयी लोक कथा जैसी ही है पर यह फिलीपीन देश की लोक कथा है।

एक बार फिलीपीन के एक गॉव में सात खुशदिल आदमी रहते थे। एक दिन उन्होंने सोचा कि काम से एक दिन की छुट्टी ले कर मछली पकड़ने के लिये जाया जाये।

सो सुबह सुबह वे सब गॉव के बाहर इकट्ठे हो गये। उनके साथ साथ उनमें से एक आदमी की पत्नी भी थी जो उनको वहॉ तक छोड़ने आयी थी।

उन्होंने उससे कहा — "गॉव के लोगों से कहना कि वे जल्दी ही आग जला कर याम[8] भून लें और रोटी बना लें।

हम लोग सारे गॉव वालों के लिये काफी मछलियॉ ले कर आयेंगे। फिर हम लोग सब मिल कर खुशियॉ मनायेंगे। जब तक आदमी ज़िन्दा है तब तक हम लोग खुशियॉ मना लें तो अच्छा है।"

---

[7] The Seven Happy Villagers – a folktale from Philippines, Asia. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=98
Retold and written by Mike Lockett.
[This story is very similar to "Nine Brother" told in Ethiopia given before this.]

[8] Yam is a root vegetable commonly grown and found in tropicas. See its picture above.

वह पत्नी होशियार थी। उसने उन लोगों के गॉव छोड़ने से पहले उन सबको गिन लिया — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह और सात। हॉ ठीक है तुम सब सात ही हो और तुम सब यहॉ हो।

अब जाओ, अपना दिन आनन्द से बिताओ और जब तुम लोग आ जाओगे तो सारे गॉव वाले खुशियॉ मनाने के लिये इकट्ठे होंगे।"

सातों आदमी गॉव से जंगल के रास्ते होते हुए वहॉ चल दिये जहॉ उनको मछली पकड़ने के लिये जाना था। वह जगह उनकी एक बहुत ही प्रिय नदी थी।

वहॉ पहुँच कर उन्होंने मछलियॉ पकड़ीं और खूब खेले जैसे कि वे फिर से बच्चे हो गये हों। वे सारे दिन मछलियॉ पकड़ते रहे।

शाम होने से पहले सबसे बड़ा आदमी बोला — "अब शाम होने वाली है अब हमको घर चलना चाहिये। मुझे भूख भी लग आयी है और मुझे यकीन है कि वहॉ गॉव वालों ने हमारे लिये आग भी जला कर रखी होगी।

जब हम उनके खाने के लिये इतनी सारी मछलियॉ ले कर गॉव पहुँचेंगे तो गॉव वाले भी कितने खुश होंगे।"

वह सबसे बड़ा आदमी जबसे वह छोटा था तभी से वह उन सब का नेता भी था। सो सबने उसकी बात मान ली और वे सब चलने के लिये तैयार हो गये।

जब वे चलने लगे तो वह नेता बोला — "चलने से पहले हम एक बार अपने आपको गिन तो लें कि हम सब यहाँ पर मौजूद हैं या नहीं।"

सो उसने अपने सब दोस्तों को एक लाइन में खड़ा किया और उनको गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह।

यहाँ तो हम केवल छह ही हैं। हममें से एक तो खो गया। ओह नहीं। जब हमने गाँव छोड़ा था तब तो हम सात थे और अब हम केवल छह ही रह गये हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक नदी में गिर पड़ा है और डूब गया है।"

असल में वह अपने आपको गिनना भूल गया था।

उससे दूसरा बड़ा बोला — "यह सही नहीं हो सकता। तुमसे जरूर कहीं गलती हुई है। मुझे तो याद नहीं पड़ता कि हममें से कोई नदी में गिरा है। अबकी बार मैं हर एक को गिनता हूँ।"

उसने भी सबको एक लाइन में खड़ा किया और गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह। यहाँ तो वाकई छह लोग हैं। तुम ठीक कहते थे। हममें से एक खो गया है।

जब हम लोगों ने गाँव छोड़ा था तब हम लोग सात थे पर अभी तो हम छह ही हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक यकीनन नदी में गिर पड़ा है और डूब गया है।"

वह भी अपने आपको गिनना भूल गया था।

सो उस खोये हुए आदमी को ढूँढने के लिये सारे लोग नदी में कूद पड़े। जब उनको नदी में भी कोई नहीं मिला तो वे नदी में से निकल आये और एक बार फिर किनारे पर आ कर खड़े हो गये।

तीसरा बड़ा आदमी बोला — "इस बार मैं गिनता हूँ। एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह। यह तो सचमुच छह ही आदमी हैं। हममें से एक अभी भी खोया हुआ है।

हम सात थे और अब हम छह हैं। हमारा तो आज का सारा मजा ही किरकिरा हो जायेगा। हममें से एक की पत्नी बहुत दुखी होगी। इसलिये हमको पहले यह पता लगाना ही पड़ेगा कि हममें से कौन डूबा है ताकि हमको यह पता चल सके कि हमें उसकी पत्नी से क्या कहना है।"

जब सारे लोग इस तरह दुखी हो कर खड़े हुए थे तो एक बहुत ही बूढ़ा आदमी वहॉ से जा रहा था।

उसने उन सबको वहॉ उदास खड़े देखा तो बोला — "आज कितना अच्छा दिन है और तुम सब लोग उदास खड़े हो। क्या बात है? आज का दिन तो मछली पकड़ने और ज़िन्दा होने के लिये भगवान को धन्यवाद देने के लिये बहुत अच्छा दिन है।"

एक आदमी बोला — "यह तो आप ठीक कहते हैं पर यही तो परेशानी है। हम लोग जब मछली पकड़ने के लिये गॉव से चले थे तो हम सात थे।

हम लोगों ने सोचा था कि घर वापस जा कर हम लोग खुशियॉ मनायेंगे। पर अब हम लोग केवल छह ही हैं। ऐसा लगता है कि हममें से एक नदी में डूब गया है। अब हम लोग खुशियॉ कैसे मना सकते हैं जबकि हममें से एक ज़िन्दा नहीं है।"

वह बूढ़ा आदमी बोला — "अच्छा मैं गिन कर देखता हूँ।"

उसने भी सबको एक लाइन में खड़ा किया और गिना — "एक, दो, तीन, चार, पॉच, छह और सात। तुम सब तो यहीं हो। जाओ, घर जाओ और घर जा कर खुशियॉ मनाओ।"

यह सुन कर सबसे बड़ा आदमी बोला — "तुमको भी हमारे साथ हमारे घर चल कर हमारी खुशियों में शामिल होना चाहिये। तुम ने हममें से एक की ज़िन्दगी बचायी है।"

सो वह बूढ़ा भी उनके साथ उनके गॉव चला गया। इस तरह आखीर में आठ खुश आदमी गॉव लौटे और फिर उन सबने खूब आनन्द मनाया गया।

7 नौ बेवकूफ भाई[9]

एक बार की बात है कि एक पहाड़ी पर नौ भाई रहते थे। कुछ दिनों बाद वे मैदान में जा कर बस गये। एक दिन वे उसी पहाड़ी की तरफ गये जहॉ वे पहले रहते थे और वहॉ से उन्होंने कुछ लोगों के जानवर चुरा लिये और उनको ले कर घर वापस लौटने लगे।

जब उन जानवरों के मालिकों को पता चला कि कुछ लोग उनके जानवर चुरा कर ले गये हैं तो उन्होंने घोड़ों पर सवार हो कर उनका पीछा किया और बीच रास्ते में ही उनको पकड़ लिया।

हालॉकि उन भाइयों ने उन जानवरों के मालिकों को अपना पीछा करते हुए देख लिया था फिर भी उनमें से न तो कोई बोला और न ही किसी ने पीछे मुड़ कर देखा क्योंकि उनको अपनी बहादुरी पर पूरा विश्वास था कि वे उनके जानवर भगा कर ले जायेंगे।

उधर कुछ देर तक तो उन मालिकों ने अपने भालों के बल पर जानवरों को वापस लेने का विचार किया पर फिर उन्हें अपनी बेवकूफी का ध्यान हो आया और उन्होंने आपस में बिना जानवरों को लिये ही वापस लौट जाने का विचार किया।

परन्तु उनमें से एक आदमी ने उनकी बात नहीं मानी और बोला — "नहीं, मैं यह बात नहीं मानता। कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं

[9] Nine Foolish Brothers – a folktale of Hadiya Tribe of Ethiopia, East Africa, Africa

है। मुझे उनके तौर तरीके ठीक नहीं लग रहे हैं। उनसे चल कर लड़ते हैं और फिर देखते हैं कि क्या होता है।"

ऐसा सोच कर वे उनके पीछे पीछे चलने लगे। आगे आगे नौ भाई उन जानवरों को ले कर बड़ी लापरवाही से चले जा रहे थे।

इतने में जानवरों के उस बहादुर मालिक ने अपने घोड़े को एड़ लगायी और उन भाइयों के बीच में पहुँचना चाहा परन्तु वह उनसे कुछ ज़्यादा ही आगे निकल गया इसलिये उसको फिर पीछे आना पड़ा।

जब वह वापस आ रहा था तो बीच में उन नौ भाइयों में से सबसे पीछे चलने वाले भाई से टकरा गया और वह भाई गिर कर मर गया।

आगे चलने वाले भाई क्योंकि पीछे मुड़ कर देख ही नहीं रहे थे इसलिये उनको पता ही नहीं चला कि उनका एक भाई मर गया है।

यह देख कर जानवरों के मालिक बहुत ही खुश हुए। जानवरों के दूसरे मालिक ने कहा — "मैं भी ऐसा ही कर के देखता हूँ।" वह भी उसी तरीके से गया और सबसे पीछे आने वाले आठवें भाई को मार कर आ गया। इस तरह उन्होंने चार भाइयों को मार डाला।

अब पॉच भाई बच रहे तो उनको लगा कि वे तो सब जुड़वॉ भाई जैसे एक जैसे लगते हैं सो उन्होंने सोचा कि अबकी बार हम इन सबको एक साथ ही मार देते हैं।

बस फिर क्या था सब पहुॅच गए अपने अपने भाले ले कर और सबने मिल कर बचे हुए उन पॉचों भाइयों को मार डाला और अपने अपने जानवर ले कर घर वापस आ गये।

इस तरह अपनी बेवकूफी से वे नौओं भाई मारे गये। अगर वे ठीक से सावधानीपूर्वक जानवरों को घर ले कर आते तो शायद वे न मरते।

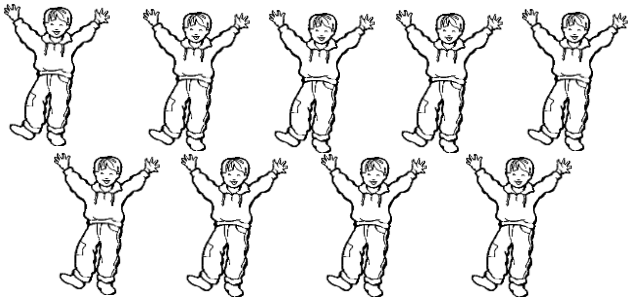

8 तीन बेवकूफ़[10]

एक बार की बात है कि एक किसान अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहता था। एक बहुत ही सुन्दर नौजवान उस लड़की से बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था।

एक रात वह नौजवान उस लड़की का हाथ माँगने के लिये उस किसान के घर आया तो उनके घर में एक बहुत ही बेवकूफी की घटना घट गयी।

घर वालों ने अपनी बेटी को पीने के लिये शराब लाने के लिये एक घड़ा ले कर नीचे वाले कमरे[11] में भेज दिया।

वहाँ जा कर उस लड़की की निगाह ऊपर पड़ी तो उसने देखा तो वहाँ के लकड़ी के एक लट्ठे में एक कुल्हाड़ी अटकी हुई थी।

अचानक उसके दिमाग में आया — "ओह नहीं। अगर मैं और वह शादी कर लें तो? और फिर हमारे एक बेटा हो तो? और फिर वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये तो?

और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये तो? और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये तो? उफ यह सब कितना दुखदायी होगा।"

---

[10] Three Sillies – a folktale from England, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=97
Retold and written by Mike Lockett

[11] Translated for the word "Cellar". It is a room in the basement of a house in which westerners normally keep their liquors. It may be used to keep other goods also.

यह सोच कर वह वहीं फर्श पर बैठ गयी और रोने लगी। जब वह फर्श पर बैठी तो शराब निकल कर नीचे फर्श पर बिखरने लगी।

जब काफी देर तक बेटी नीचे के कमरे से शराब ले कर नहीं आयी तो माँ को चिन्ता हुई। वह उसको देखने के लिये नीचे गयी तो यह देख कर उसको भी बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसकी बेटी वहाँ फर्श पर बैठी रो रही है और शराब सब तरफ बिखरी पड़ी है।

कुछ भी खराब न देख कर माँ की समझ में ही नहीं आया कि उसकी बेटी क्यों रो रही थी सो उसने उससे पूछा — "बेटी, तुम क्यों रो रही हो?"

बेटी बोली — "ज़रा ऊपर तो देखो माँ। तुम वह कुल्हाड़ी देख रही हो न? क्या हो अगर मेरी और उसकी शादी हो जाये, फिर क्या हो अगर हमारे एक बेटा हो।

और फिर जब वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये, और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये, और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये? तो यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब माँ ने यह सब सुना तो उसको भी लगा कि उसकी बेटी ठीक कह रही थी। यह सोच कर वह भी वहीं बैठ कर रोने लगी

— "ओह, यह तो तुम ठीक कह रही हो बेटी। यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब बेटी और माँ दोनों ही कमरे में से शराब ले कर वापस नहीं आयीं तो पिता उन दोनों को देखने के लिये नीचे गया कि आखिर मामला क्या है।

वहाँ जा कर यह देख कर उसको भी बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसकी पत्नी और उसकी बेटी दोनों ही वहाँ फर्श पर बैठी रो रही हैं और शराब सब तरफ बिखरी पड़ी है।

कुछ भी खराब न देख कर पिता की समझ में भी नहीं आया कि वे दोनों वहाँ बैठी क्यों रो रही थीं सो उसने उनसे पूछा — "तुम लोग यहाँ बैठी क्यों रो रही हो?"

उसकी पत्नी बोली — "तुम ऊपर देखो ज़रा। तुम वह कुल्हाड़ी देख रहे हो न? क्या हो अगर मेरी बेटी और उसकी शादी हो जाये, फिर क्या हो कि अगर उनके एक बेटा हो।

और फिर जब वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये, और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये, और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये तो? यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब पिता ने यह सब सुना तो उसको भी लगा कि उसकी पत्नी और बेटी ठीक ही कह रही थीं। यह सोच कर वह भी वहीं बैठ

कर उनके साथ रोने लगा — "ओह, यह सब सचमुच में कितना दुखदायी होगा।"

बैठक में से जब सब उठ कर चले गये और जब बहुत देर तक कोई भी नहीं लौटा तो वह नौजवान यह देखने के लिये नीचे के कमरे में पहुँचा कि आखिर सब गये कहाँ।

वह जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि पिता, माता और बेटी तीनों वहाँ बैठे रो रहे हैं और शराब चारों तरफ बिखरी पड़ी है।

इसके अलावा उसको और कुछ खास दिखायी नहीं दिया तो उसको भी बड़ा ताज्जुब हुआ और उसकी समझ में नहीं आया कि वे सब वहाँ बैठे बैठे क्यों रो रहे थे सो उसने भी उन सबसे पूछा — "आप सब यहाँ बैठे क्यों रो रहे हैं?"

पिता बोला — "ज़रा ऊपर देखो। तुम वह कुल्हाड़ी देख रहे हो न? क्या हो अगर तुम्हारी और मेरी बेटी की शादी हो जाये, फिर क्या हो अगर तुम्हारे एक बेटा हो।

और फिर जब वह एक सुन्दर नौजवान बन जाये, और फिर वह कभी इस कमरे में शराब पलटने के लिये आये, और उस समय यह कुल्हाड़ी उसके ऊपर गिर जाये तो? यह सब कितना दुखदायी होगा।"

जब उस नौजवान ने यह सब सुना तो वह मुस्कुराया। वह आगे बढ़ा, उसने उस लकड़ी के लट्ठे में से वह कुल्हाड़ी निकाली और

पिता के हाथ में थमा दी और बोला — "यह लीजिये यह कुल्हाड़ी। अब यह किसी के ऊपर नहीं गिरेगी।"

वह फिर बोला — "मैं बहुत सारी जगह घूमा हूँ पर मैंने ऐसी बेवकूफी की बात कहीं नहीं सुनी। मैं जा रहा हूँ और जब मुझे आप जैसे तीन बेवकूफ और मिल जायेंगे मैं तभी वापस आ कर आपकी बेटी से शादी करूँगा।" इतना कह कर वह घर के बाहर चला गया।

बाहर जा कर उसने अपना घोड़ा सजाया और अपने लम्बे सफर पर चल दिया।

जब वह कुछ सुस्ताने के लिये रुका तो उसने देखा कि एक स्त्री एक गाय को एक सीढ़ी पर चढ़ने के लिये पीछे से धक्का दे रही है और वह सीढ़ी उसके मकान के सहारे खड़ी है।

उस नौजवान ने पूछा — "माँ जी आप यह क्या कर रही हैं?"

वह बोली — "मेरी छत पर घास बहुत लम्बी हो गयी है। मैं इस गाय को ऊपर ले जा रही हूँ ताकि यह वह घास खा सके।"

वह बोला — "पर आप घास काट कर उसको नीचे क्यों नहीं फेंक देती ताकि यह वह घास खा सके।"

पर वह स्त्री तो सुनने वाली थी नहीं। उसने गाय को ऊपर धक्का दे दिया, उसके गले से एक रस्सी बाँध दी और उस रस्सी का एक सिरा चिमनी के रास्ते नीचे फेंक दिया।

फिर वह नीचे आ गयी और नीचे आ कर उसने उस रस्सी का वह सिरा अपनी कलाई से बॉध लिया ताकि अगर उसकी गाय छत के किनारे के काफी पास तक पहुॅच जाये तो उसको पता चल जाये।

जब उस स्त्री ने उस नौजवान की बात नहीं मानी तो वह वहॉ से चल दिया। जैसे ही वह नौजवान वहॉ से चला तो गाय ने छत के किनारे से नीचे पैर रखा और ज़ोर से रॅभा कर नीचे गिर पड़ी।

गाय के रॅभाने से वह स्त्री भी चिल्लायी और रस्सी के सहारे ऊपर खिंचती चली गयी क्योंकि गाय भारी थी और स्त्री हल्की थी। उस स्त्री के पड़ोसी उस स्त्री की सहायता करने दौड़े पर वे कुछ नहीं कर सके।

वह नौजवान जाते जाते सोचता रहा कि यह स्त्री भी अपने किस्म की एक ही बेवकूफ थी।

वहॉ से वह आगे चला और रात तक चलता रहा। रात होने पर वह एक सराय में सोने के लिये रुका। सुबह को वह अपने बराबर के कमरे में एक अजीब सी आवाज सुन कर उठ बैठा।

"पैर में आओ, पैर में आओ, बाम, आउ। पैर में आओ, पैर में आओ, बाम, आउ।"

उसने जा कर बराबर के कमरे का दरवाजा खटखटाया और सावधानी से दरवाजा खोला तो उसने देखा कि एक अजनबी कमरे

में दूसरी तरफ हवा में कूद कर जा रहा था जहॉ आलमारी के दरवाजे पर उसकी पैन्ट टॅगी हुई थी।

वह हवा में कूदा और उस आलमारी की तरफ भागा और चिल्लाया "बाम, पैर में आओ, पैर में आओ, आउ।"

उस नौजवान ने पूछा — "यह तुम क्या कर रहे हो?"

"मैं अपनी पैन्ट पहन रहा हूॅ पर वह मुझे बहुत तकलीफ दे रही है। सुबह सुबह उसको पहनने में मुझे बड़ी तकलीफ होती है।"

नौजवान हॅस कर बोला — "तुम अपनी पैन्ट को उस दरवाजे से उतार कर पलंग पर क्यों नहीं बैठ जाते और उसके एक एक पॉयचे को एक एक बार में एक एक टॉग में डाल कर क्यों नहीं पहनते?"

"मैंने तो यह कभी सोचा ही नहीं था।"

नौजवान ने सोचा तो यह था दूसरा बेवकूफ आदमी और वह वहॉ से भी चल दिया। चलते चलते वह एक गॉव में पहुॅचा। शाम हो गयी थी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि गॉव वाले इधर उधर भाग रहे हैं। उनके हाथों में सादी झाड़ू और पत्ते निकालने वाली नुकीली झाड़ू थीं।

नौजवान ने पूछा — "यहॉ क्या हो गया है? आप सब इधर उधर क्यों भाग रहे हैं?"

एक आदमी बोला — "चॉद इस तालाब में गिर पड़ा है सो हम लोग उसको निकालने जा रहे हैं।"

नौजवान ज़ोर से हँसा और बोला — "देखो ऊपर देखो। चॉद तो तालाब में नहीं है चॉद तो अभी भी आसमान में ही है। तालाब में तो केवल असली चॉद की परछाईं है।"

पर उन्होंने सुना ही नहीं और चॉद को तालाब में से निकालने की नाकाम कोशिश करते रहे।

वह नौजवान हँसता हुआ वहॉ से चला गया — "अब तो तीन से भी ज़्यादा बेवकूफ लोग हो गये। मुझे लगता है कि अब मुझे अपने उन तीन बेवकूफों के पास वापस चले जाना चाहिये ताकि हम सब हमेशा हमेशा के लिये खुशी खुशी रह सकें।"

9 बर्तन जो चलता नहीं[12]

एक बार एक बहुत बड़ा बर्तन एक दूकान की एक खिड़की में रखा हुआ था। वह लोहे का बर्तन था और उसको खाना पकाने के लिये इस्तेमाल करना था।

एक आदमी उस रास्ते से गुजर रहा था तो उसने वह बर्तन उस खिड़की में रखा देखा। उसने सोचा — "मेरी पत्नी इस बर्तन को देख कर बहुत खुश होगी। मैं इसको उसके लिये खरीद लेता हूँ।"

यह सोच कर वह उस दूकान में गया और उस बड़े बर्तन को खरीद लिया। खरीद लेने के बाद उसने उसे उठाया और उसको दूकान के बाहर ले चला।

पर ओह, वह बर्तन तो बहुत भारी था। सो उसने उसको अपनी पीठ पर रख लिया और अपने घर की तरफ ले चला।

पर वह बर्तन तो बहुत ही भारी था उस बर्तन को अपनी पीठ पर रखे रखे उसकी पीठ भी दुखने लगी। उसकी बाँहें दुखने लगीं और उसकी टाँगें भी दुखने लगीं।

आखिर वह आराम करने के लिये रास्ते में रुक गया। उसने वह बड़ा बर्तन सड़क के किनारे रख दिया और एक पेड़ की छाया में बैठ कर सुस्ताने लगा।

---

[12] The Pot That Would Not Walk – a folktale from England, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=169
Retold and written by Mike Lockett.

पहले उसने अपनी एक बॉह मली, फिर दूसरी बॉह मली। फिर उसने अपनी पीठ मली। फिर उसने अपनी दोनों टॉगों की मालिश की।

अब उसने अपने उस बड़े बर्तन की तरफ देखा और बोला — "यह ठीक नहीं है। मैं तुमको उठाते उठाते थक गया हूँ मैं अब तुमको और उठा कर नहीं ले जा सकता।"

उसने फिर से उस बर्तन की तरफ देखा तो उसने देखा कि उस बर्तन की तो तीन टॉगें थीं।

वह उस बर्तन से बोला — "तुम्हारी तो तीन टॉगें हैं, मेरी तो केवल दो ही टॉगें हैं। सो बजाय इसके कि मैं तुमको उठा कर ले चलूँ तुमको मुझे उठा कर ले जाना चाहिये।" वह बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वह बर्तन तो हिल कर भी नहीं दिया।

अब क्योंकि वह बर्तन धूप में रखा हुआ था इसलिये वह अब तक काफी गर्म भी हो गया था।

आदमी बोला — "मुझे मालूम है तुम अभी इस समय चलने के लायक नहीं हो क्योंकि तुम बहुत गर्म हो। और मैं तुमको उठा कर सारा दिन चल नहीं सकता।

तो ऐसा करते हैं कि मैं अपने घर केवल अपनी दो टॉगों पर ही चल कर जाता हूँ। जब तुम ठंडे हो जाओ तो तुम अपनी तीन टॉगों पर चल कर घर आ जाना।"

फिर उसने उस बर्तन को अपने घर का रास्ता बताया और खुद वह अपने घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँच कर वह अपनी पत्नी से बोला — "मैंने तुम्हारे लिये एक भेंट खरीदी है। मैंने तुम्हारे लिये खाना पकाने के लिये एक बहुत बड़ा बर्तन खरीदा है।"

पत्नी बोली — "पर मुझे तो वह बर्तन कहीं दिखायी नहीं दे रहा। कहाँ है वह? क्या तुमने सचमुच ही मेरे लिये खाना पकाने के लिये एक बहुत बड़ा बर्तन खरीदा है या फिर ऐसे ही मुझे बहका रहे हो?"

आदमी बोला — "नहीं नहीं मैं तुमको बहका नहीं रहा मैंने वाकई तुम्हारे लिये एक बहुत बड़ा पकाने वाला बर्तन खरीदा है। पर वह बड़ा बर्तन बहुत भारी था। उसको उठाते उठाते मेरी बाँहें, टाँगें, पीठ सब दर्द करने लगे।

फिर मैंने देखा कि उसकी तो तीन टाँगें थीं और मेरे तो केवल दो ही टाँगें थीं सो मैंने उसको अपने घर का रास्ता बताया और उसको यहाँ आने के लिये कह कर उसे वहीं छोड़ आया। वह बस यहाँ किसी समय भी आता ही होगा।"

आदमी की पत्नी मुस्कुरायी। वह अपने पति को बहुत प्यार करती थी पर उसका पति अपने काम करने में हमेशा ही कुछ न कुछ बेवकूफियाँ किया करता था।

सो उसने अपने पति को भेंट लाने के लिये धन्यवाद दिया। फिर उसने गर्म गर्म डबल रोटी का एक टुकड़ा काटा और उस पर ताजा मक्खन लगाया और उसको देते हुए बोली — "तुम यहाँ इस कुर्सी पर बैठो, यह डबल रोटी खाओ और थोड़ा आराम करो।"

फिर उसने एक प्याले में ठंडा दूध पलटा और उसको अपने पति को दे कर वह उस बड़े बर्तन को लेने वहाँ चली गयी जहाँ वह उस बर्तन को छोड़ कर आया था।

जब तक वह आदमी खा पी कर चुका तब तक उसकी पत्नी उस बड़े बर्तन को ले कर घर आ गयी थी।

वह बोला — "मुझे खुशी है कि तुम इस बर्तन को लेने चली गयीं। मुझे तो चिन्ता हो गयी थी कि कहीं यह भाग न जाये और फिर हमको यह कहीं मिले ही नहीं।"

10 पीटर के दादा जी[13]

ब्रिटेन की हॅसी की एक और लोक कथा।

एक बार की बात है कि ब्रिटेन में एक आदमी रहता था जिसका नाम था पीटर। वह अपनी पत्नी और बूढ़े दादा जी के साथ एक छोटे से घर में रहता था।

उनके पास एक छोटा सा बागीचा था जिसमें वे फूल उगाया करते थे। पीटर उन फूलों को बाजार में बेचा करता था और उसी से अपने घर का खर्च चलाता था।

पर वह बागीचा बहुत छोटा था और पीटर को पेट भरने के लिये उसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती थी।

एक दिन पीटर अपने बागीचे में दोपहर तक काम करता रहा और दोपहर को जब वह घर में घुसा तो निढाल सा कुर्सी पर पड़ गया और बुड़बुड़ाने लगा —

"उॅह, सारा दिन काम, काम, काम। और मुझे उसके बदले में क्या मिलता है? केवल कुछ रुपये जो हफ्ते के खत्म होने तक भी नहीं चलते। मैं अब जा रहा हूॅ और अब मैं कभी बागीचे में काम नहीं करूॅगा।"

[13] The Grandfather of Peter – a folktale of England, Europe

उसकी पत्नी ने जब उसका यह बुड़बुड़ाना सुना तो कपड़े से ऑखें ढॉप कर रोने लगी और बोली — "पीटर, अगर तुम चले गये तो बगीचे की खुदायी कौन करेगा। उसकी खुदायी तो फिर मुझे ही करनी पड़ेगी न। और मैं तुम्हारे जितनी ताकतवर नहीं हूॅ। पीटर, मेहरबानी कर के तुम मत जाओ।"

लेकिन पीटर उठा और कमरा पार कर के दरवाजा खोल कर बाहर चला गया और बोला — "विदा, बस अब मैं जा रहा हूॅ।"

जब बूढ़े दादा जी ने देखा कि पीटर दरवाजे से बाहर जा रहा है तो उन्होंने अपना पाइप मुॅह से निकाला और कुछ कहने ही जा रहे थे कि "आक छीं"।

पीटर रुक गया। उसकी पत्नी को आश्चर्य हुआ। बूढ़े दादा जी ने फिर कुछ कहने के लिये फिर अपना मुॅह खोला कि फिर "आक छीं"। अब पीटर वापस अपने कमरे में आ गया।

पीटर की पत्नी ने अपने ऑसू पोंछ लिये दादा जी ने एक बार और आक छीं की कि उनके घर की दीवार घड़ी का घंटा बोला "टन्न"।

दादा जी ने कहा — "तीन बार की छींक तो बड़ी अच्छी होती है और वह भी जब जबकि घड़ी भी साथ में एक बार टन्न बजाये। अच्छा हो पीटर अगर तुम रुक जाओ। हो सकता है कि मेरी यह बात तुम्हारी किस्मत सॅवार दे।"

पीटर की पत्नी ने पीटर की बॉह पकड़ कर कहा — "पीटर, दादा जी ठीक कहते हैं। हो सकता है कि दादा जी के कहे अनुसार हमारा कुछ भला हो जाये।"

दादा जी ने फिर कहा — "पीटर, यही ठीक है। हालॉकि कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा पर फिर भी। अब तुम ऐसा करो कि दोबारा जा कर बागीचे की खुदायी करो, हो सकता है कि तुम्हें वहॉ कोई गड़ा खजाना हाथ लग जाये।"

पीटर ज़ोर से हॅसा पर सबके सामने झुक गया। उसने अपना इरादा बदल दिया था।

उसने अपना फावड़ा उठाया और बागीचे में खुदायी करने चल दिया। उसको वास्तव में तीन छींकों और घड़ी के एक घंटे में कोई विश्वास नहीं था पर जब दादा जी ऐसा कह रहे हैं तो शायद ऐसा हो जाये, यही सोच कर वह बागीचे में पहुॅच गया।

उसने दो मिनट भी फावड़ा नहीं चलाया था कि उसका फावड़ा टन्न से किसी चीज़ से टकराया। वह सख्त जरूर था पर पत्थर के समान नहीं।

पीटर खोदता रहा, खोदता रहा और कुछ देर बाद उसमें से कपड़े धोने का एक तसला[14] निकला। पीटर ने सोचा — "चलो

[14] Translated for the word "Basin". See its picture above.

यही ठीक है। पत्नी से कह कर इसे साफ कराऊँगा। हो सकता है यह किसी काम की चीज़ हो।"

सो वह वह तसला उठा कर घर ले गया और पत्नी से उसे साफ करने के लिये कहा। मगर वह इतना ज़्यादा गन्दा था कि बहुत देर तक ब्रश से रगड़ने के बाद भी साफ नहीं हुआ।

आखिरकार जब उसकी पत्नी उसे साफ करते करते बहुत थक गयी तो ब्रश को तसले में फेंकती हुई बोली — "मेरे तो हाथ दुख गये, मुझसे नहीं होता यह साफ।"

इतना कहते ही उसकी ऑखों ने कुछ अचम्भा देखा और वह चिल्लायी — "पीटर पीटर, देखो देखो, यहॉ आओ।"

"क्या हुआ? क्या बात है?"

पीटर बागीचे से भागा भागा आया और उसने भी वह सब देखा जो उसकी पत्नी ने देखा। उसने भी दॉतों तले उँगली दबा ली और चिल्लाया — "दादा जी, ज़रा यहॉ तो आइये। देखिये तो ज़रा।"

"आया भाई आया।" कहते हुए दादा जी भी आये और बोले — "मैरी, इतने सारे ब्रश तुम्हारे पास कहॉ से आये?"

मैरी ने उत्साहपूर्वक जवाब दिया — "दादा जी, पीटर ने यह तसला बाहर बगीचे में पाया। मैं इसे ब्रश से साफ कर रही थी कि वह ब्रश इस तसले में गिर गया और अचानक ही यह तसला ब्रश से भर गया।"

दादा जी ने खुशी से कहा — " देखा मैंने कहा था न। तीन छींके और घड़ी के घंटे की एक आवाज जरूर ही किस्मत चमकाती हैं। यह जादू का तसला है।"

मैरी तो खुशी से नाचने लगी और कहने लगी — "पीटर, अब तो तुम ब्रश बेचा करो फिर हम उस पैसे से हम एक बड़ा बगीचा खरीद लेंगे।"

पीटर ने सब ब्रशों को इकट्ठा किया और एक गठरी बना कर बाँध दी। लेकिन उसने उसमें से आधा तसला भी ब्रश न निकाले थे कि वह तसला फिर से ब्रशों से भर गया।

दादा जी ने कहा — "अब तुम्हारे गरीबी के दिन गये पीटर, ब्रश बेचो और खूब पैसा कमाओ। जाओ बेटे, गाँव गाँव जा कर ब्रश बेचो।"

और अब पीटर ब्रश बेचने लगा। जितने ब्रश वह तसले में से निकालता उतने ही ब्रश उसमें फिर आ जाते। इस तरह वह तसला हमेशा ब्रशों से भरा रहता। पीटर ने अब एक नया मकान खरीद लिया था, एक बड़ा बागीचा भी, अच्छे कपड़े, परन्तु फिर भी वह सन्तुष्ट नहीं था।

एक बार वह ब्रश बेच कर घर आया तो वह फिर कुर्सी पर निढाल सा पड़ गया और बोला — "क्या सारा दिन ब्रश बेचना। फिर मुझे इससे मिलता भी क्या है केवल कुछ रुपये जो सप्ताह के

अन्त तक खत्म हो जाते हैं। मैं जा रहा हूँ, अब मैं ब्रश नहीं बेचूँगा।"

यह सुन कर मैरी ने फिर रोना शुरू कर दिया और दादा जी ने अपने मुँह से पाइप निकाला — आक छीं।

मैरी फिर आश्चर्यचकित रह गयी और दादा जी ने अपनी आँखें एक बार फिर बन्द कीं — आक छीं। मैरी ने अपने आँसू पोंछे और उनके घर की दीवार घड़ी का घंटा बोला "टन्न"। और फिर एक और आक छीं।

दादा जी को यह छींक इतनी ज़ोर से आयी कि उनके कोट का बटन खुल गया और उनकी जेब से चाँदी का एक सिक्का निकल कर तसले में जा गिरा।

दादा जी बोले — "मैंने क्या कहा था कि तीन छींकें और घड़ी के घंटे की एक आवाज अच्छी होती है।"

इतना कह कर दादा जी ने तसले की ओर इशारा किया। सबने देखा कि तसले में से ब्रश गायब हो गये थे और तसला चाँदी के सिक्कों से भर गया था। मैरी ने तो फिर खुशी से नाचना शुरू कर दिया परन्तु पीटर सोच में पड़ गया।

वह सोच रहा था — "अगर मैं इस तसले में से ये सिक्के निकालता रहूँ तो मैं खूब अमीर हो जाऊँगा, लेकिन सिक्के निकालने का काम अगर मैंने किया तो मैं तो थक जाऊँगा और जीवन को

सुख से नहीं बिता सकूँगा। अगर कोई और मेरे सिक्के निकाले और मैं उसे खर्च करूँ तभी मजा है।"

उसने कुछ देर सोचने के बाद दादा जी की ओर देखा और कहा — "दादा जी।"

"हॉ बेटा।"

"आपने उस सिक्के को तसले में फेंका।"

"हॉ बेटा।"

"तो अब आप ही उस तसले में से सिक्के निकालिये और अगर आप रुके तो आपको खाना नहीं मिलेगा।"

मैरी और दादा जी दोनों के ही मुँह से निकला — "पीटर, यह तुम क्या कह रहे हो?"

फिर दादा जी समझाने के ढंग से बोले — "देखो पीटर, मैं बूढ़ा आदमी ठहरा, मैं सारा दिन इस तसले में से सिक्के नहीं निकाल सकता। मैं इतनी ठंड में बाहर खड़े हो कर यह काम नहीं कर सकता।"

"अब यह काम तो आपको करना ही पड़ेगा दादा जी। चलिये, सिक्के निकालना शुरू कीजिये।"

न तो दादा जी और न ही मैरी पीटर को समझा सके कि दादा जी की उमर अब यह काम करने की नहीं थी। पर क्या करते,

पीटर की समझ में तो कुछ और आ ही नहीं रहा था। बेचारे दादा जी खड़े खड़े उस तसले में से सिक्के निकालते रहे।

दिन पर दिन, हफ्ते पर हफ्ते बीतते गये और वह बेचारे एक कोने खड़े हुए तसले में से सिक्के निकालते रहे जो खाली होने से पहले ही भर जाता था।

दादा जी पीले पड़ गये थे। बहुत दुबले हो गये। उनकी बॉहें दर्द करने लगीं थीं। उनकी कमर झुकने लगी थी।

आखिरकार एक दिन जब बहुत ठंड थी तो हवा से दरवाजा खुल गया और वह हवा उनके गले को लगी तो फिर एक आक छीं।

पीटर डर गया, मैरी दुखी हो गयी — आक छीं। पीटर और डर गया, मैरी सिकुड़ गयी और दीवार घड़ी ने बजाया "टन्न।" आखिरी छींक इतनी अचानक और भयानक थी कि बेचारे दादा जी खुद ही तसले में गिर गये।

पल भर में छींकते हुए दादा जी से तसला भर गया। मैरी और पीटर दोनों के मुॅह से चीख निकली — "हमारे दादा जी इनमें से कौन से हैं?"

मैरी ने एक दादा जी को बाहर निकाला तो दूसरे दादा जी उस तसले में आ खड़े हुए।

अभी भी वहॉ बहुत सारे दादा जी छींक रहे हैं और मैरी और पीटर दोनों में से किसी की हिम्मत नहीं हो रही कि वह और दादा

जी उस तसले में से निकालें। क्योंकि जैसे ही वे एक दादा जी निकालेंगे दूसरे दादा जी उसमें आ खड़े होंगे।

11 याउन्डे शहर चला[15]

हॅसी की यह लोक कथा अफ्रीका के घाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा यह बताती है कि जब कोई दूसरी भाषा नहीं जानता तब क्या क्या होता है।

एक बार घाना के आकीम प्रान्त[16] में समुद्र के किनारे से बहुत पीछे की तरफ की पहाड़ियों में याउन्डे[17] नाम का एक आदमी रहता था। वह एक बहुत ही सीधा सादा आदमी था जो कभी अपने घर से दूर नहीं गया था।

उसने अपना सारा समय और दूसरे गॉव वालों की तरह से खेती और शिकार करने में ही गुजार दिया था। उसने अक्सर बड़े शहर अकरा[18] की कहानियॉ सुनी थीं जो समुद्र के किनारे बसा हुआ था पर वह वहॉ कभी गया नहीं था।

उसने वहॉ पर पायी जाने वाली दूसरी चीज़ों के बारे में भी सुना जरूर था पर वह तो अपने गॉव से अपने गॉव की नदी से ज़्यादा दूर कभी गया ही नहीं था इसलिये उन चीज़ों के बारे में उसको कुछ पता ही नहीं था।

---

[15] Younde Goes to Town – a folktale from Ghana, West Africa, Africa. Taken from the Book : The Cow-Tail Swich and Other West African Stories. By Harold Courlander George Herzo. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in E-book form free of charge.

[16] Akim Province of Ghana

[17] Younde – a name of a man from Ghana

[18] Accra is the capital of Ghana.

एक दिन याउन्डे को अकरा जाना पड़ा। उसने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने, अपना चाकू अपनी कमर की पेटी में लगाया, कुछ खाना एक कपड़े में लपेट कर अपने सिर पर रखा और अकरा की तरफ चल दिया।

वह कई दिनों तक चलता रहा। सड़क गर्म थी और धूल से भरी थी। कुछ समय के बाद वह अपने प्रान्त से बाहर पहुँच गया। वहाँ के लोग उसकी अपनी भाषा आकीम नहीं बोलते थे।

अब वह अकरा के पास आता जा रहा था। उसको रास्ते में बहुत सारे लोग और गधे मिले जो या तो अकरा जा रहे थे या फिर वहाँ से आ रहे थे। उसने पहले कभी किसी सड़क पर इतने सारे लोग नहीं देखे थे।

फिर उसको बहुत सारी गायें सड़क के किनारे घास चरती हुई दिखायी दीं। उसने इतनी सारी गायें तो कभी अपनी ज़िन्दगी भर में नहीं देखी थीं। वह वहीं खड़ा हो गया और उन गायों को आश्चर्य से देखने लगा।

उसने देखा कि उन गायों को वहाँ एक छोटा सा लड़का चरा रहा था। वह उस बच्चे के पास गया और उससे पूछा — "ये गायें किसकी हैं।"

पर वह बच्चा याउन्डे की भाषा नहीं समझ सका क्योंकि याउन्डे तो आकीम भाषा बोल रहा था जबकि अकरा में "गा" भाषा[19] बोली जाती थी। लड़का बोला — "मीनू।" यानी "मैं समझा नहीं।"

याउन्डे ने सोचा "अच्छा मीनू। तो वह तो कितना बड़ा आदमी होगा जिसके पास इतने सारे जानवर होंगे।"

वह वहाँ से फिर से शहर की तरफ चल दिया। वह वहाँ जो कुछ भी देख रहा था उससे वह बहुत प्रभावित था। वहाँ से वह एक बहुत बड़ी इमारत के पास आ गया और उसको देखने के लिये वहीं रुक गया।

वह इमारत पत्थर की बनी हुई थी और बहुत ऊँची थी। उसको देख कर याउन्डे ने आश्चर्य में अपना सिर हिलाया। इस तरह की कोई चीज़ उसके पहाड़ी गाँव में नहीं थी।

उसी समय याउन्डे ने एक स्त्री को बाजार जाते देखा तो उससे बोला — "यह कितना बड़ा घर है। इस इमारत का मालिक भी कितना बड़ा आदमी होगा।"

पर वह स्त्री नहीं जानती थी कि याउन्डे क्या कह रहा था क्योंकि वह तो आकीम भाषा बोल रहा था और वह स्त्री केवल "गा" भाषा ही समझती थी सो उसने भी उसको अपनी भाषा में वही जवाब दिया "मीनू।"

[19] Ga language

याउन्डे ने सोचा "अरे यह तो वही आदमी है, मीनू। इसका यह मतलब हुआ कि यह इमारत भी उसी आदमी की है। ओह तो यह मीनू तो कितना बड़ा आदमी होगा।"

जैसे जैसे वह शहर के बाजार की तरफ चलता गया वह और भी ज़्यादा आश्चर्यजनक चीज़ें देखता गया। अब वह बाजार में आ पहुँचा था। उसने जब बाजार देखा तो देखा कि यह बाजार तो उसके अपने गॉव से भी बहुत बड़ी जगह में फैला हुआ था।

वह जब उस बाजार के बीच से हो कर निकला तो उसने देखा कि वहॉ स्त्रियॉ ऐसा सामान बेच रही थीं जो उसके गॉव में नहीं मिलता था – जैसे लोहे के बर्तन और लोहे की चम्मचें।

याउन्डे ने एक छोटी सी लड़की से पूछा — "यह सब सामान आता कहॉ से है?"

वह लड़की उसकी तरफ देख कर मुस्कुरायी और बोली — "मीनू।" यानी "पता नहीं।"

अबकी बार याउन्डे चुप हो गया। हर एक चीज़ मीनू मीनू मीनू। मीनू हर जगह मौजूद था।

वहॉ भीड़ बहुत थी। लोग एक दूसरे को धक्का दे दे कर चल रहे थे क्योंकि वह दिन बड़ा बाजार दिन था और हर दूसरा और तीसरा आदमी वहॉ या तो बेचने वाला था या फिर खरीदने वाला था। याउन्डे ने एक जगह पर इतने सारे लोग पहले कभी नहीं देखे थे।

वे कहानियाँ जो उसने अकरा के बारे में सुन रखी थीं वे यहाँ के हाल से मेल नहीं खाती थीं। वे कहानियाँ तो उसके सामने कुछ भी नहीं थीं जो कुछ वह यहाँ देख रहा था।

वहीं एक बूढ़ा जा रहा था जिसके बगल में एक ढोल दबा हुआ था। उसने उसको रोका और उससे पूछा — "इतने सारे आदमी और एक ही समय में? आज ऐसा यहाँ क्या है जो इतने सारे लोग अकरा आये हुए हैं।"

बूढ़ा बोला — "मीनू।"

याउन्डे मीनू का नाम फिर से सुन कर बहुत खुश हो गया।

उसने सोचा "इस आदमी का कितना असर है। केवल मीनू को देखने के लिये ही आज कितनी बड़ी संख्या में लोग अकरा में इकट्ठा हुए हैं। हमारे गाँव के लोग तो इस आदमी के बारे में कुछ जानते ही नहीं।"

याउन्डे उस बाजार वाले शहर से बाहर निकल कर समुद्र के किनारे आ गया। वहाँ उसने देखा कि पानी में बहुत सारी छोटी छोटी मछली पकड़ने वाली नावें पड़ी हुई थीं जिनमें पाल लगे हुए थे। ऐसी नावें याउन्डे ने पहले कभी नहीं देखी थीं।

उसने समुद्र के किनारे पर खड़े एक मछियारे से पूछा — "वाह, ये नावें किसकी हैं?"

मछियारा बोला — "मीनू।"

याउन्डे वहॉ से आगे चल दिया और फिर एक ऐसी जगह आया जहॉ एक बहुत बड़े सामान ले जाने वाले जहाज़ पर पाम का तेल और पाम के फल[20] लादे जा रहे थे।

उस जहाज़ में से इतना काला धुॅआ निकल रहा था जैसे कोई काला बादल हो और सैंकड़ों की संख्या में लोग जहाज़ के डैक पर इधर से उधर काम करते घूम रहे थे।

याउन्डे उस जहाज़ को देख कर भी बहुत खुश हुआ। उसके मुॅह से निकला — "आहा। कितनी बड़ी नाव है।"

उसने पास में ही एक केले का गुच्छा ले जाते हुए आदमी से कहा — "यह तो दुनियॉ की सबसे बड़ी नाव होगी।"

उस आदमी ने तुरन्त ही जवाब दिया "मीनू।"

याउन्डे बोला — "हॉ हॉ इतना तो मैं भी जानता हूॅ कि यह नाव मीनू की है पर यह इतना सारा फल जा कहॉ रहा है?"

उस आदमी ने फिर कहा "मीनू।" और वह उस जहाज़ के डैक पर चढ़ गया।

[20] Palm fruit from which the Palm nut is extracted. See the picture of palm fruit above

अब याउन्डे का धीरज छूट गया। वह बस यही सोचता रहा कि यह मीनू कितना बड़ा आदमी होगा। लगता है कि उसके पास तो सब कुछ है। वह सब कुछ खाता है। कोई भी सवाल पूछने से पहले ही जवाब मिलता "मीनू।" मीनू यहाँ, मीनू वहाँ, मीनू हर जगह मौजूद है।

याउन्डे बोला — "मुझे तो विश्वास ही नहीं होता अगर मैंने खुद यह सब अपनी आँखों से नहीं देखा होता। असल में तो अकरा को अकरा नहीं बल्कि मीनू शहर कहना चाहिये। कितना अच्छा हो अगर मीनू की सारी दौलत मुझे मिल जाये तो।"

फिर याउन्डे ने अपना काम किया जिसके लिये वह आया था। उसने अपना खाना खाया और बचा हुआ खाना उसी कपड़े में बाँध कर अपने सिर पर रखा और घर के लिये चल दिया।

जब वह शहर के किनारे आया तो उसने एक बहुत बड़ा जुलूस देखा और ढोलों के बजने की आवाज सुनी।

वह उस जुलूस के पास तक आया तो उसने देखा कि वह तो किसी का जनाज़ा निकल रहा था। लोग एक ताबूत ले जा रहे थे और उसके पीछे पीछे स्त्रियाँ दुख से रोती हुई चली जा रही थीं।

याउन्डे ने इतना सुन्दर जनाजा पहले कभी नहीं देखा था। वह उस भीड़ में घुस गया और जा कर उस जनाजे को देखने लगा। उसने एक दुखी आदमी से पूछा — "यह कौन आदमी मर गया है?"

उस आदमी ने दुखी हो कर जवाब दिया — "मीनू।"

"क्या? मीनू मर गया?" वह मीनू जिसके बहुत सारे जानवर थे वह मीनू जिसका वह बहुत ऊँचा सा घर था। वह मीनू जिसकी बहुत सारी पाल वाली नावें थीं। वह मीनू जिसका भाप वाला जहाज था। वह मीनू जिसकी वजह से बाजार में इतनी भीड़ थी।

उस बेचारे को यह सब दौलत छोड़ कर जाना पड़ा। ओह वह बेचारा तो एक मामूली आदमी की तरह ही मर गया।"

और इस तरह से दुखी होते हुए वह बेचारा अपने घर की तरफ चल दिया पर उसके दिमाग से मीनू नहीं निकला। वह बार बार यही कहता रहा "बेचारा मीनू। बेचारा मीनू।"

12 डोनाल्ड और उसके पड़ोसी[21]

एक बार की बात है कि आयरलैंड के एक गॉव में हडिन, डडिन और डोनाल्ड[22] नाम के तीन आदमी पास पास रहते थे।

तीनों के पास अपने अपने बैल थे, अपने अपने खेत थे और वे अपनी अपनी खेती करते थे। डोनाल्ड अपने खेत में बहुत मेहनत करता था और उसकी फसल भी बहुत अच्छी होती थी इसलिये धीरे धीरे वह बहुत अमीर हो गया।

हडिन और डडिन से उसकी अमीरी देखी नहीं गयी और एक दिन उन्होंने डोनाल्ड का एक बैल मार दिया। डोनाल्ड बहुत दुखी हुआ पर कुछ कर नहीं सकता था। इसलिये उसने अपने मरे हुए बैल की खाल निकाली और उसे कन्धे पर रख कर बाजार में बेचने चल दिया।

रास्ते में एक मैना[23] उस बैल की खाल पर आ कर बैठ गयी और उस खाल में लगा मॉस खाने लगी। साथ में वह डोनाल्ड से बातें भी करती जाती थी।

क्योंकि वह आदमी की आवाज में उससे बात कर रही थी तो उसको लगा कि उसको उसकी कुछ बातें समझ में आ रही हैं सो

[21] Donald and His Neigbors – a folktale from Ireland, Europe
[22] Hudden, Dudden and Donald – names of the three neighbors
[23] Translated for the word “Magpie” bird

उसने तुरन्त हाथ घुमा कर उसको पकड़ कर अपनी जेब में रख लिया।

बाजार में जा कर उसने खाल बेची और फिर शराब पीने के लिये एक होटल में घुस गया। जब वहाँ की मालकिन उसे अन्दर कमरे में ले जा रही थी तो उसने उस चिड़िया को ज़रा सा दबा दिया। दबाने से चिड़िया के मुँह से कुछ टूटे फूटे शब्द निकल पड़े।

होटल की मालकिन उन शब्दों को सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और बोली — "यह मैं क्या सुन रही हूँ? लगता है कि कोई बात कर रहा है पर फिर भी मैं कुछ समझ नहीं पा रही हूँ।"

डोनाल्ड बोला — "आप ठीक कह रही हैं। मेरे पास एक चिड़िया है जो मुझे सब कुछ बताती है। मैं इसे हमेशा अपने पास रखता हूँ। इस समय यह यह कह रही है कि आप जो मुझे शराब दे रही हैं आपके पास उससे भी अच्छी शराब है।"

मालकिन बोली — "अजीब बात है, यह तो बिल्कुल ठीक बोल रही है। क्या तुम मुझे यह चिड़िया बेचोगे?"

डोनाल्ड बोला — "हाँ मैं इसे बेच सकता हूँ अगर मुझे इसके अच्छे दाम मिल जायें तो।"

मालकिन बोली — "मैं तुम्हारा टोप चाँदी के सिक्कों से भर दूँगी।"

डोनाल्ड ने खुशी खुशी वह चिड़िया उस होटल की मालकिन को बेच दी और घर चला गया।

कुछ देर बाद ही वह हडिन और डडिन से मिला और उनसे बोला — "तुम लोग सोच रहे होगे कि शायद तुमने मेरे साथ बुरा किया है पर नहीं, तुमने तो यह सब मेरे अच्छे के लिये ही किया था। देखो न उस बैल की खाल से मुझे कितने सारे पैसे मिल गये।" कह कर उसने उनको अपना चॉदी के सिक्कों से भरा टोप दिखा दिया।

वह फिर बोला — "केवल एक खाल के इतने सारे पैसे तुम लोगों ने तो कभी देखे भी नहीं होंगे।"

उस रात हडिन और डडिन ने भी अपने अपने बैलों को मार डाला और अगले दिन उनकी खालें बेचने के लिये बाजार चल दिये। पर काफी भाव ताव करने के बाद भी उन लोगों को उन खालों का बहुत ही कम पैसा मिला।

आखिरकार उतने ही पैसे से सन्तुष्ट हो कर बड़े गुस्से में वे घर पहॅुचे। वे डोनाल्ड से इस बात का बदला लेना चाहते थे। डोनाल्ड को भी इस बात का पता था कि वे लोग जरूर ही कुछ न कुछ गड़बड़ घोटाला करेंगे।

यह भी हो सकता था कि वे उसका पैसा चुरा लें या फिर उसे सोते में मार दें। मारने के डर से उसने अपनी बूढ़ी मॉ को अपने बिस्तर में सुला दिया।

उसका ख्याल ठीक था। हडिन और डडिन उसका पैसा चुराने और उसको मारने के लिये उस रात उसके घर आये। उन्होंने यह

सोचते हुए उसकी माँ का गला घोट दिया कि वे डोनाल्ड को मार रहे थे। पर डोनाल्ड ने जब कुछ शोर मचाया तो वे उसका पैसा लिये बिना ही भाग गये।

अगले दिन डोनाल्ड अपनी मरी हुई माँ को अपने कन्धे पर डाल कर शहर ले चला। रास्ते में एक कुँए पर रुक कर उसने अपनी माँ के शरीर को एक डंडे के सहारे इस तरह खड़ा कर दिया जिससे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कुँए पर पानी पीने के लिये खड़ी हो।

फिर वह पास के एक शराबखाने में घुस गया और वहाँ पास में खड़ी एक स्त्री से बोला — "क्या आप मेरे ऊपर एक मेहरबानी करेंगी? मेरी माँ बाहर कुँए के पास खड़ी है उसको अन्दर आने को कहियेगा।

वह थोड़ा कम सुनती हैं सो अगर वह एक बार में ठीक से न सुनें तो उन्हें थोड़ा हिला लीजियेगा और कहियेगा कि वह यहाँ आ जायें।"

वह स्त्री बाहर आयी और उसकी माँ से कई बार अन्दर आने को कहा परन्तु उसको लगा कि उसकी बात का तो उसके ऊपर कोई असर ही नहीं पड़ रहा है तो उसने उसको थोड़ा सा हिलाया।

पर यह क्या? उसके छूते ही वह सिर के बल कुँए में गिर गयी और डूब गयी। वह स्त्री इस घटना से बहुत ही डर गयी। उसने तुरन्त ही जा कर डोनाल्ड को यह सब कुछ बताया।

डोनाल्ड सिर पर हाथ मार कर बोला — "अरे यह आपने क्या किया?"

और तुरन्त ही बाहर जा कर उसने कुँए से अपनी माँ का शरीर बाहर निकाला। वह उसकी मौत पर दुखी हो कर रोने लगा।

इस तरह डोनाल्ड तो केवल दुखी होने का बहाना कर रहा था परन्तु उस स्त्री की हालत बहुत ही खराब थी। वह अपने आपको डोनाल्ड की माँ का हत्यारा समझ रही थी।

उस शहर के लोगों ने डोनाल्ड को इस दुर्घटना के बहुत सारे पैसे दिये और इस तरह डोनाल्ड पहले से भी कहीं ज़्यादा पैसे ले कर घर लौटा।

घर आ कर उसने पहले की तरह से हडिन और डडिन को अपने पैसों के बारे में बताया और बोला — "तुम लोग कल रात मुझे मारने के लिये आये थे न, पर यह मेरे लिये अच्छा हुआ कि वह सब मेरी माँ पर गुजरा। अब मुझे बारूद बनाने के लिये काफी पैसे मिल गये।"

उसी रात हडिन और डडिन दोनों ने अपनी माँ को मार दिया और अगली सुबह उनके मरे हुए शरीरों को अपने अपने कन्धों पर डाल कर शहर ले चले।

शहर पहुँच कर वे आवाज लगाने लगे — "इन औरतों को बारूद के बदले में कौन खरीदेगा?" सभी उनकी बात पर हँस पड़े और बच्चों ने उनको मार पीट कर भगा दिया।

अब उन्होंने फिर से डोनाल्ड से बदला लेने का फैसला किया।

वे जब घर लौटे तो उन्होंने देखा कि डोनाल्ड नाश्ता कर रहा है। वे पीछे से आये, उन्होंने डोनाल्ड को एक थैले में डाला और नदी की तरफ ले चले।

रास्ते में उनको सामने ही एक खरगोश दिखायी पड़ गया। खरगोश देख कर उन्होंने थैला तो सड़क पर रख दिया और उस खरगोश को पकड़ने दौड़ पड़े।

उन्होंने सोचा कि खरगोश जल्दी ही पकड़ में आ जायेगा तो क्यों न उसको भी रास्ते में पकड़ लिया जाये परन्तु वह खरगोश तो भागता ही चला गया और उसके पीछे भागते भागते वे भी काफी दूर निकल गये।

इधर जब कुछ देर हो गयी तो डोनाल्ड ने थैले में बैठे बैठे गाना गाना शुरू कर दिया। एक आदमी सड़क पर से गुज़र रहा था कि उसने थैले में से गाने की आवाज सुनी तो वह रुक गया।

उसने पूछा — "यह क्या मामला है कि तुम थैले में बन्द हो और गाना गा रहे हो?"

डोनाल्ड बोला — "मैं स्वर्ग जा रहा हूँ और बहुत जल्दी ही मैं इन सब मुश्किलों से आजाद हो जाऊँगा।"

वह आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारी जगह इस थैले बन्द हो जाऊँ तो तुम मुझसे क्या लोगे?"

डोनाल्ड बोला — "कह नहीं सकता पर इसके लिये तुम्हें काफी पैसा देना पड़ेगा क्योंकि स्वर्ग जाना कोई आसान काम नहीं है।"

वह आदमी बोला — "मेरे पास ज़्यादा पैसे तो नहीं हैं पर मेरे पास बीस जानवर हैं जो मैं तुमको दे सकता हूँ। चलेगा?"

डोनाल्ड बोला — "ठीक है मैं बीस जानवरों से ही काम चला लूँगा।"

आदमी ने खुशी खुशी थैला खोल कर डोनाल्ड को बाहर निकाल दिया। बाद में डोनाल्ड ने उस आदमी को उस थैले मे बन्द कर दिया और उसके बीस बढ़िया जानवर ले कर घर आ गया।

कुछ देर बाद हडिन और डडिन खरगोश पकड़ कर लौटे और उस थैले को अपनी पीठ पर लाद कर चलने लगे। यह समझते हुए कि उस थैले में अभी भी डोनाल्ड बन्द है उन्होंने उस थैले को नदी में फेंक दिया। वह थैला तुरन्त ही पानी में डूब गया।

वे जल्दी जल्दी घर लौटने लगे ताकि डोनाल्ड की जायदाद पर जल्दी ही कब्जा कर सकें, पर यह क्या? घर आ कर तो वे आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उन्होंने देखा कि डोनाल्ड तो घर में है और उसके पास कई सारे अच्छे किस्म के जानवर भी हैं जो पहले उसके पास कभी नहीं थे।

उन्होंने आ कर डोनाल्ड से पूछा — "अरे डोनाल्ड, यह क्या? हम तो समझे कि तुम डूब गये हो परन्तु तुम तो यहाँ हमारे सामने खड़े हो।"

डोनाल्ड बोला — "ओह हॉ, वहॉ तो मैं डूब ही गया था पर मुझे वहॉ डुबो कर तुमने मेरी बड़ी सहायता की क्योंकि वहॉ मुझे ये जानवर और सोना मिल गया था पर मैं उनमें से केवल एक ही चीज़ ले सकता था सो मैं जानवर ले कर चला आया पर सोना अभी भी वहीं पड़ा हुआ है।"

यह सुन कर दोनों के मन में लालच आ गया। उन्होंने फिर से कसम खायी कि वे डोनाल्ड के दोस्त बने रहेंगे पर वह किसी तरह उनको वह सोना दिलवा दे।

डोनाल्ड इस बार उनको नदी में उस जगह पर ले गया जहॉ वह नदी सबसे ज़्यादा गहरी थी।

उसने एक पत्थर उठाया और उसको नदी में फेंकते हुए बोला — "देखो, यही वह जगह है जहॉ पर सोना है। अब तुम ऐसा करो कि तुममें से एक इस जगह पर कूद जाओ और अगर तुमको किसी सहायता की जरूरत हो तो दूसरे को पुकार लेना।"

यह सुन कर हडिन तुरन्त ही उस जगह पर कूद गया। कुछ ही पल बाद वह ऊपर आ गया और ऐसी आवाज में कुछ बोला जैसे कोई डूबता आदमी बोलता है।

डडिन ने डोनाल्ड से पूछा — "यह क्या कह रहा है?"

डोनाल्ड बोला — "अरे, कह क्या रहा है सोना निकालने में तुम से सहायता मॉग रहा है, और क्या कह रहा है।

यह सुन कर डडिन भी हडिन के साथ ही नदी में कूद गया और दोनों नदी में डूब कर मर गये। डोनाल्ड दोनों की बेवकूफी पर हॅसता हुआ घर वापस आ गया।

13 जिद्दी पत्नी[24]

यह कैनेडा की एक हॅसी की, बेवकूफी की और दया की लोक कथा है पर देखना इसको पढ़ कर हॅसना नहीं हॅसना मना है।

एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था मगर उसकी पत्नी बहुत बातूनी थी। इस वजह से वह उससे बहुत तंग रहता था।

एक दिन वे दोनों नदी के किनारे टहल रहे थे। रोज की तरह उसकी पत्नी बोले जा रही थी बोले जा रही थी। कुछ देर तक तो वह आदमी उसकी बात सुनता रहा फिर बोला — "अगर तुम चुप नहीं रहोगी तो मैं तुम्हें इस नदी में फेंक दूँगा।"

पत्नी बेचारी यह सुन कर चुप हो गयी परन्तु कुछ ही देर में उनको एक घोड़ा दिखायी दे गया। अब उन दोनों में उस घोड़े के रंग पर बहस होने लगी। पत्नी का कहना था कि घोड़ा काला था और पति का कहना था कि घोड़ा सफेद था।

पति ने कहा "गलत" और पत्नी ने कहा "ठीक" और पति ने पत्नी को उठा कर नदी में फेंक दिया।

पत्नी नदी में डूबने लगी और सहायता के लिये चिल्लाने लगी। पति बोला — "अगर तुम यह मान लो कि मैं ठीक हूँ तो मैं तुम्हें पानी में से अभी निकाल लेता हूँ।"

[24] Obstinate Wife – a folktale of Calgary town of Alberta, Province of Canada, North America.

पत्नी ने एक बार पानी पिया और बोली — "नहीं, मैं ही ठीक हूँ।"

पति फिर बोला — "कह दो कि मैं ठीक हूँ। मैं तुम्हें पानी में से अभी बाहर निकाल लेता हूँ।"

पत्नी ने दोबारा पानी पिया और बोली — "नहीं मैं ही ठीक हूँ। घोड़ा काला है।"

पति फिर बोला — "अभी भी कह दो कि मैं ठीक हूँ। मैं तुम्हें पानी में से अभी भी निकाल लूँगा।"

पत्नी ने तीसरी बार पानी पिया पर उसके बाद वह नहीं बोल सकी तो पति बोला — "मैं तुमसे आखिरी बार पूछता हूँ कि मैं ठीक हूँ या गलत? यदि तुम ठीक हो तो तुम अपने हाथ की उँगलियों से वी का निशान बन दो।"

पति ने देखा कि उसकी पत्नी ने डूबते डूबते भी वी का निशान बना दिया था।

14 एक मेरा एक तुम्हारा[25]

एक बार दो छोटे छोटे बच्चे एक कब्रिस्तान में शाम के समय अपनी खेलने की गोलियॉ यानी कंचे[26] गिन रहे थे।

एक लड़के के पास सारे कंचे रखे थे और दूसरा उनमें से एक एक उठा कर बॉटता जा रहा था — "यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा। यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा।"

उसने अभी दो तीन बार ही ऐसा किया था कि एक कंचा पास में लगी तारों की जाली के उस पार बाहर की तरफ जा पड़ा। गिनने वाले ने कोई ध्यान नहीं दिया।

इतने में एक किसान उधर से गुजरा तो यह सुन कर बड़े पशोपेश में पड़ गया "यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा।" उसने सोचा "इस कब्रिस्तान में यह क्या बॅट रहा है।"

उसने जाली के उस पार देखने की काफी कोशिश की कि कौन क्या बॉट रहा है परन्तु उसे कुछ दिखायी ही नहीं दिया।

इतने में दूसरे लड़के को ध्यान आया कि उसका एक कंचा तो बाहर चला गया था। वह बोला — "बाहर वाले का क्या होगा?"

---

[25] One is Mine and One is Yours – a folktale from Calgary town of Alberta, Canada, North America.

[26] Translated for the word "Marbles" – little glass balls to play with. See the picture above

पहले वाला लड़का बोला — "अरे हॉ, बाहर वाले को भी तो देखना है।"

जब किसान को कुछ भी दिखायी नहीं दिया तो उसने सोचा कि इस कब्रिस्तान में इस समय और कौन हो सकता है सिवाय भूतों और शैतानों के।

लगता है शैतान और फरिश्ते[27] मिल कर यहॉ लाशों का बॅटवारा कर रहे हैं। उनको मेरा भी पता चल गया है क्योंकि उनमें से एक ने पूछा था कि बाहर वाले का क्या होगा और दूसरे ने कहा था कि "अरे हॉ उस बाहर वाले को भी तो देखना है।"

वह डर गया और भागा भागा पादरी के पास पहुॅचा और जा कर उसको सारी घटना सुना दी। पादरी को किसान की बातों पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उस किसान के साथ साथ खुद भी उस जगह पर आया जहॉ यह सब हो रहा था।

पादरी ने भी अन्दर झॉक कर देखने की भरसक कोशिश की परन्तु उसको भी कुछ दिखायी नहीं दिया।

इसी बीच उन बच्चों का एक और कंचा तारों की जाली के बाहर जा पड़ा। अब बॅटवारा आसान हो गया था।

पादरी ने भी सुना — "यह एक मेरा और यह एक तुम्हारा और बाहर वालों में से एक मेरा और एक तुम्हारा। बस अब बॅटवारा ठीक हो गया।"

---

[27] Satan and Angels

यह सुनते ही पादरी को भी लगा कि शैतान और फरिश्ते ने उसको भी देख लिया है और इसी लिये वे किसान और पादरी का भी बॅटवारा कर रहे हैं।

अब पादरी से नहीं रहा गया। वह वहॉ से उलटे पैरों भाग लिया। किसान के भी बात समझ में आ गयी सो वह भी पादरी के पीछे पीछे भाग लिया।

बच्चे इस सबसे बेखबर थे। वे जब अपने सारे कंचे बॉट चुके तो उन्होंने बाहर से अपने दोनों कंचे उठाये, एक कंचा एक बच्चे ने लिया और दूसरा दूसरे बच्चे ने और अपने अपने घरों को चले गये।

15 एक बछड़ा जो तीन बार बेचा गया[28]

कैनेडा देश की यह लोक कथा एक हॅसी और अक्लमन्दी की लोक कथा है। कैनेडा के एक गॉव में एक आदमी रहता था जो बहुत शराब पीता था। इस पीने की वजह से उसने अपनी सारी दौलत खो दी थी।

आखीर में उसके पास केवल एक बछड़ा बच गया था सो शराब खरीदने के लिये वह उस बछड़े का सौदा करने निकला।

चलते चलते उसको गॉव का एक डाक्टर मिला जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था। उसने उसको रोक कर पूछा — "जनाब, आपको बछड़ा चाहिये?"

डाक्टर ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक चॉदी के सिक्के का।"

डाक्टर ने उसको चॉदी का एक सिक्का निकाल कर दिया और उससे कहा — "यह लो चॉदी का सिक्का और इस बछड़े को मेरे घर पहुॅचा देना मैं अभी एक मरीज देखने जा रहा हूॅ।"

[28] A Calf That was Sold Three Times – a folktale of French Canada, North America

शराबी उस बछड़े को डाक्टर को बेच कर आगे बढ़ा तो उसे एक नोटरी[29] मिला। उसने नोटरी से भी पूछा — "जनाब क्या आप यह बछड़ा खरीदेंगे?"

नोटरी ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक पौंड का।"

नोटरी ने कहा — "ठीक है, यह लो एक पौंड और मेहरबानी कर के इसे मेरे घर पहुँचा देना। मैं अभी ज़रा एक जरूरी काम से जा रहा हूँ।" यह कह कर नोटरी अपने रास्ते चला गया और वह शराबी पौंड ले कर और आगे बढ़ा।

आगे जा कर शराबी को एक वकील मिला। उसने वकील से पूछा — "जनाब, क्या आप यह बछड़ा खरीदेंगे?"

वकील ने पूछा — "कितने का है?"

शराबी बोला — "एक पौंड का।"

वकील ने भी उसे एक पौंड निकाल कर देते हुए कहा — "ठीक है। यह लो एक पौंड। मैं अभी ज़रा दूसरे गॉव जा रहा हूँ तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी यदि तुम इसको मेरे घर पहुँचा दोगे।"

शराबी का तो काम बन गया था। उसने एक बछड़ा तीन बार बेच कर तीन पौंड बना लिये थे। अब वह शराबी रास्ते में एक शराबखाने में रुका, अपने सारे पैसों की शराब पी और अपने घर चला गया।

[29] Notary is he who attests the documents for legal purposes.

शाम को डाक्टर, नोटरी और वकील जब अपने अपने घर पहुँचे तो उन सबको यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि उन्होंने सुबह जो बछड़ा खरीदा था वह अभी तक उनके घर नहीं पहुँचा था।

उन्होंने आपस में बात की और उस बेईमान शराबी को पकड़ने की योजना बनायी। उन्होंने उस शराबी पर मुकदमा दायर कर दिया। शराबी अपना मुकदमा लड़ने के लिये पास के एक गॉव के वकील के पास पहुँचा।

वकील बोला — "जनाब, आपका मुकदमा बहुत मुश्किल है क्योंकि इसमें आपकी बेईमानी साफ दिखायी दे रही है। इसमें आपके बचने का केवल एक ही रास्ता है और वह यह कि जब भी आपसे कोई सवाल पूछा जाये तो आप यही कहें "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"[30]।"

सो सब अदालत में पहुँचे। जज ने शराबी से पूछा — "क्या आपने इस डाक्टर को अपना बछड़ा बेचा था?"

शराबी को जैसा समझाया गया था उसने वैसा ही जवाब दे दिया — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।"

"और इस नोटरी को भी?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

[30] Oyink, Oyink, Oyink. In English language this word is used for the sound of a pig.

"और इस वकील को भी?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज आगे बोला — "और फिर आपने इन लोगों को वे बछड़े दिये नहीं?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज आगे बोला — "आपने ऐसा क्यों किया जनाब?"

शराबी फिर बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

जज के कई सवाल पूछने पर भी जब शराबी के मुँह से सिवाय "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक" के और कुछ न निकला तो जज ने उन तीनों से कहा — "ऐसा लगता है कि यह आदमी पागल है। मेरा फैसला है कि इसको छोड़ दिया जाये।"

और शराबी को छोड़ दिया गया और वे तीनों अपने पैसे गँवा कर अपने अपने घर चले गये।

कुछ दिन बाद शराबी का वकील शराबी के पास आया और बोला — "हम लोग मुकदमा जीत गये इसलिये मेरी फीस दो।"

शराबी बोला — "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

वकील बोला — "देखो, तुम यह चालाकी मेरे साथ नहीं खेल सकते। मैंने ही तुमको यह मुकदमा जिताया है।"

"ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

"अब क्या मैं तुमसे अपनी फीस के लिये झगड़ा करूँ?"

"ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक"।

और वह वकील भी डाक्टर, नोटरी और वकील की तरह उस शराबी से "ओयिंक, ओयिंक, ओयिंक" के अलावा और कुछ भी न बुलवा सका तो उसको भी उसकी फीस नहीं मिली और वह बेचारा बिना फीस का मुकदमा लड़े ही घर चला गया।

इस तरह उस वकील की सिखायी हुई चाल उसी के सिर आ पड़ी।

16 बहादुर इगोरी और जिप्सी[31]

एक जगह एक देश में एक जिप्सी रहता था जिसके एक पत्नी थी और सात बच्चे थे। वह इतना गरीब था कि आखीर में उसके पास खाने पीने के लिये कुछ भी नहीं बचा था – यहॉ तक कि रोटी का एक टुकड़ा भी नहीं था।

एक तो वह आलसी बहुत था और दूसरे चोरों से बहुत डरता था। ऐसी हालत में वह क्या कर सकता था। वह किसान एक बार बाहर गया और खड़े हो कर चारों तरफ देखने लगा और कुछ कुछ सोचता रहा।

उसी समय बहादुर इगोरी वहॉ से गुजरा तो किसान ने उससे पूछा — "ए भाई किधर चले।"

"भगवान के पास।"

"क्यों?"

इगोरी बोला — "मैं लोगों का यह सन्देश ले कर जा रहा हूॅ कि आदमी को कहॉ रहना चाहिये और कहॉ काम करना चाहिये।"

किसान बोला — "क्या तुम मेरा भी एक सन्देश भगवान को दोगे कि मैं क्या करूॅ।"

---

[31] Egory the Brave and the Gypsy – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. Its translation in Hindi is available from hindifolktales@gmail.com in E-book form free of charge.

इगोरी बोला — "ठीक है मैं दे दूँगा।" और वह अपने रास्ते चला गया।

किसान वहीं खड़ा रहा खड़ा रहा। वह उसका इन्तजार करता रहा। आखिर इगोरी उसी रास्ते से वापस लौटा तो उसने तुरन्त ही उससे पूछा — "क्या तुमने भगवान को मेरा सन्देश दिया?"

इगोरी बोला — "ओह मुझे अफसोस है कि मैं भूल गया।"

एक बार फिर किसान कहीं जा रहा था तो उसे वह इगोरी फिर से मिल गया। वह फिर किसी काम से भगवान के पास जा रहा था। तो उस जिप्सी किसान ने उससे कहा — "मेहरबानी कर के मेरी एक प्रार्थना भगवान तक पहुँचा देना।"

इगोरी ने कहा "ठीक है।" पर वह फिर भूल गया।

एक बार फिर किसान को वह इगोरी फिर मिल गया तो उसने उससे फिर से कहा — "मेहरबानी कर के भगवान से मेरी भी प्रार्थना कर देना।"

इगोरी बोला "ठीक है कर दूँगा।"

किसान ने पूछा — "क्या तुम फिर से भूल जाओगे?"

इगोरी बोला — "नहीं इस बार नहीं भूलूँगा।"

पर किसान को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "तुम अपना सोने का कुंडा[32] मुझे देते जाओ। जब तक तुम वापस आते हो तब तक मैं इसे अपने पास रखूँगा नहीं तो तुम फिर से भूल जाओगे।"

इगोरी ने अपना सोने का कुंडा खोला और उसको दे दिया। खुद वह एक कुंडे के सहारे ही अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ चला गया। जा कर वह भगवान से मिला और उनसे पूछा कि हर आदमी को कहॉ रहना चाहिये और हर एक को क्या काम करना चहिये। और हर आदमी के बारे में उसको ठीक हुक्म मिल गये।

अब वह वहॉ से वापस चलने लगा तो जैसे ही वह अपने घोड़े पर चढ़ने लगा तो उसने झुक कर देखा कि उसके पास तो घोड़े पर चढ़ने के लिये पैर रखने वाला ही नहीं है तो उसको जिप्सी की याद आयी।

सो वह तुरन्त ही भगवान के पास भागा गया और उनसे कहा — "मुझे अफसोस है भगवान कि जब मैं यहॉ आ रहा था तो रास्ते में मुझे एक जिप्सी मिला। वह मुझसे पूछ रहा था कि उसको क्या करना चाहिये। वह तो मैं आपसे पूछना भूल ही गया।"

[32] Translated for the word "Stirrup" – one of the two things hanging on each side of the horse to climb up the horse. They are a part of horse saddle. See its picture above.

भगवान बोले — "उससे कहना कि वह किसी से भी कोई भी चीज़ ले सकता है चुरा सकता है और फिर धोखा दे कर झूठी गवाही दे सकता है।"

यह सुन कर इगोरी वहाँ से चला गया अपने घोड़े पर चढ़ा और वापस आ कर जिप्सी से कहा — "मैं अब तुम्हें सच बताता हूँ अगर तुमने मेरा कुंडा न लिया होता तो मैं तो तुम्हारी बात भूल ही गया होता।"

जिप्सी बोला — "मुझे ऐसा ही लग रहा था। अब तुम मुझे दुनियाँ के आखिरी समय तक नहीं भूल सकते थे क्योंकि जब भी तुम नीचे की तरफ देखते तब तब तुम्हें मेरी याद आ जाती। खैर अब यह बताओ कि भगवान ने तुमसे क्या कहा।"

इगोरी बोला — "भगवान ने कहा है कि जिस किसी से भी तुम कुछ लोगे या चुराओगे तो तुम धोखे से उसे रख सकोगे। यही तुम्हारा काम होगा।"

जिप्सी ने उसे धन्यवाद दिया नीचे तक सिर झुका कर सलाम किया और वहाँ से चला गया।

जब वह जाने लगा तो इगोरी बोला — "अरे मेरा सोने का कुंडा तो देते जाओ।"

जिप्सी बोला — "कैसा कुंडा?"

इगोरी बोला — "क्या तुमने मुझसे एक कुंडा नहीं लिया था?"

जिप्सी बोला — "मैं तुमसे कोई एक कुंडा कैसे ले सकता हूॅ। मैंने तो तुम्हें आज पहली बार देखा है। और मेरे पास तो कोई कुंडा कभी था ही नहीं। भगवान की कसम कभी भी नहीं था।" इस तरह से जिप्सी ने पहला झूठ बोला।

अब इगोरी क्या करता। उससे लड़ता झगड़ता और मामले को सिलटाता। यह वह कर सकता था और उसने यह किया भी पर सब बेकार। यह तो पूरी तरीके से सच था और जिप्सी सच बोल रहा था — "मैंने उसे कुंडा नहीं दिया होता अगर मैं उसे जानता न होता। अब मैं उसे कभी नहीं भूलूॅगा।"

इस तरह जिप्सी ने उससे सोने का कुंडा ले लिया और घूम घूम कर उसे बेचने लगा। जब वह रास्ते पर बेचने की कोशिश कर रहा था तो उसको एक बहुत ही अच्छा लौर्ड मिल गया।

उसने जिप्सी से पूछा — "हलो जिप्सी क्या तुम अपना यह सोने का कुंडा बेचोगे?"

"हॉ बिल्कुल।"

"क्या लोगे"

"पन्द्रह सौ रूबल[33]।"

लौर्ड बोला — "यह तो बहुत मॅहगा है।"

जिप्सी बोला — "पर देखो यह है भी तो खालिस सोने का।"

लौर्ड बोला — "ठीक है।"

[33] Rouble is the currency of Russia.

और फिर अपनी जेब में हाथ डाला तो उसको उसमें केवल एक हजार रूबल ही मिले। तो वह बोला — "ओ जिप्सी अभी तो तुम ये एक हजार रूबल ही ले लो बाकी के पॉच सौ रूबल मैं तुम्हें बाद में भेज दूँगा।"

जिप्सी बोला — "नहीं नहीं माई लौर्ड। ये एक हजार रूबल तो मैं ले लूँगा पर यह सोने का कुंडा मैं आपको अभी नहीं दे सकता। जब आप अपना सौदा पूरा कर लेंगे तब मैं आपको यह कुंडा दूँगा।" सो लौर्ड ने उसे एक हजार रूबल दे दिये और अपने घर चला गया।

जैसे ही वह अपने घर पहुँचा उसने पॉच सौ रूबल निकाले अपने एक आदमी को उन्हें दे कर कहा कि वह उस पैसे को ले जा कर उस जिप्सी को दे दे और उससे सोने का कुंडा ले आये।

जब लौर्ड का आदमी जिप्सी के घर आया तो वह बोला — "ए जिप्सी। मैं लौर्ड से तुम्हारे लिये यह पैसे ले कर आया हूँ। तुम ये पैसे ले कर मुझे सोने का कुंडा दे दो।"

जिप्सी बोला — "खैर तुम पैसे ले आये हो तो ये पैसे मुझे दे दो।" कह कर उसने उस आदमी से पॉच सौ रूबल ले कर रख लिये और उसको एक गिलास शराब दी। फिर दूसरी फिर तीसरी जब तक कि उस आदमी का पेट नहीं भर गया।

जब उसका पेट भर गया तो वह वहॉ से घर चलने लगा तो किसान से बोला — "अब मुझे वह सोने का कुंडा दो।"

किसान बोला "क्या?"

"वह सोने का कुंडा जो तुमने मेरे मालिक को बेचा था।"

"क्या? कौन सा सोने का कुंडा? और मैंने बेचा? मेरे पास तो कभी कोई सोने का कुंडा था ही नहीं।"

"तो अगर तुम्हारे पास सोने का कुंडा नहीं था और तुमने उन्हें उसे नहीं बेचा तो मेरे पैसे मुझे वापस करो।"

जिप्सी बोला — "कौन सा पैसा?"

आदमी बोला — "अभी अभी तो मैंने तुम्हें पॉच सौ रूबल दिये।"

जिप्सी बोला — "मैंने तो अपनी ज़िन्दगी भर में कभी ग्रिवैनिक[34] भी नहीं देखा। मैंने तो केवल इसलिये तुम्हारी अच्छे से मेहमाननवाजी की क्योंकि तुम हमारे लौर्ड के आदमी हो। इसलिये नहीं कि मुझे तुमसे कोई पैसा लेना है।"

और इस तरह से उसने उसके दिये पैसों को और लौर्ड के दिये हुए एक हजार रूबल को दोनों को नकार दिया।

जब लौर्ड ने यह सुना तो उसको बड़ा गुस्सा आया वह तुरन्त ही जिप्सी से मिलने के लिये चल दिया। वहॉ जा कर वह जिप्सी पर चिल्लाया — "ओ जिप्सी इसका क्या मतलब है, ओ नीच चोर, कि तूने पैसे तो ले लिये और सोने का कुंडा दिया नहीं।"

[34] Grivennik = 1/10th of Rouble = 10 Kopeks

जिप्सी बोला — "कौन सा सोने का कुंडा। लौर्ड ज़रा सोच कर तो देखिये कि एक बूढ़े किसान के लिये यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि वह एक सोने का कुंडा रखे।"

यह सुन कर तो लौर्ड को और गुस्सा आ गया पर फिर भी वह उससे सोने का कुंडा नहीं निकलवा सका सो वह बोला — "अब हमें कचहरी जाना पड़ेगा।"

जिप्सी बोला — "मेहरबानी कर के ज़रा सोचिये तो। हम दोनों आपस में कैसे मिल सकते हैं। आप तो एक लौर्ड हैं और मैं एक खरदिमाग हॅू। मैं तो एक बेवकूफ पिछड़ा हुआ किसान हॅू। अगर मुझे आपके साथ कचहरी जाना पड़ा तो कम से कम आप मुझे पहनने के लिये अच्छे कपड़े तो देंगे न।"

सो लौर्ड ने उसको पहनने के लिये अपने कपड़े दिये और फिर वे दोनों अपने मुकदमे के लिये शहर चल दिये। जब वे लोग शहर में आये तो लौर्ड ने कहा — "मैंने इससे सोने का एक कुंडा खरीदा। इसने उसका पैसा तो ले लिया पर मुझे कुंडा नहीं दिया।"

इसके जवाब में किसान ने कहा — "माई लौर्ड जस्टिस। आप खुद यह सोचें कि किसी बूढ़े से क्या कोई सोने का कुंडा खरीद सकता है? ऐसा मैंने क्यों कहा? क्योंकि मेरे घर में तो एक डबल रोटी भी नहीं है। मैं तो यह सोच ही नहीं सकता कि यह भला आदमी मुझसे चाहता क्या है। अभी थोड़ी देर में यह यह भी कहेगा कि मैंने इसके कपड़े पहन रखे हैं।"

यह सुन कर लौर्ड चीखा — "पर यह आदमी कपड़े तो वाकई मेरे ही पहने हुआ है।"

जिप्सी बोला — "देखा माई लौर्ड जस्टिस मैं न कहता था कि अब यह यही कहेगा।"

इसके बाद तो मुकदमा खत्म ही हो गया। लौर्ड बिना कुछ लिये हुए अपने घर चला गया और किसान अपने घर खुशी से रहने चला गया।

16 एक संत और एक विद्यार्थी[35]

हॅसी की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के चीन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक स्कूल में एक संत पढ़ाया करते थे। उनको सबसे अच्छा यही लगता था कि वह कुछ थोड़ा सा खा लें और फिर थोड़ी देर के लिये सो जायें। पर वह हमेशा ही पढ़ाने से पहले इतना सारा खा लेते थे कि उनको हिलना भी मुश्किल हो जाता था।

खाने के बाद और पढ़ाने से पहले वह सो जाते और फिर तब तक सोते रहते जब तक कि उनके पढ़ाने के खत्म होने की घंटी नहीं बज जाती।

उसी स्कूल में एक बहुत ही गरीब आदमी का लड़का ली[36] भी पढ़ता था। एक दिन उसने उन संत जी से पूछा — "गुरू जी, मैं आपसे एक बात पूछूँ? आप हमारी पढ़ाई के हर घंटे में क्यों सोते हैं?"

संत ने बिना किसी झिझक के जवाब दिया — "मेरे दोस्त, मुझे ऐसे ही अच्छा लगता है। इस थोड़े से समय में बुद्ध जी से मिल लेता हूँ, कुछ उनके उपदेश सुन लेता हूँ।

---

[35] A Monk and a Student – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Asian_Folktale_2.html

[36] Li – a name of a Chinese man

इसी लिये मैं जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके सोने की कोशिश करता हूँ ताकि मैं उनके ज़्यादा से ज़्यादा उपदेश सुन सकूँ।"

ली यह सुन कर चुप रह गया पर उसने यह बात अपने दिमाग में रख ली।

एक बार ली का पिता बीमार पड़ गया तो ली को रात में उसकी देखभाल करनी पड़ी। अगले दिन सुबह जब वह स्कूल गया तो सुबह सुबह ही वहाँ जा कर सो गया और इतनी गहरी नींद सोया कि उसको तो पढ़ाई खत्म होने की घंटी भी सुनायी नहीं पड़ी जब कि घंटी सुन कर वह संत जाग गया था।

संत ने जब देखा कि ली अभी भी सो रहा है तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने उसके कान पकड़े और चिल्लाया — "ओ कबूतर के बच्चे, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरी क्लास में सोने की?"

ली बोला — "गुरू जी, बस ज़रा मेरी ऑख लग गयी तो मैंने देखा कि मैं बुद्ध जी के साथ था और उनके उपदेश सुन रहा था।"

संत बोला — "और बुद्ध जी क्या कह रहे थे?"

ली बोला — "उन्होंने कहा कि तुम्हारा गुरू कौन है मैंने उसे ज़िन्दगी में कभी देखा नहीं।"

17 मैगा दवा[37]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के जापान देश में कही सुनी जाती है। यह लोक कथा भी बड़ी मजेदार और हॅसी की एक लोक कथा है।

एक बार एक गरीब व्यापारी रात गुजारने के लिये एक सराय में ठहरा। उसने अपना सामान तो एक तरफ रख दिया और सराय के मालिक से खाना बनाने के लिये कहा। सराय के मालिक ने अपनी पत्नी से व्यापारी के लिये खाना बनाने के लिये कहा।

व्यापारी के पास कुछ सामान था और दो सिक्के थे पर सराय के मालिक की लालची पत्नी को यह पता नहीं था कि व्यापारी के पास इससे ज़्यादा और कुछ नहीं था। उसने सोचा कि क्यों न हम इसका यह सारा सामान और सारा पैसा ले लें।

सराय के मालिक की पत्नी उस व्यापारी के लिये रसोई में खाना तो बनाती रही पर उसके दिमाग से यह बात गयी नहीं।

आखिर वह अपने पति से बोली — "यह व्यापारी जो हमारी सराय में ठहरा हुआ है अगर हम उसका सामान ले लें तो कैसा हो?"

[37] Mega Herb - a folktale from Japan, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/Asian_folktales/Asian_Folktale_3.html

पति बोला — यह तो बहुत ही आसान काम है। थोड़ी सी "मैगा" दवा उसके खाने में मिला दो। तुम्हें मालूम ही है कि जो भी वह दवा खा लेता है वह अपना कुछ न कुछ तो यहाँ भूल ही जाता है। और यह व्यापारी अपनी चीज़ें नहीं भूलेगा तो और क्या भूलेगा क्योंकि इसके पास तो और कुछ है ही नहीं भूलने के लिये।"

सराय के मालिक की पत्नी ने यही किया कि उसके खाने में उसने थोड़ी सी मैगा दवा मिला दी। व्यापारी ने खाना खाया, सराय के मालिक को धन्यवाद दिया और सो गया।

अगले दिन वह जल्दी उठा और चला गया। सुबह जब सराय के मालिक की पत्नी की आँख खुली तो वह सबसे पहले उस व्यापारी के कमरे में यह देखने गयी कि व्यापारी वहाँ पर अपना सामान भूल गया है या नहीं। पर वहाँ तो कमरा खाली पड़ा था।

वह आ कर अपने पति पर झल्लायी — "तुम बहुत ही बेवकूफ हो। तुमने मुझसे क्या बेवकूफी करने के लिये कहा वह तो अपनी एक चीज़ भी भूल कर नहीं गया।"

पति शान्ति से बोला — "क्यों क्या हुआ?"

पत्नी ने उसे बताया कि वह व्यापारी तो सराय छोड़ कर चला गया और उसका कमरा तो खाली पड़ा है।

पति बोला — "अगर वह अपना सामान भूल कर नहीं गया तब यकीनन वह कुछ और भूल कर गया होगा। ऐसा नहीं हो सकता कि यह दवा काम न करे और वह कुछ भूल कर न जाये।"

पत्नी फिर चिल्लायी — "नहीं वह कुछ भी भूल कर नहीं गया। मुझे तो उसके कमरे में कुछ भी दिखायी नहीं दिया।"

पति बोला — "सोचो तो वह जरूर ही कुछ न कुछ भूल कर गया होगा, अगर अपना सामान नहीं तो कुछ और।"

अब पत्नी ने सोचना शुरू किया कि अगर वह अपना सामान भूल कर नहीं गया तो फिर वह क्या भूल कर गया है। सोचते सोचते उसे ख्याल आया कि वह सराय का किराया तो दे कर गया ही नहीं।

और एक बार फिर वह अपने पति पर चिल्लायी — "अरे बेवकूफ वह हमारा किराया देना भूल गया।"

18 एक आदमी ने चोरी करना सीखा[38]

अफ्रीका के इथियोपिया देश में एक जगह दो आदमी रहते थे – उनमें से एक तो बहुत बड़ा चोर था, वह चोरी करने में बहुत होशियार था, और दूसरा एक किसान था, उसे चोरी करना बिल्कुल भी नहीं आता था। वह केवल खेती कर के ही अपना पेट पालता था।

एक बार उसने देखा कि केवल खेती से उसका गुजारा नहीं हो पाता था और चोर के पास तो हमेशा ही खूब सारा पैसा दिखायी देता था। यह देख कर उसने सोचा कि चोर के पास चल कर उससे चोरी के बारे में ही कुछ सीखा जाये।

ऐसा सोच कर वह चोर के पास पहुँचा और उससे बोला — "चोर भाई, मेरा खेती में गुजारा नहीं होता मैं भी चोर बनना चाहता हूँ। बताओ मैं चोर कैसे बनूँ?"

चोर बोला — 'किसी के घर जा कर सेंध लगाओ। और देखो यह काम चुपचाप करना और जल्दी करना क्योंकि अगर घर वाला जाग गया तो वह तुम्हें अपने भाले से मार देगा।"

[38] A Man Learnt Stealing – a folktale of Hadiya tribe of Ethiopia, Africa

यह सुन कर किसान चला गया। उसने सोचा कि असल की चोरी करने से पहले मुझे कहीं पर अपना हाथ साफ कर लेना चाहिये।

यह सोच कर वह जंगल में लगे एक अंजीर के पेड़ के पास पहुँचा और उसकी जड़ खोदने लगा। जब वह उस पेड़ की जड़ खोद रहा था तो उसकी नंगी पीठ पर ओस की एक बूँद आ गिरी।

किसान तो मग्न हो कर सेंध लगा रहा था। उसे इस बात का ध्यान ही नहीं था कि अभी तो वह केवल अभ्यास के लिये ही सेंध लगा रहा था और केवल एक पेड़ की जड़ ही खोद रहा है सो ओस की बूँद पीठ पर पड़ते ही उसके दिमाग में आया कि घर वाला जाग गया है और उसने उसको अपने भाले से मारा है।

बस वह चिल्लाता हुआ घर भागा कि "उसने मुझे अपने भाले से मार डाला रे। उसने मुझे अपने भाले से मार डाला रे।" घर आ कर वह बहुत दुखी हुआ कि पहली ही कोशिश में ही वह नाकामयाब हो गया था।

वह फिर चोर के पास पहुँचा और बोला — "तुमने पहले जो कुछ भी मुझे बताया था वह सब गलत था। अबकी बार तुम मुझे फिर से सब कुछ ठीक से बताओ।"

चोर हॅस कर बोला — "किसान भाई, पहले भी मैंने तुमको जो कुछ बताया था वह सब ठीक ही बताया था पर इस बार मैं तुमको चोरी का एक छोटा रास्ता बताता हूँ।

तुम चारों तरफ देखभाल कर जाना, न तो चिल्लाना और न बोलना और किसी के जानवरों के झुंड में छिप कर जाना।"

अबकी बार किसान कोई गलती नहीं करना चाहता था इसलिये चोर की बातों को ध्यान से अपने दिमाग में रख कर वह घास के मैदान में चर रहे जानवरों के झुंड में जा कर छिप गया।

जब जानवरों का मालिक उन जानवरों को हॉक कर अपने घर की तरफ ले चला तो छिपे छिपे वह भी उस मालिक के घर तक पहुँच गया।

वहॉ पहुँच कर वह ज़ोर से बोला — "तुम चारों तरफ देखभाल कर जाना, न तो चिल्लाना और न बोलना और जानवरों के झुंड में छिप कर जाना।"

बस फिर क्या था किसान जैसे ही यह बोला जानवरों के मालिक ने उसको देख लिया और उसको बहुत मारा। किसान ने फिर कभी चोरी का नाम नहीं लिया।

19 न्यायप्रिय राजा फ़िरदी[39]

यह अफ्रीका के इथियोपिया देश की एक ऐसी लोक कथा है जिसमें एक राजा अपने न्याय के लिये बहुत मशहूर है। आओ देखें वह अपनी प्रजा के साथ किस तरह से न्याय करता है।

इथियोपिया के पश्चिमी ओर के पर्वतीय प्रदेशों में एक बहुत बड़ा राजा रहता था जिसका नाम था फ़िरदी। वह अपने निष्पक्ष फैसलों के लिए बहुत दूर दूर तक मशहूर था। आज तक किसी का साहस नहीं पड़ा था कि कोई उसके फैसले को चुनौती दे सके।

ऐसा क्यों था? ऐसा इसलिये था कि राजा का यह हुक्म था कि जो कोई आदमी उसके फैसले के खिलाफ बोले उसको ज़िन्दा ही धीमी आग पर भून दिया जाये। इस हुक्म के साथ उसके न्याय को चुनौती देने की हिम्मत ही किसमें थी?

एक रात की बात है कि एक चोर ने राजा के शहर में एक धनी व्यापारी के घर में दीवार तोड़ कर घुसने की कोशिश की। जैसे ही दीवार में छेद इतना बड़ा हुआ कि वह उसके अन्दर घुस सकता एक ईंट ऊपर से उसके सिर पर पड़ी जिससे उसको चोट लग गयी।

चोट ज़्यादा थी इसलिये वह चोर अपना फूटा सिर ले कर अपने घर चला गया। उस रात वह कुछ नहीं कर सका। उसको अपने

[39] Justful King Firdi – a folktale of Gala or Oromo Tribe of Ethiopia, East Africa

ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था क्योंकि उस दिन उसकी रात बेकार गयी और वह कुछ नहीं कर सका।

अगले दिन वह राजा फ़िरदी के महल में पहुँचा और राजा से बोला "हुजूर, कल रात मैं एक व्यापारी के घर में घुसने के लिये दीवार तोड़ रहा था ताकि उसकी कोई छोटी मोटी चीज़ चुरा सकूँ परन्तु दीवार से एक ईंट गिरी और उसने मेरा सिर फोड़ दिया।

देखिये, मैं इतनी ज़्यादा चोट खा गया हूँ कि अपना काम ही नहीं कर सका। किसी को तो इसकी सजा मिलनी चाहिए।"

राजा फ़िरदी ने उसके सिर की चोट देखी तो वह गुस्से में भर कर काँपती आवाज में बोला "तुम ठीक कहते हो। ऐसे देश में भला कोई भी क्या कर सकता है जहाँ कोई चोर बिना किसी एक्सीडेंट के चोरी भी नहीं कर सकता।"

उसने फिर अपने नौकरों से कहा "जाओ और जा कर उस व्यापारी को ले कर आओ जिसके घर में इस चोर को यह चोट लगी है।"

राजा के नौकर तुरन्त गये और व्यापारी को ले कर राजा के पास आ गये। व्यापारी डर के मारे काँप रहा था। उस बेचारे की तो यही समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी गलती क्या थी जो राजा ने उसको बुलाया।

असल में तो हर आदमी राजा फ़िरदी के दरबार में कॉपा ही करता था पर यह व्यापारी कुछ ज़रा ज़्यादा ही कॉप रहा था क्योंकि यह बेचारा बेकुसूर था।

राजा बोला — "व्यापारी, यह भला सा चोर तुम्हारे घर में दीवार तोड़ते समय जख्मी हो गया। क्योंकि यह तुम्हारा घर तोड़ते समय जख्मी हुआ है इसलिये इसकी चोट के जिम्मेदार तुम हो।"

व्यापारी बेचारा लड़खड़ाती आवाज में बोला — "हुजूर, यह सच है कि वह घर मेरा है परन्तु मैंने तो उसमें कुछ नहीं किया। गलती उस बढ़ई की है जिसने मेरे लिये वह घर बनाया। उसने वह घर मेरे लिये ठीक से नहीं बनाया, इसी लिये वह ईंट गिर गयी।"

राजा कुछ सोच कर बोला "शायद तुम ठीक कहते हो। बढ़ई को हाजिर किया जाये। मैं तो यह चाहता हूँ कि सजा केवल अपराधी को ही मिलनी चाहिये।"

राजा फ़िरदी के सामने अब उस मकान बनाने वाले बढ़ई को लाया गया। राजा बोला "ओ नीच आदमी, क्या तुम जानते हो कि यह भला चोर इस व्यापारी के घर में चोरी करते समय जख्मी हो गया?

और वह भी केवल तुम्हारी लापरवाही से किये गये काम की वजह से। जब वह दीवार तोड़ रहा था तो एक ईंट उस बेचारे के

सिर पर गिर पड़ी। वह ईंट तुमने कैसे लगायी जो इस बेचारे के सिर पर गिर पड़ी?"

बढ़ई के तो होश हवास गुम हो रहे थे परन्तु किसी प्रकार वह हिम्मत बटोर कर बोला "हुजूर यह तो ठीक है कि व्यापारी का घर मैंने बनाया था पर ईंटें तो मजदूर ने रखी थी। उसी को इस बात की सजा मिलनी चाहिये कि उसने ईंट ऐसे कैसे रखी जो वह इस बेचारे चोर के सिर पर गिर गयी।"

राजा फ़िरदी बोला "तुम ठीक कहते हो। मजदूर को बुलाया जाये और फिर मैं देखता हूँ कि चोर के साथ न्याय कैसे नहीं होता है।"

सो मजदूर को दरबार में लाया गया। जब राजा ने उसको इस घटना का जिम्मेदार ठहराया तो मजदूर तो डर से केवल फुसफुसा ही सका "सरकार, मैं इस घटना का जिम्मेदार नहीं हूँ। मैंने ईंटों को चिपकाने वाले मसाला बनाने की ओखली एक ओखली बेचने वाले से खरीदी थी।

अब अगर वह ओखली ठीक रही होती तो मसाला भी अच्छा रहा होता और ईंट भी ठीक से चिपक जाती। इस ईंट के गिरने का तो वह ओखली वाला ही जिम्मेदार है जिसकी ओखली में वह ईंट बनाने वाला मसाला ठीक से नहीं बना।"

सो ओखली वाले को राजा के दरबार में पेश किया गया। राजा बोला "सुन ओ नीच ओखली वाले, तुमने ऐसी खराब ओखली क्यों

बनायी जिसमें ईंट चिपकाने वाला मसाला ही ठीक से नहीं बन पाया?

उस ओखली में बनाये गये मसाले से बढ़ई ईंट को ठीक से चिपका नहीं सका और इसी लिये कुछ छोटी मोटी चीज़ें चुराते समय यह भला चोर उन ईंटों में से एक ईंट गिरने की वजह से घायल हो गया। तुमको इस जुर्म की कड़ी सजा मिलेगी।"

बदकिस्मती से इस ओखली बनाने वाले का शरीर तो बड़ा था और वह ताकतवर भी बहुत था पर उसमें अक्ल कम थी। वह बेचारा अपने बचाव में कुछ भी न कह सका।

उधर राजा फ़िरदी को भी पक्का हो गया कि उसने असली अपराधी का पता लगा लिया सो उसने अपने आदमियों को तुरन्त ही हुक्म दिया कि इस ओखली बनाने वाले को जल्दी से जल्दी फॉसी पर चढ़ा दिया जाये।

राजा के हुक्म के अनुसार बढ़इयों ने अपराधी को फॉसी पर चढ़ाने के लिये फॉसी का खॉचा जल्दी जल्दी बनाया। जल्दी जल्दी बनाने की वजह से वह खॉचा पूरी ऊॅचाई का भी नहीं बन पाया क्योंकि यह ओखली वाला तो बहुत लम्बा आदमी था।

राजा के आदमी जब उसको फॉसी लगाने के लिये ले कर गये तो उन्होंने देखा कि फॉसी का फन्दा गले में डालने के बाद भी उस ओखली वाले के पैर तो जमीन से छू रहे थे।

उन्होंने यह समस्या जब जा कर राजा को बतायी तो राजा यह सुन कर आग बबूला हो उठा और बोला "इस भले चोर को छोड़ने में मुझे अभी कितनी देर और लगेगी?

फॉसी का खॉचा तैयार है तो किसी को तो इस जुर्म की सजा मिलनी ही चाहिए। जाओ और कोई भी ऐसा आदमी ढूँढो जो इस खॉचे पर फ़िट हो सके और उसको फॉसी चढ़ा दो।"

अब राजा के आदमी किसी ऐसे आदमी की तलाश में चल दिये जो उस फॉसी के खॉचे में फ़िट हो सके। पहला आदमी जो उनको दिखायी दिया वह था एक छोटा सा प्याज उगाने वाला किसान। वह अभी अभी गॉव से अपनी प्याज की फसल निकाल कर बेचने के लिए शहर जा रहा था।

इस किसान के बारे में यह मशहूर था कि इसने कभी किसी को किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं पहुँचाया था पर क्योंकि वह साइज़ में छोटा था इसलिये वह फॉसी के खॉचे पर बिल्कुल ठीक बैठ रहा था। और राजा अपने महल में बैठा न्याय की दुहाई दे रहा था।

जब यह किसान राजा फ़िरदी के सामने लाया गया तो राजा चिल्लाया "मुझे कुछ भी बताने की जरूरत नहीं है। अगर यह आदमी उस खॉचे पर फ़िट बैठता है तो बस यही आदमी ठीक है।

वह भला चोर पहले ही काफी देर तक न्याय के लिए इन्तजार कर चुका है। अब तुम इसको जल्दी से ले जाओ और फॉसी पर चढ़ा दो।"

और वह बेचारा बेकुसूर किसान अपराधी चोर को न्याय देने के सिलसिले में फॉसी चढ़ा दिया गया। ऐसा था राजा फ़िरदी का न्याय।

20 नर मच्छर क्यों नहीं काटते?[40]

एक बार की बात है कि फिलीपीन्स देश में एक बहुत ही अक्लमन्द और बहुत ही बढ़िया आदमी रहता था। वह जानवरों के साथ रहता था और जब भी जानवरों में कोई झगड़ा होता या बहस होती तो वह जज बन कर उनके झगड़े सुलझाता था।

एक बार एक चिड़िया ने शिकायत की — "जज, जज। मैं क्या करूँ? हर रात मेंढक इतना शोर मचाता है कि मैं सो ही नहीं सकती।"

जज बोला — "ठीक है मेंढक को बुलाओ। हम पता करेंगे कि वह तुमको परेशान क्यों करता है।"

जल्दी ही मेंढक जज के सामने हाजिर हो गया। जज ने पूछा — "ओ मेंढक, तुम रोज रात को चिड़िया की नींद क्यों खराब करते हो।

मेंढक इज्जत से बोला — "जनाब, मैं रोज रात को कछुए से अपनी सुरक्षा के लिये चिल्लाता हूँ।

---

[40] Why Male Mosquitoes Do Not Bite? – a folktale from Philippines, Asia. Translated from http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=90
Retold and written by Mike Lockett.
Adapted from "The Animals Go on Trial" in "Once in the First Times", 1949, stories retold by Elizabeth Hough Sechrist and attributed to "Filopino Popular Tales", 1921, by Dean S Fransler.

कछुआ अपना घर अपनी पीठ पर ले कर चलता है। जब भी वह मेरे पास आता है तो मुझे उससे डर लगता है कि कहीं वह मेरे ऊपर न गिर जाये और मुझे उससे कोई नुकसान न पहुँचे।"

जज बोला — "अब मैं समझा कि मेंढक रात को क्यों चिल्लाता है। यह कछुए की गलती है। क्योंकि वह अपना घर अपने ऊपर ले कर चलता है तो मेंढक डर जाता है और वह सारी रात चिल्लाता है और उसकी वजह से चिड़िया रात भर सो नहीं सकती। अच्छा तो कछुए को बुलाओ।"

कछुआ भी जल्दी ही जज के सामने आ गया। जज ने पूछा — "ओ कछुए, तुम अपने ऊपर अपना घर रख कर मेंढक को क्यों डराते हो?"

कछुआ इज्जत से सिर झुका कर बोला — "योर औनर, मैं क्या करूँ जुगनुओं[41] से बचने के लिये मुझे तो अपना घर अपने साथ रखना ही पड़ता है।

जुगनू हमेशा ही आग लिये घूमता रहता है और मुझे हमेशा ही यह डर लगा रहता ही कि मेरे पीछे वह मेरा घर बर्बाद कर देगा इसलिये मैं अपना घर अपने साथ ही रखता हूँ।"

जज बोला — "अब मैं समझा कि कछुआ जुगनू से क्यों डरता है। वह जुगनू ही है जो कछुए को अपनी आग से डराता है और इसी लिये कछुआ अपना घर अपने साथ में लिये घूमता है।

[41] Translated for the Word "Firefly", commonly known as "Glowworm".

और क्योंकि कछुआ अपना घर अपने साथ ले कर घूमता है मेंढक कछुए से डर जाता है और रात भर चिल्लाता है जिससे चिड़िया रात भर सो नहीं पाती। ठीक है जुगनू को बुलाओ।"

तुरन्त ही जुगनू को जज के सामने लाया गया। जज ने उससे पूछा — "ए जुगनू, तुम अपनी आग से कछुए को क्यों डराते हो?"

जुगनू बहुत ही नर्मी से बोला — "जनाब, मैं यह आग मच्छर को दूर रखने के लिये जलाता हूँ ताकि वह अपने चाकू जैसे दाँत मेरे कोमल शरीर में न घुसा सके। वह हमेशा ही मुझे अपने चाकू जैसे पैने दाँतों से धमकाता रहता है।"

जज बोला — "ओह अब मेरी समझ में आया कि जुगनू अपने साथ आग लिये क्यों घूमता है। वह मच्छर ही है जो जुगनू को अपने पैने दाँतों से धमकी देता है और उस धमकी की वजह से जुगनू को आग जला कर रखनी पड़ती है।

वह आग कछुए को डराती है तो उसको अपना घर अपने ऊपर ले कर घूमना पड़ता है। कछुए का हर समय घर को ले कर घूमना मेंढक को डराता है सो वह सारी रात चिल्लाता है और उसके चिल्लाने की वजह से चिड़िया सारी रात सो नहीं पाती। ठीक है मच्छर को मेरे पास भेजो।"

डरता डरता मच्छर आया। जज ने मच्छर से पूछा — "तुम अपने चाकू जैसे तेज़ दाँतों से जुगनू को क्यों डराते हो?"

मच्छर बेचारे के पास इस का कोई जवाब नहीं था। वह नहीं जानता था कि वह जुगनू को क्यों डराता था। सो जज ने मच्छर को सजा सुना दी कि उसको तीन दिन के लिये जेल भेज दिया जाये सो उसको तीन दिन के लिये जेल भेज दिया गया।

जेल में उन तीन दिनों के अन्दर मच्छर की आवाज जाती रही। उसके बाद मच्छर न तो कभी गा सका और न ही कभी भिनभिना ही सका जैसे उस मच्छर की बहिनें गातीं और भिनभिनातीं थीं।

और उसके बाद न ही वह किसी जानवर या आदमी को काट ही सका।

21 भिखारी और रोटी[42]

एक बार यूरोप के एक देश में बहुत ज़ोर से बर्फ पड़ रही थी और बहुत तेज़ ठंडी हवाऐं चल रही थीं। ऐसे मौसम में एक बूढ़ा आदमी एक गॉव में आया।

उसके शरीर पर पूरे कपड़े भी नहीं थे और वह ठंड से थर थर कॉप रहा था। वह हर घर के दरवाजे पर जा कर यह आवाज लगा रहा था — "कोई मेहरबान है जो इस भूखे और सर्दी से ठिठुरते भिखारी को कुछ खाने को दे दे?"

पर सभी दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियॉ बन्द थीं, कोई भी उस बूढ़े की पुकार नहीं सुन रहा था। चलते चलते अन्त में वह एक बहुत बड़े घर के सामने रुक गया और उस घर का दरवाजा खटखटा कर आवाज लगायी — "मेरे ऊपर दया करो, मैं ठंड से सिकुड़ रहा हूॅ और बहुत भूखा हूॅ।"

दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने झॉका। वह स्त्री खूब गर्म कपड़े पहने हुए थी। उसका रंग गुलाबी था तथा वह किसी बड़े घर की दिखायी देती थी। पर उसकी शक्ल से लगता था कि वह अच्छे स्वभाव की नहीं थी।

[42] The Beggar and the Bread – a folktale from Europe

वह उस बूढ़े को झिड़कती हुई सी बोली — "तुम्हें क्या चाहिये? मुझे बहुत काम है।"

बूढ़े ने कहा — "मेरे ऊपर दया करो, मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आयी तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने फिर बुरा सा मुँह बनाते हुए कहा — "तो क्या वह रोटी मैं तुम्हारे लिये बना रही हूँ? वे रोटियाँ तो केवल मेरे अपने घर के लिये ही काफी हैं इसलिये मैं वे तुम्हें नहीं दे सकती।" और यह कह कर वह दरवाजा बन्द कर के वहाँ से अन्दर चली गयी।

बूढ़ा कुछ पल तो वहाँ खड़ा रहा और फिर वह वहाँ से यह कहता हुआ चला गया — "मैं इस घर को याद रखूँगा।"

फिर वह यह कहता रास्ते पर चलने लगा — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ।" पर ठंड बहुत थी इसलिये सभी दरवाजे बन्द थे, सभी खिड़कियाँ बन्द थीं।

आखिर उसने एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुला और उसमें से एक स्त्री ने बाहर देखा। उसने फटे कपड़े पहने हुए थे और उसके पैर नंगे थे। लेकिन वह स्त्री बहुत दयालु लग रही थी।

जैसे ही उसने एक बूढ़े आदमी को ठंड से सिकुड़ते हुए देखा तो बोली — "ओह, तुम इस समय बाहर कैसे? आओ आओ, अन्दर

घर में आ जाओ और रसोई में बैठ कर थोड़े गर्म हो लो। बाहर तो बहुत ठंडा है।"

उसने उस अजनबी का हाथ पकड़ा और सहारा दे कर उसे रसोईघर में ले गयी। वहीं उसके तीन बच्चे रात का खाना खाने के लिये मेज पर बैठे हुए थे।

उसने बच्चों से कहा — "बच्चों, अजनबी को बैठने के लिये एक कुर्सी दो।" उसके तीनों बच्चे तुरन्त उठे और एक कुर्सी ला कर आग के पास रख दी।

वह बूढ़ा आदमी उस कुर्सी पर बैठ गया और अपने हाथ पॉव गर्म करने लगा। फिर बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। मुझे रोटी की खुशबू आई तो मैं इधर चला आया।"

स्त्री ने एक लम्बी सॉस ले कर कहा — "अफसोस, मेरे पास यही एक रोटी है। अगर यह रोटी खत्म हो गयी तो हमारे घर में और कुछ खाने को नहीं है।"

बूढ़े आदमी ने फिर कहा — "मैं बहुत भूखा हूँ। मैंने कल रात भी खाना नहीं खाया और न सुबह नाश्ता किया।"

वह स्त्री ज़ोर से अपने बच्चों से बोली — "बच्चों, सुन रहे हो। यह बूढ़ा हमसे भी ज़्यादा भूखा है। हम लोगों ने कम से कम एक रोटी का एक टुकड़ा तो नाश्ते में खाया था परन्तु इस बेचारे ने तो कल रात से कुछ भी नहीं खाया। क्या मैं इसको यह रोटी दे दूँ?"

माँ की यह बात सुन कर बच्चों की आँखों में आँसू आ गये क्योंकि उन्होंने भी नाश्ते के बाद से कुछ नहीं खाया था और इस रोटी को इस अजनबी को देने बाद तो फिर उनके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचेगा।

परन्तु तीनों बच्चों ने एक साथ कहा — "माँ, इनको यह रोटी मिलनी ही चाहिये। ये हमसे ज़्यादा भूखे हैं।"

माँ ने वह रोटी एक तश्तरी में रखी और अजनबी के सामने रख दी। अजनबी बहुत भूखा था सो उसने वह रोटी तुरन्त ही खा ली। फिर उसने अपना फटा कोट अपने शरीर के चारों ओर कस कर लपेटा और बोला — "मैं इस घर को याद रखूँगा। आपने मेरी इस बुरे समय में बहुत सहायता की है मैं किस प्रकार आपकी सहायता करूँ?"

उस स्त्री ने जवाब दिया — "मेरे लिये आप भगवान से प्रार्थना करें कि मुझे कल कहीं काम मिल जाये क्योंकि जब तक मुझे कहीं काम नहीं मिलेगा मेरे बच्चों को रोटी नहीं मिलेगी।"

उस बूढ़े ने कहा — "मैं अभी आपके लिये प्रार्थना करता हूँ कि आप कल सुबह जो भी काम शुरू करेंगी वह सारे दिन चलता रहेगा।" इतना कह कर वह बूढ़ा उठा और दरवाजा खोल कर बाहर चला गया।

अगली सुबह तीनों बच्चे जल्दी उठ गये और खाने के लिये कुछ माँगने लगे। उस स्त्री ने एक आह भरी और बोली — "मेरे

प्यारे बच्चों, तुम्हें मालूम है कि घर में जो कुछ भी था वह सब कल रात मैंने उस अजनबी को दे दिया था अब तो घर में कुछ भी नहीं है।

पर हॉ, मेरी टोकरी में एक लाल रंग का कपड़ा पड़ा है। तुम वह ले आओ। उसे बेच कर मैं कुछ खाना खरीद कर लाती हूॅ।"

तीनों बच्चे एक साथ बोले — "पर वह तो आपके नये कोट का कपड़ा है और आपके लिये इस ठंड में कोट बहुत जरूरी है।"

मॉ बोली — "कोई बात नहीं बच्चों, तुम चिन्ता न करो अभी तो तुम लोग नापने के लिये गज ले आओ ताकि यह पता चल सके कि वह है कितना।"

एक बच्चा उठा और कपड़ा और गज दोनों ले आया और उस स्त्री ने उस कपड़े को नापना शुरू किया।

"एक गज, दो गज, तीन गज, चार गज, यह क्या? यह कपड़ा तो खत्म होने पर ही नहीं आ रहा और मुझे अच्छी तरह याद है कि यह कपड़ा तीन गज से ज़्यादा नहीं था। अभी कितना और है?

पॉच, छह, सात, आठ गज। यह क्या हो रहा है? नौ, दस, ग्यारह, बारह गज। हे भगवान, हम पर दया करो, यह कपड़ा तो खत्म ही नहीं हो रहा। तेरह गज, चौदह गज... ।"

ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कपड़ा अनगिनत गज लम्बा हो गया हो और खत्म होने पर ही न आ रहा हो। उसने सुबह यह काम शुरू किया था और दोपहर तक उसका वह छोटा सा कमरा उस लाल कपड़े के ढेर से भर गया।

बच्चे खुशी से बाहर भागे और पड़ोसियों को खबर दी। पड़ोसी भी इस जादू को देखने आये और कपड़े के ढेर को देख कर आश्चर्य से बोले — "तुम्हें इतना कपड़ा कहाँ से मिला?"

स्त्री ने कोई जवाब नहीं दिया और उसके हाथ कपड़ा नापते रहे और नापते रहे। और यह काम सूरज डूबने तक चलता रहा और चलता रहा। उस समय तक उसकी छोटी सी झोंपड़ी उस खूबसूरत लाल कपड़े से भरी पड़ी थी।

अब वे लोग गरीब नहीं रहे। उस लाल कपड़े को बेच कर उन्होंने बहुत धन कमाया।

ऐसी बातें छिपी नहीं रहतीं। यह खबर उस बुरे स्वभाव वाली स्त्री के पास भी पहुँची जिसने उस बूढ़े को उस रात दुतकार कर भगा दिया था।

उसने सोचा — "ओह, लगता है वह बूढ़ा आदमी कोई जादूगर था। अगर मैं उसे उस दिन न भगा देती तो वह मुझसे भी यही कहता कि कल सुबह तुम जो काम भी शुरू करोगी वह सारा दिन चलता रहेगा।

अगर अबकी बार वह इधर आया तो मैं उसे जितनी रोटी की जरूरत होगी उतनी दे दूँगी और फिर मैं देखती हूँ कि गॉव में सबसे अधिक धनी कौन होता है।"

अब उसके दरवाजे और खिड़कियॉ हमेशा खुली रहतीं और वह भी सड़क पर हर आने जाने वाले पर नजर रखती। ठंड अभी भी बहुत थी पर धन के लोभ में वह अब अपने घर के दरवाजे खिड़कियॉ बन्द ही नहीं करती थी।

आखिरकार एक शाम उसको उस बूढ़े की आवाज सुनायी दी — "कोई दयालु है जो मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे और सरदी से ठिठुरते भिखारी को खाना दे।"

वह स्त्री तो इस ताक में ही बैठी थी कि कब वह भिखारी आये और कब वह उसको खाना खिलाये।

सो जैसे ही उसने उस भिखारी की आवाज सुनी उसने तुरन्त ही उसको बुलाया और कहा — "आओ आओ, अन्दर आ जाओ। इसे अपना ही घर समझो। यह लो इस कुर्सी पर बैठो और एक प्याला चाय पी कर थोड़ा गर्म हो लो। बोलो मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

वह बूढ़ा कुर्सी पर बैठ गया और चाय पीता हुआ बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ रोटी की खुशबू आयी तो इधर चला आया।"

"अरे तुम भूखे हो? यह लो रोटी, सब्जी, दाल, चटनी आदि और जितना चाहे उतना खाओ। चाहे मैं भूखी रह जाऊँ परन्तु मैं तुम्हें रोटी जरूर खिलाऊँगी।"

उस रात बूढ़े ने बहुत अच्छा खाना खाया। खाना खा कर वह बोला — "बहुत बहुत धन्यवाद। मैं इस घर को याद रखूँगा।"

स्त्री ने उत्सुकता से कहा — "और क्या?"

बूढ़ा मुस्कुरा कर बोला — "मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो भी काम तुम कल सुबह शुरू करो वह सारा दिन चले।" यह कह कर वह बूढ़ा चला गया।

जब वह बूढ़ा चला गया तो वह स्त्री खुशी से चीख़ पड़ी — "ओह, अब मैं क्या करूँ? हाँ, मैं कल सुबह से पैसे गिनना शुरू करती हूँ ताकि मेरा वह काम शाम तक चलता रहे।

पर मैं इतने सारे पैसे रखूँगी कहाँ? मुझे उनको रखने के लिये पहले से ही कुछ थैले बना लेने चाहिये। मैं कुछ कपड़ा काट लूँ, रात भर में मैं उस कपड़े से कुछ थैले सिल लूँगी, और सुबह तक वे मेरे पैसे रखने के लिये तैयार हो जायेंगे।"

उसने एक कैंची ली और कुछ कपड़ा पास में रख लिया और थैले बनाने लगी। वह रात भर इसी काम में लगी रही। उसको पता ही नहीं चला कि कब सुबह हो गयी।

एकाएक उसको लगा कि उसकी कैंची तो रुक ही नहीं रही थी। वह उसे रख भी नहीं पा रही थी बल्कि एक प्रकार से कैंची उसके हाथ से कह रही थी कि मुझे चलाओ।

यह महसूस होते ही वह घबरा गयी — "ओह, यह क्या हो रहा है? यह तो मेजपोश कटा जा रहा है। कैंची, रुक जाओ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी वह तो बस कपड़ा काटती ही जा रही थी, काटती ही जा रही थी।

वह स्त्री घबराहट में चिल्लायी — "ओ कैंची, रुक जाओ। अरे, मेरी कुर्सी की गद्दियॉ परदे चादर सभी कट गये हैं। अरे कालीन भी, तकिये के गिलाफ भी। हे भगवान, अब मैं क्या करूँ।"

पर कैंची थी कि रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और घर में जो कुछ भी था वह सब काटती जा रही थी। इतने में ऊपर से उसका पति आया तो कैंची ने उसका कोट भी काटना शुरू कर दिया।

वह अपनी पत्नी पर चिल्लाया — "यह सब तुम क्या कर रही हो? यह मेरा कोट क्यों काट रही हो? रखो कैंची नीचे।"

स्त्री रोती सी बोली — "मैं नहीं रख सकती।"

खच खच खच, अब कैंची उसके पति की कमीज काट रही थी, फिर मोजे, फिर जूते। सुबह, दोपहर, शाम कैंची चलती रही

और चलती रही और जब तक चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। और घर में जब सब कुछ कट गया तब कहीं जा कर वह कैंची रुकी।

दूर कहीं से उस स्त्री ने आवाज सुनी कोई बूढ़ा आवाज लगा रहा था — "कोई दयालु मेरे ऊपर दया करे, इस भूखे को खाना दे, मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ।"

यह था लालच का नतीजा।

23 पादरी की आत्मा[43]

पुराने समय में आयरलैंड में बड़े बड़े स्कूल थे जहॉ लोगों को हर तरीके की शिक्षा दी जाती थी और उस समय के वहॉ के गरीब से गरीब लोग भी आज के अच्छे पढ़े लिखे आदमियों से ज़्यादा जानते थे।

ऐसे ही समय में एक बच्चा अपनी होशियारी से सबको चकित किये दे रहा था। उसके गरीब माता पिता मेहनत मजदूरी कर के अपना और अपने बच्चों का पेट पालते थे।

पर यह बच्चा पैसे से जितना गरीब था ज्ञान का उतना ही अमीर था। राजाओं और महाराजाओं के बच्चे भी उससे ज्ञान में आगे नहीं थे।

कई बार वह अपने मास्टरों को भी नीचा दिखा देता था क्योंकि वे जब भी कोई चीज़ सिखाने की कोशिश करते वह उनको कुछ ऐसी बात बता देता जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी होती।

उसकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वह बहस में बहुत होशियार था। वह पहले काले को सफेद साबित करता और फिर जब दूसरे को इस बात का विश्वास हो जाता कि हॉ यह तो सफेद ही है तो फिर अपनी होशियारी से उसी सफेद को काला साबित कर देता था।

[43] Spirit of a Priest – a folktale from Ireland, Europe

जब वह बच्चा बड़ा हो गया तो उसके माता पिता उससे बहुत खुश रहते थे। उन्होंने सोच लिया कि वे उसको पादरी बनायेंगे और उन्होंने एक दिन उसको पादरी बना दिया। क्योंकि इतना अक्लमन्द आदमी उस समय पूरे आयरलैंड में कोई नहीं था इसलिये कोई उसका मुकाबला भी नहीं कर सकता था।

अगर कोई बिशप[44] भी उससे बात करने की कोशिश करता तो उसे तुरन्त ही पता चल जाता कि वह तो उसके आगे कुछ भी नहीं जानता।

उस समय में आजकल की तरह के स्कूल और मास्टर नहीं हुआ करते थे। चर्च के पादरी लोग ही लोगों को पढ़ाया करते थे और क्योंकि यह पादरी उस समय का सबसे अक्लमन्द पादरी था इसलिये बहुत सारे देशों के राजा अपने अपने बेटों को इस पादरी के पास पढ़ने के लिये भेजते थे।

धीरे धीरे इस पादरी में घमंड आने लगा और वह यह भी भूल गया कि वह क्या था और किसकी मेहरबानियों से आज इस जगह पहुँचा था। उसके अन्दर बहस करने की चतुरता का घमंड घर करता चला गया।

[44] Bishop – a high status man in Church

वह यह साबित करता चला गया कि न तो कहीं स्वर्ग है और न ही कहीं नरक है, न कहीं आत्मा है और न ही कहीं परगेटरी[45] ही है। यहाँ तक कि कहीं भगवान भी नहीं है।

वह हमेशा यह कहा करता था — "आत्मा को किसने देखा है? अगर तुम मुझे एक भी आत्मा दिखा दो तो मैं विश्वास कर लूँगा कि आत्मा है।"

लेकिन उस जैसे होशियार आदमी को यह कौन समझाता कि आत्मा को देखा नहीं जा सकता? और फिर सारे लोग यही मानने लग गये।

उसने शादी भी की पर उसकी शादी कराने वाला दुनियाँ भर में कोई पादरी ही नहीं मिला तो शादी की सब रस्में उसे खुद ही पूरी करनी पड़ीं।

लोग आपस में तरह तरह की बातें करते पर ऊपर से कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सब राजाओं के लड़के उसी से पढ़ते थे और सब उसी का पढ़ाया बोलते थे।

वे सब तो उसी के चेले थे और उसी की बातों में विश्वास करते थे। वे सोचते थे कि वह जो कुछ कहता था ठीक ही कहता था। इस तरह दुनियाँ में बुराई फैलती जा रही थी।

[45] Purgatory - According to Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for heaven "undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of heaven.

कि एक रात स्वर्ग से एक देवदूत[46] आया और पादरी से बोला कि "तुम्हारी ज़िन्दगी अब केवल चौबीस घंटों की ही और है।"

पादरी यह सुन कर कॉप गया और उसने देवदूत से उसे इस धरती पर रहने के लिये कुछ और ज़्यादा समय देने की प्रार्थना की परन्तु देवदूत अपनी बात का पक्का था इसलिये पादरी को उससे ज़्यादा समय नहीं मिल पाया।

फिर भी उस देवदूत ने उससे पूछा — "तुम जैसे पापी को और ज़्यादा समय क्यों चाहिये?"

पादरी ने दीनता भरी आवाज में कहा — "देवदूत, मुझ पर रहम करो, मुझ पर दया करो, मेरी आत्मा पर तरस खाओ।"

देवदूत ने मुस्कुरा कर पूछा — "तो तुम्हारी आत्मा भी है? परन्तु इस बात का तुमको पता कैसे चला कि तुम्हारी आत्मा भी है?"

पादरी बोला — "जबसे तुम मेरे सामने आये हो तभी से यह मेरे शरीर के अन्दर फड़फड़ा रही है। मैं भी कितना बेवकूफ था कि मुझे इसका पहले पता ही नहीं चला।"

"तुम सचमुच में बेवकूफ हो। तुम्हारे पढ़ने लिखने का क्या फायदा अगर तुम यही पता न चला सके कि तुम्हारी एक आत्मा भी है।" देवदूत बोला।

[46] Translated for the word "Angel"

पादरी बोला — "ओह मेरे भगवान, अच्छा यह बताओ मरने के कितनी देर बाद मैं स्वर्ग पहुँच जाऊँगा?"

देवदूत हँस कर बोला — "तुम स्वर्ग कभी नहीं पहुँचोगे क्योंकि तुम तो स्वर्ग को मानते ही नहीं।"

पादरी बोला — "क्या मैं परगेटरी जा सकता हूँ?"

देवदूत बोला — "पर तुम तो परगेटरी को भी नहीं मानते। तुम तो सीधे नरक जाओगे।"

अबकी बार पादरी के हँसने की बारी थी। वह बोला — "पर मैं तो नरक को भी नहीं मानता इसलिये तुम मुझे वहाँ भी नहीं भेज सकते।"

यह सुन कर देवदूत कुछ परेशान सा हुआ और बोला — "मैं बताता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ। तुम चाहो तो अभी धरती पर सौ साल तक रह सकते हो और सभी खुशियों को भोग सकते हो, या फिर चौबीस घंटों के बाद तकलीफ के साथ मर सकते हो।

मैं तुमको परगेटरी ले जाऊँगा फैसले के दिन[47] तक का इन्तजार करने के लिये। पर इस बीच अगर तुमको कोई ऐसा आदमी मिल जाता है जो भगवान में विश्वास करता हो, स्वर्ग नरक में विश्वास

[47] Translated for the words "The Day of Judgment". In Christianity it is believed that there will be a Day of Judgment also called "The Judgment Day", or "Final Judgment", or "The Day of the Lord" etc is the day in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

रखता हो, तो तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ सुधर सकती है।" यह कह कर वह देवदूत वहाँ से गायब हो गया।

पादरी को निश्चय करने में पाँच मिनट भी नहीं लगे। उसने सोच लिया था कि उसे क्या करना था। चौबीस घंटे तो बहुत होते थे उसके लिये वह करने के लिये जो देवदूत ने उसको बताया था।

वह तुरन्त ही एक बहुत बड़े कमरे में पहुँचा जहाँ उसके बहुत सारे चेले और राजाओं के लड़के बैठे थे। उसने उनसे कहा कि तुम सब लोग सब सच बोलना। तुम लोग मेरे खिलाफ बोल रहे हो इस बात से ज़रा भी नहीं डरना। यह बताओ कि तुम्हारा क्या विश्वास है कि आदमी के आत्मा होती है क्या?

वे बोले — "मास्टर जी, पहले तो हम लोग मानते थे कि आदमी के अन्दर आत्मा होती है परन्तु अब जबसे हमने आपसे पढ़ा है कि कहीं कोई आत्मा नहीं है तबसे हम इसमें विश्वास नहीं करते। अब तो कहीं कोई स्वर्ग नहीं है, कहीं कोई नरक नहीं है और कहीं कोई भगवान भी नहीं है, यही आपने हमें सिखाया है।"

पादरी डर के मारे पीला पड़ गया और ज़ोर से बोला — "देखो, मैंने तुम लोगों को जो कुछ भी सिखाया था वह गलत था। भगवान है और एक अमर आत्मा भी है। पहले मैं जिनमें विश्वास नहीं करता था आज उनको मैं मानता हूँ।"

वहाँ बैठे सभी लोग ज़ोर ज़ोर से हँस पड़े क्योंकि वे समझे कि उनका मास्टर उनको बहस करने के लिये उकसा रहा है। सो वे भी ज़ोर से चिल्लाये — "साबित कीजिये, साबित कीजिये। भगवान को किसने देखा है और आत्मा को भी किसने देखा है?" और कमरा एक बार फिर ठहाकों से भर गया।

पादरी कुछ कहने के लिये उठा और उसने कुछ कहा भी पर सब कुछ उन ठहाकों के शोर में दब कर रह गया। वह चिल्लाता रहा — "भगवान है, आत्मा भी है, स्वर्ग भी है और नरक भी है।" परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी।

उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी उसका विश्वास कर लेगी परन्तु उसने कहा कि वह भी उसी की सिखायी हुई बातों को मानती है। और ऐसा एक पत्नी को करना भी चाहिये क्योंकि पति पत्नी के लिये भगवान से भी ऊँचा होता है।

इसको सुन कर तो वह बहुत निराश हो गया और घर घर जा कर पूछने लगा कि क्या वे भगवान में विश्वास करते थे। पर सबसे उसको एक ही जवाब मिला "हम तो उसी में विश्वास करते हैं जो आपने हमें सिखाया है।"

अब तो पादरी डर के मारे बिल्कुल पागल सा हो गया क्योंकि समय बीतता जा रहा था और उसको कोई एक भी आदमी भगवान में विश्वास करने वाला नहीं मिल रहा था।

वह अकेला ही एक कमरे में जा कर बैठ गया और रोने लगा। कभी कभी डर के मारे वह चिल्ला पड़ता क्योंकि उसके मरने का समय पास आता जा रहा था।

इतने में एक बच्चा आया और बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

बच्चे के ये शब्द सुनते ही पादरी में जान आ गयी। उसने तुरन्त बच्चे को गोद में उठा लिया और उतावली से उससे पूछा — "बेटा क्या तुम भगवान को मानते हो?"

बच्चा बोला — "मैं यहाँ उसी के बारे में जानने के लिये तो आया हूँ। क्या आप मुझे यहाँ का सबसे अच्छा स्कूल बतायेंगे?"

पादरी बोला — "सबसे अच्छा स्कूल और सबसे अच्छा मास्टर तो तुम्हारे पास ही है बेटा।" यह कह कर उसने उसको अपना नाम बता दिया।

बच्चा बोला — "नहीं नहीं, मैं इस आदमी के पास नहीं जाना चाहता क्योंकि मैंने सुना है कि वह भगवान को नहीं मानता, स्वर्ग और नरक को नहीं मानता। यहाँ तक कि अपने शरीर में रह रही आत्मा को भी वह नहीं मानता क्योंकि वह उसको देख नहीं सकता। परन्तु मैं उसको बहुत जल्दी नीचा दिखा दूँगा।"

पादरी को उस बच्चे की बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे रहा न गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "तुम उसको कैसे नीचा दिखाओगे बेटा?"

बच्चा बोला — "यह तो बड़ा आसान है। मैं उससे कहूँगा कि अगर तुम ज़िन्दा हो तो तुम अपना ज़िन्दा रहना साबित करो।"

पादरी बोला — "पर बेटे वह ऐसा कैसे कर सकता है? क्योंकि सभी जानते हैं कि वे ज़िन्दा हैं पर वे उसे दिखा तो नहीं सकते क्योंकि उसको देखा नहीं जा सकता।"

इस पर बच्चा बोला — "सो अगर हमारे अन्दर ज़िन्दगी है और हम उसे केवल इसलिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह छिपी हुई है तो हमारे अन्दर आत्मा भी तो हो सकती है जो हमारे अन्दर इसी तरह छिपी हुई हो।"

पादरी ने जब उस बच्चे के मुँह से ऐसे शब्द सुने तो उसने उसके सामने अपने घुटने टेक दिये और रो पड़ा क्योंकि अब उसे विश्वास हो गया था कि उसकी आत्मा अब सुरक्षित है।

कम से कम एक आदमी तो उसको भगवान में विश्वास रखने वाला मिला और उसने उस बच्चे को शुरू से ले कर आखीर तक की अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर बोला — "लो बेटे यह चाकू लो और इससे मेरी छाती को गोद दो और गोदते रहो जब तक तुम्हें मेरे चेहरे पर मौत का पीलापन नजर न आ जाये। फिर ध्यान से देखना जब मैं मरूँगा तो मेरे शरीर से एक ज़िन्दा चीज़ निकलेगी। उससे तुमको पता चल जायेगा कि मेरी आत्मा भगवान के पास पहुँच गयी है।

और जब तुम यह देखो तो तुम तुरन्त भाग कर मेरे स्कूल जाना और मेरे सभी चेलों को यह देखने के लिये बुला लाना। उनको बताना कि जो कुछ भी मैंने उनको ज़िन्दगी भर सिखाया वह सब गलत था क्योंकि कहीं भगवान है जो पापों की सजा देता है। स्वर्ग भी है और नरक भी है और हर आदमी के पास एक अमर आत्मा भी है।"

बच्चा बोला —"मैं कोशिश करूँगा।" कह कर वह बच्चा घुटनों के बल बैठ गया। पहले उसने प्रार्थना की फिर चाकू उठाया और पादरी की छाती में मारा और तब तक मारता रहा जब तक उसकी छाती का मॉस चिथड़े चिथड़े नहीं हो गया।

परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी पादरी मरा नहीं। हालॉकि उसको दर्द बहुत था पर चौबीस घंटे पूरे होने से पहले वह नहीं मरा। आखिर उसके चेहरे पर मौत का पीलापन झलकने लगा।

उसी समय बच्चे ने देखा कि एक छोटी सी कोई ज़िन्दा चीज़, चार सफेद पंखों वाली, पादरी के शरीर से निकली और उसके सिर पर मॅडराने लगी।

वह तुरन्त उसके शिष्यों को उनके मास्टर की आत्मा दिखाने के लिये बुला लाया। उन्होंने भी उसको तब तक देखा जब तक वह उड़ कर बादलों के उस पार नहीं चली गयी।

आयरलैंड की यह सबसे पहली तितली थी और आज वहॉ सब यह जानते हैं कि तितलियों में मरे हुए लोगों की आत्मा होती है और

उस रूप में दर्द सहती हुई शान्ति पाने के लिये परगेटरी में घुसने का इन्तजार करती रहती हैं।

24 यह सच है[48]

यह कहानी बताती है कि कोई एक छोटी सी बात किस तरह एक मुँह से दूसरे मुँह तक और दूसरे मुँह से तीसरे मुँह तक पहुँचते पहुँचते अन्त में क्या बन जाती है।

यह यूरोप महाद्वीप के डेनमार्क देश की बात है कि एक बार एक मुर्गी वहाँ रात को शहर के एक घर में बैठी थी।

सोने का समय हो रहा था। वह बोली — "यह मुर्गीखाने की एक बड़ी भयानक कहानी है। जब मुझे उस कहानी की याद आती है तो मैं इतना डर जाती हूँ कि मैं रात को अकेली नहीं सो सकती। यह बड़ी अच्छी बात है कि इस समय यहाँ पर हम बहुत सारी मुर्गियाँ हैं।"

और उसने अपनी साथिन मुर्गियों को एक कहानी सुनायी जिसको सुन कर उनके भी पंख खड़े हो गये और मुर्गों की कलगियाँ नीचे को झुक गयीं। और यह कहानी नहीं बल्कि सच्ची घटना है।

उसने कहना शुरू किया — "लेकिन हम यह कहानी शुरू से ही कहना शुरू करेंगे। यह सब एक ऐसी जगह शुरू हुआ जो यहाँ से कुछ दूरी पर है और शहर के दूसरे हिस्से में है। वहाँ बहुत सारे मुर्गे मुर्गियाँ रहते थे।

---

[48] It is Quite True - folktale from Denmark, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/European_folktales/European_folktale_9.html

सूरज डूब चुका था और सारे मुर्गे मुर्गियॉ अपनी अपनी जगह पर सोने के लिये पंख फड़फड़ा रहे थे। वहॉ एक ऐसी मुर्गी भी थी जिसके पंख बिल्कुल सफेद थे। उसकी टॉगें बहुत छोटी थीं। वह बराबर अंडे देती थी और वहॉ की सब मुर्गियों में सबसे ज़्यादा इज़्ज़तदार मुर्गी समझी जाती थी।

जैसे ही वह अपने सोने की जगह पर कूदी कि उसने अपनी चोंच अपने पंखों में मारी और उसका एक छोटा सा पर नीचे गिर पड़ा।

वह उसको देख कर बोली — "जितना ज़्यादा मैं अपने पंखों में अपनी चोंच मारूॅगी और पर गिराऊॅगी मैं उतनी ही ज़्यादा सुन्दर लगूॅगी।" और यह उसने हॅसते हुए कहा।

अब क्योंकि वह सारी बतखों में सबसे ज़्यादा हॅसी मजाक करती थी इसलिये किसी ने उसकी इस बात पर ध्यान नहीं दिया और वह सोने चली गयी।

रात हो चुकी थी और सब मुर्गे मुर्गियॉ अपनी अपनी जगह पर बराबर बराबर सोये हुए थे। पर एक मुर्गी जो उस सफेद मुर्गी के बराबर में बैठी थी उसकी ऑखों में नींद नहीं थी। उसने उस सफेद मुर्गी की बात कुछ सुनी कुछ नहीं सुनी।

वैसे तो ऐसा ही होता है कि जिसको जो करना होता है वह वह करता है और जो नहीं करना चाहता वह वह नहीं करना चाहता पर वह यह बात अपनी पड़ोसन से कहे बिना नहीं रह सकी।

वह अपनी पड़ोसन से बोली — "क्या तुमने सुना कि यहॉ अभी किसी ने क्या कहा? मैं किसी का नाम नहीं लेती पर यहॉ एक मुर्गी है जो सुन्दर दिखायी देने को लिये अपने पर नोचना चाहती है। मैं अगर मुर्गा होती तो मैं उसको जरूर ही उसको बुरा कहती।"

जब यह मुर्गी यह सब कह रही थी तो एक माता उल्लू अपने पति और बच्चों के साथ वहीं बैठी थी। उन सबके कान बहुत तेज़ थे। सो उन सबने अपनी पड़ोसन के वे सारे शब्द सुने जो उनकी पड़ोसन ने कहे थे।

उन सबने अपनी ऑखें चारों तरफ गोल गोल घुमायीं और माता उल्लू अपने पंख फड़फड़ा कर बोली — "उसकी बात मत सुनो। पर मुझे लगता है कि तुम सबने उसकी बात पहले ही सुन ली है कि उसने क्या कहा था। मैंने भी उसकी सारी बात अपने कानों से सुनी है। सबको सब कुछ सुनना भी चाहिये।

इन मुर्गियों में से एक मुर्गी ऐसी है जो यह भूल गयी है कि एक मुर्गी का बरताव क्या होना चाहिये। कितनी खराब बात है कि वह अपने पंख एक एक कर के मुर्गे के सामने ही निकाल रही है।"

पिता उल्लू ने माता उल्लू को डॉटा — "यह सब तुम क्या कह रही हो? यह क्या कोई बच्चों से करने की बात है?"

"मैं जा कर अपनी पड़ोसन मादा उल्लू को बताऊॅगी। वह बहुत अच्छी है वह मेरी बात सुनेगी।" और वह पड़ोसन मादा उल्लू को यह सब बताने के लिये उड़ गयी।

वहाँ जा कर उसने यह कहानी मादा उल्लू को बतायी और फिर वे दोनों फाख्ताओं के घर की तरफ उड़ गयीं और वहाँ जा कर बोलीं — "क्या तुमने सुना? क्या तुमने सुना? एक मुर्गी है जिसने एक मुर्गे के लिये अपने पंख नोच दिये हैं। अगर वह अभी तक नहीं मरी है तो अब वह ठंड में जरूर मर जायेगी।"

पास में बैठे कबूतरों ने सुना तो वे बोले — "क्या? क्या? कहाँ, कहाँ?"

"अरे यहीं। पास वाले मुर्गीखाने में। मैंने उसको अपनी आँखों से देखा है। सारी कहानी तो बार बार नहीं दोहरायी जा सकती पर है यह बिल्कुल सच।"

कबूतरों ने अपने कबूतरखाने में जा कर कहा — "विश्वास करो, विश्वास करो। तुम लोग हमारा विश्वास करो। यह कहानी नहीं है सच है कि एक मुर्गी है। पर कुछ का कहना है कि एक नहीं दो मुर्गियाँ हैं जिन्होंने अपने सारे पंख नोच कर फेंक दिये हैं और इसी लिये वे अब दूसरी मुर्गियों की तरह दिखायी नहीं देतीं।

ऐसा उन्होंने इसलिये किया है ताकि वे मुर्गों का ध्यान अपनी तरफ खींच सकें। ऐसा करना बड़ा खतरनाक काम है क्योंकि ऐसा करने से किसी को ठंड लग सकती है, कोई बुखार से मर सकता हैं। और इसी लिये वे दोनों मर गयीं।"

मुर्गा चिल्लाया — "जागो जागो।" और वह एक तख्ते पर जा कर बैठ गया।

उसकी आखें अभी भी नींद से झुकी जा रहीं थीं फिर भी वह खूब ज़ोर से चिल्लाया — "तीन मुर्गियॉ दिल टूटने की वजह से मर गयीं। उन्होंने अपने सारे पर नोच कर फेंक दिये थे। यह बड़ी भयानक कहानी है। मेहरबानी कर के यह बात औरों को भी बता दो।"

चिमगादड़ चिल्लाये — "इस कहानी को औरों को भी बता दो।"

मुर्गे और बतखें चिल्लाये — "इस कहानी को औरों को भी बता दो।"

इस तरह यह कहानी एक मुर्गीखाने से शुरू हो कर दूसरे मुर्गीखाने और कबूतरखाने तक होती हुई फिर वहीं आ पहुॅची जहॉ से वह शुरू हुई थी।

और उस मुर्गीखाने में मुर्गियों ने सुना — "ऐसा कहा जाता है कि पॉच मुर्गियों ने अपने पंख केवल इसलिये नोच डाले ताकि वे दिखा सकें कि उनमें से कौन सबसे पतला था और फिर उन्होंने आपस में एक दूसरे को चोंच मार मार कर मार डाला।

इस तरह उन्होंने अपने अपने परिवारों को बहुत बदनाम किया और साथ में अपने मालिकों का भी नुकसान किया।

और वह मुर्गी जिसने अपना केवल एक ही छोटा सा पंख गिराया था, अपनी कहानी तो भूल गयी और एक इज़्ज़तदार मुर्गी होने के नाते बोली — "मुझे उन मुर्गियों से सख्त नफरत है जिन्होंने

इस तरह अपने पंख नोच कर फेंक दिये हालॉकि ऐसी और भी बहुत सारी मुर्गियॉ होंगी जो ऐसा करती होंगी।

किसी को भी इस तरह की चीज़ों को बढ़ावा नहीं देना चाहिये। मैं इसके लिये जो कुछ भी मुझसे हो सकता है वह करने की कोशिश करूॅगी। मैं इस कहानी को अखबार में छपवाऊॅगी ताकि यह सारे देश में पहुॅचे। इससे दूसरी मुर्गियों और उनके परिवारों को सीख मिलेगी।"

फिर यह कहानी अखबार वालों को दे दी गयी। अखबार वालों ने इसे अखबार में छापा। और यह कहानी सच है कि एक मुर्गी का छोटा सा पंख गिरना किस तरह पॉच मुर्गियों की मौत में बदल गया।

25 मरजोरम का बर्तन[49]

हॅसी की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक दवा बेचने वाला[50] था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बहुत ही सुन्दर सी बेटी थी जिसका नाम था स्टैला डायना[51]।

स्टैला सिलाई सीखने के लिये रोज एक दरजिन के पास जाया करती थी। उस दरजिन की छत पर बहुत सारे फूलों के पौधों के गमले रखे थे। स्टैला को उन पौधों में से एक मरजोरम[52] का पौधा बहुत अच्छा लगता था सो वह हर शाम को उस पौधे को पानी देने जाती थी।

एक शाम जब वह उस पौधे को पानी दे रही थी तो उसने देखा कि उस छत के सामने की तरफ के छज्जे पर एक कुलीन नौजवान खड़ा खड़ा उसकी तरफ देखे जा रहा था।

एक दिन वह बोला — "स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियॉ हैं?"

---

[49] The Pot of Marjoram – a folktale from Italy from its Milan area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of the most stories of this book is available from hindifolktales@gmail.com as e-book free of charge.

[50] Translated for the word "Apothecary" – he is who is a druggist or a chemist

[51] Stella Diana – the name of the girl

[52] Marjoram is a kind of herb like Ajavaayan (Oregano in Italian) of our Indian cooking

लड़की बोली — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान बोला — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

एक दिन उस नौजवान ने एक मछली बेचने वाले का रूप रखा और उस दरजिन की खिड़की के नीचे मछली बेचने के लिये चला गया।

मछली बेचने वाले की आवाज सुन कर दरजिन ने स्टैला को शाम के खाने के लिये मछली खरीदने के लिये भेजा। लड़की ने एक मछली उठायी और मछली बेचने वाले से पूछा कि वह मछली कितने की है।

नौजवान ने उसकी कीमत बतायी तो वह इतनी ज़्यादा थी कि उसने कहा कि वह वह मछली नहीं खरीदेगी। इस पर वह नौजवान बोला — "अच्छा अगर तुम मुझे एक चुम्बन दोगी तो मैं तुमको यह मछली बिना किसी दाम के दे दूँगा।"

स्टैला ने उसको जल्दी से उसे एक बार चूमा और उसने स्टैला को वह मछली उसकी दरजिन के शाम के खाने के लिये बिना कुछ लिये ही दे दी।

शाम को जब स्टैला छत पर फिर से उन पौधों के बीच में दिखायी दी तो उस नौजवान ने फिर से उससे कहा — "स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियॉ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

तब उस कुलीन नौजवान ने कहा — "एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

अब स्टैला को लगा कि उस नौजवान ने तो उसको बेवकूफ बनाया है तो वह तुरन्त ही वहॉ से हट कर नीचे उस नौजवान को बेवकूफ बनाने के लिये चली गयी।

वहॉ से वह एक आदमी की पोशाक पहन कर निकली। उसने अपनी कमर में एक पेटी भी पहनी। उसकी कमर की पेटी में बहुत सारे सुन्दर जवाहरात जड़े थे। वह एक खच्चर पर चढ़ी और उस नौजवान के सामने गली में चक्कर काटने लगी।

उस नौजवान ने उसकी कमर की पेटी देखी तो बोला — "कितनी सुन्दर पेटी है क्या तुम इसे मुझे बेचोगे?"

आदमी की आवाज की नकल बनाते हुए वह बोली कि वह उस पेटी को उसे बिना कुछ लिये ही दे देगी। वह नौजवान बोला कि वह उस पेटी को लेने के लिये कुछ भी करने को तैयार है।

वह लड़की बोली — "ठीक है, अगर ऐसा है तो मेरे खच्चर की पूँछ को चूम लो और मैं तुमको यह पेटी दे दूँगा।"

वह लड़का सचमुच में उस पेटी को लेना चाहता था सो उसने चारों तरफ देखा कि कोई उसको देख तो नहीं रहा और यह यकीन करने के बाद कि वाकई उसको कोई नहीं देख रहा था उसने उस लडके के खच्चर की पूँछ को चूम लिया और वह पेटी ले कर चला गया।

अगले दिन उन दोनों ने फिर एक दूसरे को देखा और फिर उसी तरीके से बात शुरू हुई —

"स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियाँ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

"एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

"एक पेटी को लेने के लिये तुमने भी तो मेरे खच्चर की पूँछ को चूमा।"

यह सुन कर उस नौजवान को जल्दी से कुछ विचार आया सो उसने जल्दी से उस दरजिन के कान में कुछ कहा और उससे उसकी सीढ़ियों के नीचे छिपने की इजाज़त माँग ली।

जब स्टैला सीढ़ियों से नीचे आयी तो वह नौजवान सीढ़ियों से बाहर की तरफ निकला और स्टैला को उसके स्कर्ट से पकड़ कर खींच लिया।

स्टैला चिल्लायी — "मैम मैम, ये सीढ़ियाँ तो मुझे मेरे स्कर्ट से भी पकड़ती हैं।"

उस शाम को छत पर खड़ी हुई स्टैला और अपने छज्जे पर खड़े हुए उस नौजवान में फिर ये बातें हुईं —

"स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियाँ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

लड़की फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

"एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

"एक पेटी को लेने के लिये तुमने भी तो मेरे खच्चर की पूँछ को चूमा।"

"मैम मैम, ये सीढ़ियाँ तो मुझे मेरे स्कर्ट से भी पकड़ती हैं।"

इस बार स्टैला ने जल्दी की। उसने जल्दी से सोचा अबकी बार मैं तुमको ठीक करती हूँ।

उसने उस नौजवान के नौकर को कुछ दिया और एक रात वह उसके घर में घुस गयी। वहाँ वह एक सफेद चादर से ढकी हुई हाथ में एक टार्च और एक खुली हुई किताब लिये हुए उसके सामने खड़ी हो गयी।

उसको देख कर तो वह नौजवान डर के मारे काँपने लगा — "ओ मौत, मेरे प्यार, मैं तो अभी जवान हूँ और धीरज वाला हूँ। तुम मेरी चाची के पास जाओ जो लड़ती है और बुढ़िया है।"

स्टैला ने अपने हाथ की टार्च बुझा दी और वहाँ से चली गयी। अगले दिन वे दोनों अपनी पुरानी जगह मिले और बात फिर वहीं से शुरू हुई —

"स्टैला डायना, स्टैला डायना। तुम्हारे मरजोरम के पौधे पर कितनी पत्तियाँ हैं?"

स्टैला ने जवाब दिया — "ओ कुलीन सुन्दर नौजवान, रात में कितने तारे चमकते हैं?"

नौजवान ने फिर वही जवाब दिया — "तारे तो गिने नहीं जा सकते क्योंकि वे तो बहुत सारे हैं।"

स्टैला फिर बोली — "तुमको तो मेरे मरजोरम के पौधे की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं होनी चाहिये।"

"एक छोटी सी मछली के लिये तुमने मुझे इतना सुन्दर चुम्बन दिया।"

"पेटी को लेने के लिये तुमने मेरे खच्चर की पूँछ को चूमा।"

"मैम मैम, ये सीढ़ियाँ तो मुझे मेरे स्कर्ट से भी पकड़ती हैं।"

"ओ मौत, मेरे प्यार, मैं तो अभी जवान हूँ और धीरज वाला हूँ। तुम मेरी चाची के पास जाओ जो लड़ती है और बुढ़िया है।"

हाल के इस मजाक पर उस नौजवान ने सोचा बस अब काफी हो गया अब मैं उससे हमेशा के लिये दोस्ती कर लेता हूँ।

उसने अपना यह काम कहते ही कर लिया। वह तुरन्त ही दवा बेचने वाले के पास गया और उससे शादी के लिये स्टैला का हाथ माँग लिया।

दवा बेचने वाला यह सुन कर बहुत खुश हुआ और तुरन्त ही उनकी शादी भी हो गयी। जब शादी का दिन पास आ रहा था तो स्टैला को डर लगा कि कहीं उसका दुलहा कहीं उससे उसकी पिछली छेड़खानी का बदला न ले।

सो उसने अपने मन में कुछ तय किया। उसने एक ज़िन्दा आदमी जितनी बड़ी पेस्ट्री की एक गुड़िया बनायी जो बिल्कुल उस के जैसी लग रही थी। दिल की जगह उसने लाल रंग मिली फेंटी हुई क्रीम[53] से भरा एक थैला रख दिया।

शादी की रस्म के बाद वह अपने कमरे में चली गयी। वहॉ जा कर उसने वह गुड़िया अपने बिस्तर में रख दी और उसको अपना रात के सोने वाला गाउन और टोपी पहना दी। फिर वह वहीं छिप कर बैठ गयी।

वह नौजवान उस कमरे में आया और बुदबुदाया — "आह, आखिर हम लोग एक साथ हो ही गये। अब वह समय आ गया है जब मैं उससे अपने साथ की गयी सारी शरारतों का सारा बदला चुका लूँगा।"

कह कर उसने एक छुरा निकाला और उस गुड़िया के दिल में घोंप दिया। वह थैला फट गया और उसकी सारी क्रीम निकल कर बाहर फैल गयी, यहॉ तक कि दुलहे के चेहरे पर भी।

"ओह बेचारा मैं, मेरी स्टैला का तो खून भी कितना मीठा है। मै उसे कैसे मार सका? उफ, काश मैं उसे फिर से ज़िन्दा कर सकता।"

[53] Translated for the words "Whipped Cream".

सुनते ही स्टैला अपनी छिपी हुई जगह से बाहर निकल आयी और अपनी घंटी जैसी आवाज में बोली — "यह रही तुम्हारी स्टैला। भगवान मुझे बचाये रखे मैं ज़िन्दा हूँ।"

दुलहा तो स्टैला को देख कर बहुत ही खुश हो गया।

"मेरी स्टैला ज़िन्दा है, मेरी स्टैला ज़िन्दा है।" कहते हुए उसने स्टैला को गले से लगा लिया और फिर वह एक साथ मिल जुल कर रहने लगे।

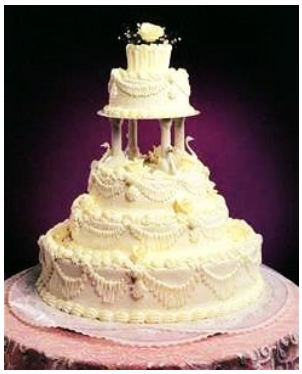

26 टिक्की टिक्की टैम्बो[54]

एशिया महाद्वीप के चीन देश की हॅसी की यह लोक कथा यह बताती है कि वहॉ के लोगों ने अपने नाम लम्बे लम्बे रखना क्यों छोड़ा।

एक बार बहुत पुराने समय में चीन देश में एक परिवार में दो बेटे रहते थे। उनमें से बड़े बेटे का नाम जिसको परिवार का सारा पैसा मिलने वाला था बहुत लम्बा रखा गया जैसा कि किसी बड़े बेटे का नाम होना चाहिये था।

उसका नाम था – टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो[55]। और दूसरे बेटे को जिसको दुनियॉ में अपनी रोजी रोटी खुद कमानी थी और जो इतना खास नहीं था उसको पिंग नाम दे दिया गया। पर यह इसलिये ऐसा नहीं था कि वह उनके बड़े बेटे जितना प्यारा नहीं था।

ये दोनों भाई आपस में बहुत अच्छे दोस्त भी थे और आपस में एक दूसरे के साथ खेलना भी बहुत पसन्द करते थे।

एक दिन वे दोनों भाई टेग का खेल खेल रहे थे कि छोटा पिंग नदी के पास भीगी जमीन पर फिसल गया और नदी में गिर पड़ा।

.[54] Tikki Tikki Tembo – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site : http://americanfolklore.net/folklore/2012/07/tikki_tikki_tembo.html
Adopted, retold and written by SE Schlossler

[55] Tikki Tikki Tembo No Sarembo Hari Kari Pi Chi Pip Peri Pembo.

यह देख कर टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो डर गया। दोनों में से किसी भी भाई को तैरना नहीं आता था।

टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो तुरन्त ही चिल्लाता हुआ घर दौड़ा गया — "मॉ मॉ, पिंग नदी में गिर पड़ा है।"

मॉ भी यह सुन कर परेशान हो गयी और बोली — "चलो जा कर तुम्हारे पिता को बताते हैं।" सो मॉ और टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो दोनों पिता को ढूँढने खेत पर पहुँचे।

वहॉ पहुँच कर टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो चिल्लाया — "पिता जी पिता जी, पिंग नदी में गिर गया है।"

पिता भी परेशान सा चिल्लाया — "क्या? पिंग नदी में गिर गया है? चलो हमको अपने पड़ोसी की नाव ले कर उसको नदी में से निकालने के लिये जाना चाहिये।"

सो टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो, उसकी मॉ और उसके पिता तीनों पड़ोसी की नाव लेने पड़ोसी के घर पहुँचे।

पिता बोला — "ओ पड़ोसी, हमारा पिंग नदी में गिर पड़ा है। क्या हम उसको निकालने के लिये तुम्हारी नाव उधार ले सकते हैं?"

पड़ोसी भी चिल्लाया — "क्या? पिंग नदी में गिर पड़ा है? यह तो बहुत बुरा हुआ। तुम मेरी नाव ले जाओ और तुरन्त जा कर पिंग को बचाओ।"

सो तीनों पड़ोसी की नाव ले कर नदी की तरफ गये और पिंग को जो करीब करीब डूब सा ही गया था बचा लिया।

कुछ हफ्ते बाद टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो और पिंग दोनों कुँए से पानी भर रहे थे कि टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो उस कुँए में बहुत नीचे तक झुक गया और कुँए में गिर गया।

यह देख कर पिंग को चिन्ता हो गयी क्योंकि दोनों भाइयों में से कोई भी तैरना नहीं जानता था। पिंग चिल्लाता चिल्लाता माँ के पास भागा गया — "माँ माँ, टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर गया है।"

माँ चिल्लायी — "अरे, क्या टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुँए में गिर पड़ा है? चलो चल कर तुम्हारे पिता को बतायें।"

सो दोनों टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो के पिता को ढूँढने गये। उनके पिता अपने वर्कशाप में रसोईघर के लिये एक मेज बना रहे थे।

वहॉ जा कर उन्होंने पिता को बताया कि टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुॅए में गिर पड़ा है।

यह सुन कर पिता भी चिन्तित हो कर बोला — "क्या? टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुॅए में गिर पड़ा है? चलो हम अपने माली से सीढ़ी मॉगते हैं और टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो को बचाते हैं।"

तीनों माली से सीढ़ी मॉगने गये। वे माली से बोले — "टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुॅए में गिर पड़ा है हमें अपनी सीढ़ी दे दो हमको उसे कुॅए में से निकालना है।"

माली भी चिल्लाया — "अरे, क्या टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो कुॅए में गिर पड़ा है। बड़ी खराब बात है। हॉ हॉ तुम मेरी सीढ़ी ले जाओ और उसको जल्दी से जा कर बचाओ।"

सो पिता ने माली की सीढ़ी उठायी और उसको टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो को बचाने के लिये कुॅए में लगायी।

पर टैम्बो का नाम लेने में सबको इतनी देर लगी कि पिता को वहॉ तक आने में ही देर हो गयी और तब तक तो टिक्की टिक्की टैम्बो नो सरैम्बो हरी करी पाई ची पिप पैरी पैम्बो तो कुॅए में डूब चुका था।

तब से चीन के लोग छोटे नाम ही रखते हैं।

27 किसान ज्योतिषी[56]

एक बार एक राजा की बड़ी कीमती अँगूठी खो गयी। उसने उसको सब जगह ढूँढ लिया पर वह उसे कहीं भी नहीं मिली।

सो उसने ऐलान करवा दिया कि अगर कोई ज्योतिषी यह बतायेगा कि उसकी अँगूठी कहाँ है तो वह उसको ज़िन्दगी भर के लिये मालामाल कर देगा।

अब वहाँ एक किसान भी रहता था जिसका नाम था गैम्बारा[57]। वह बहुत ही गरीब था। उसके पास बिल्कुल भी पैसे नहीं थे। वह पढ़ा लिखा भी नहीं था।

उसने सोचा — "क्या ज्योतिषी बनने का बहाना करना बहुत मुश्किल होगा? मुझे लगता है कि कम से कम मुझे ज्योतिषी बनने की कोशिश तो करनी चाहिये।" यही सोच कर वह राजा के पास चला।

वहाँ जा कर उसने राजा को बताया कि वह एक ज्योतिषी था और राजा की अँगूठी का पता बताने के लिये आया था। तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसका कहा मान गया। उसने उसको एक कमरा दे दिया ताकि वहाँ वह शान्ति से बैठ कर पढ़ लिख कर उसकी अँगूठी का पता बता सके।

---

[56] The Peasant Astrologer – a folktale from Italy from its Mantua area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin. 1980.

[57] Gambara – the name of the peasant

उस कमरे में सिवाय एक चारपाई, एक मेज पर रखी बहुत बड़ी ज्योतिष की किताब, कागज, कलम और दवात के अलावा और कुछ नहीं था।

गैम्बारा मेज पर बैठ गया और बिना एक भी शब्द समझे बूझे उस किताब के पन्ने पलटने लगा। कभी कभी वह उस किताब पर कलम से कुछ निशान भी बनाता जाता था।

वह क्योंकि पढ़ना लिखना तो जानता नहीं था इसलिये उसने उस किताब पर जो निशान बनाये थे वे तो बस निशान ही थे उनका कोई मतलब तो था नहीं। उसको कुछ न कुछ तो बहाना करना ही था।

जब राजा के नौकर उसका दोपहर का और शाम का खाना ले कर आते थे तो जिस तरीके से वह किताब खोल कर रखता था और उस पर निशान बनाता था उससे उनको लगता था कि वह एक बहुत बड़ा ज्योतिषी था।

उधर गैम्बारा के मन में भी चोर था सो वह भी जब वे उसके कमरे में आते थे कनखियों से उनकी तरफ देखता रहता था।

असल में ये ही वे नौकर थे जिन्होंने राजा की अँगूठी चुरायी थी सो जब भी गैम्बारा उनकी तरफ देखता तो उनको यह लगता कि वह उनको शक की निगाहों से देख रहा है जबकि वह तो उनको साधारण तरीके से ही उनकी तरफ देखता था क्योंकि उसको तो कुछ पता ही नहीं था – न तो ज्योतिष का और न ही चोरों का।

और उन नौकरों को यह लग रहा था कि गैम्बारा अपनी विद्या में बहुत होशियार है सो डर के मारे वे बेचारे ठीक से उसके आगे झुक भी नहीं सकते थे। उनको हमेशा ही यह लगता रहता कि कब वह अपनी ज्योतिष विद्या से उनको पहचान न जाये।

वे बेचारे "ओ ज्योतिषी, आपकी छोटी से छोटी इच्छा भी हमारे लिये आपका हुक्म है।" कह कर डर के मारे जल्दी से वहाँ से चले जाते।

अब गैम्बारा काई ज्योतिषी तो था नहीं और पढ़ा लिखा भी नहीं था पर किसान था इसलिये चालाक था। उसको कुछ शक हो गया कि ये नौकर अँगूठी के बारे में जरूर कुछ जानते हैं तभी ये लोग इस तरीके से बर्ताव कर रहे हैं सो उसने उनके लिये एक जाल बिछाया।

एक दिन जब उनमें से एक नौकर उसके लिये दोपहर का खाना ले कर आया तो वह अपनी चारपाई के नीचे छिप गया। नौकर जब उसके कमरे के अन्दर आया तो उसने कमरे में किसी को नहीं देखा।

गैम्बारा चारपाई के नीचे से ज़ोर से चिल्लाया — "यह उनमें से एक है। यह उनमें से एक है।" यह सुनते ही नौकर ने खाने की थाली नीचे रखी और डर के मारे भाग गया।

अब दूसरा नौकर आया तो उसने भी कुछ ऐसी ही आवाज सुनी जैसे वह जमीन के नीचे से आ रही हो — "यह उनमें से दूसरा है।

यह उनमें से दूसरा है।" यह सुनते ही वह दूसरा नौकर भी भाग गया।

फिर तीसरा नौकर कमरे में आया तो वह चिल्लाया — "यह उनमें से तीसरा है। यह उनमें से तीसरा है।" यह सुन कर वह नौकर भी भाग गया।

अब तीनों नौकरों ने आपस में बात की — "लगता है कि इस ज्योतिषी को हमारी चोरी के बारे में पता चल गया है। अब अगर यह ज्योतिषी राजा को हमारे बारे में बता देता है तो हमारी तो नौकरी ही खत्म।"

सो उन लोगों ने उस ज्योतिषी के पास जाने का निश्चय किया और अपनी चोरी की बात मान लेने का फैसला किया। वे तीनों उस ज्योतिषी के पास गये।

उन्होंने शुरू किया — "हम लोग गरीब आदमी हैं। जो कुछ भी आपने मालूम किया है अगर आप वह राजा साहब से कह देंगे तो हम तो कहीं के नहीं रहेंगे। आप सोने से भरा हुआ यह बटुआ ले लीजिये और हमें छोड़ दीजिये।"

गैम्बारा ने वह बटुआ तो उनसे ले लिया और बोला — "मैं तुमको नहीं पकड़वाऊँगा पर इस शर्त पर कि तुम लोग जैसा मैं कहूँ वैसा ही करोगे।" वे चोर राजी हो गये।

गैम्बारा फिर बोला — "तुम अँगूठी लो और उस टर्की को बाहर खेत में निकाल कर उसको यह अँगूठी

निगलवा दो। उसके बाद तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो मैं देख लूँगा।" नौकरों ने वैसा ही किया।

अगले दिन गैम्बारा राजा के पास गया और बोला कि काफी कुछ पढ़ने के बाद मैं यह जान गया हूँ कि वह अँगूठी कहाँ है।

राजा खुश हो कर बोला — "कहाँ है?"

"एक टर्की ने उसको निगल लिया है।"

हालाँकि ज्योतिषी की बात पर राजा को विश्वास तो नहीं हुआ कि कोई टर्की मेरी अँगूठी कैसे निगल सकती है पर फिर भी उसने उस टर्की को अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

वह टर्की राजा के सामने लायी गयी और उसको काटा गया तो उसमें से अँगूठी निकल आयी।

इसके बदले में राजा ने ज्योतिषी को बहुत सारी दौलत दी और साथ में एक दावत भी दी जिसमें उसने अपने राज्य के और आस पास के राज्यों के बहुत सारे लोग बुलाये थे।

बहुत सारी खाने की चीज़ों में एक गैम्बैरी[58] भी पकायी गयी थी। गैम्बैरी केफ़िश का दूसरा नाम है।

केफ़िश को उस देश में कोई जानता नहीं था। असल में दूसरे देशों के लोग उसको उस देश के राजा के लिये वह भेंट में ले कर आये थे और वहाँ के लोग इस मछली को पहली बार देख रहे थे।

[58] Gamberi is the other name of crayfish. See the picture of crayfish above.

राजा उस किसान से बोला — "तुम तो ज्योतिषी हो तुम बताओ कि इस प्लेट में रखी यह क्या चीज़ है।"

बेचारा किसान जिसने उसको पहले कभी सुना नहीं कभी देखा नहीं था अपने आप में बुदबुदाया — "आह गैम्बारा, गैम्बारा, आज तू मारा गया।"

राजा जो उस ज्योतिषी का असली नाम नहीं जानता था खुशी से चिल्लाया — "बहुत अच्छे, बहुत अच्छे ज्योतिषी। तुमने ठीक जाना। इसका नाम गैम्बेरी ही है। तुमसे बड़ा ज्योतिषी तो इस दुनियॉ में कोई है ही नहीं।"

28 दिमियॉ किसान[59]

हॅसी की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली है।

यह बहुत पहले की बात नहीं है, या कहो तो शायद बहुत पुरानी बात हो, मैं बहुत यकीन के साथ नहीं कह सकता पर रूस में कहीं पर एक गॉव में एक किसान रहता था – मूजिक[60]।

यह किसान बहुत जिद्दी था और इसको गुस्सा भी बहुत जल्दी आता था। इसका नाम था दिमियॉ। यह स्वभाव से ही बहुत कठोर स्वभाव का था और चाहता था कि सारे काम उसी की मर्जी से हों और उसी की तरह से हों जैसे वह चाहता हो।

अगर कोई उसके खिलाफ कुछ करता हो या कहता हो तो वह उसका जवाब अपने घूॅसे से देने को तैयार रहता था। उदाहरण के लिये कभी कभी वह अपने पड़ोसी को बुलाता तो उसकी बहुत अच्छी अच्छी खाने पीने की चीज़ों से खातिरदारी करता।

पड़ोसी अपने पुराने रीति रिवाज निभाने के लिये उनको मना करने का बहाना करता तो दिमियॉ बस उससे लड़ पड़ता। वह उससे कहता कि उसको मेजबान का कहना मानना चाहिये।

---

[59] Dimian the Peasant – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site :
From the Book "Folk Tales from the Russian", by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. Translation of this book in Hindi is available from hindifolktales@gmail.com in E-book form free of charge

[60] Moujik

एक बार एक बहुत ही चतुर आदमी उसके घर आया तो हमारे मूजिक दिमियॉ ने मेज पर अपने सबसे अच्छे खाने लगा दिये और अच्छा समय गुजारा। मेहमान ने भी उसका लगाया सारा सामान जल्दी जल्दी खा लिया।

दिमियॉ तो यह देख कर दंग रह गया पर वह उसको छोड़ने वाला थोड़े ही था। वह अपना नया काफ्तान निकाल लाया और अपने मेहमान से कहा — "तुम अपनी यह भेड़ की खाल उतार दो और लो मेरा यह नया काफ्तान पहन लो।"

जब वह उससे यह कह रहा था तो वह सोच रहा था "मैं इस बार शर्त लगाता हूॅ कि यह इसको स्वीकार करने की हिम्मत नहीं करेगा। और अगर इसने इसको वाकई स्वीकार नहीं किया तो फिर मैं इसको सबक सिखाता हूॅ।

पर उसके उस मेहमान ने तो तुरन्त ही उसका वह नया काफ्तान पहन लिया उसकी पेटी बॉध ली अपने घुॅघराले बालों वाला सिर हिलाया और बोला — "इस भेंट के लिये बहुत बहुत धन्यवाद चाचा जी। मैं इसको न लेने की हिम्मत कैसे कर सकता था। लोगों को अपने मेजबान का कहा तो मानना ही चाहिये।"

अन्दर ही अन्दर दिमियॉ का गुस्सा ऊपर चढ़ता जा रहा था। क्योंकि वह तो उसे अपने तरीके से ही व्यवहार करवाना चाह रहा था। मगर क्या करता।

वह तुरन्त ही अपने अस्तबल की तरफ दौड़ा वहाँ से अपना सबसे अच्छा घोड़ा निकाल कर लाया और अपने मेहमान से बोला — "तुम मेरी सारी चीज़ें ले सकते हो।"

पर मन में उसने सोचा "इस बार यह जरूर ही मना कर देगा तब मेरी बारी आयेगी।"

पर आश्चर्य उसने तो मना ही नहीं किया।

वह मुस्कुराते हुए बोला — "अपने घर में तो आप ही राजा हैं चाचा जी।" कह कर वह तुरन्त ही उस घोड़े पर कूद कर बैठ गया और दिमियॉ किसान पर चिल्ला कर बोला — "विदा मास्टर आपको किसी दूसरे ने जाल में नहीं फॉसा सिवाय आपने खुद ने।"

और यह कह कर वह वहाँ से चला गया। दिमियॉ उसके पीछे देखता रह गया। फिर बोला — "मैंने गलत आदमी पर निशाना लगाया।"

29 चमार ज्योतिषी[61]

एक बार की बात है कि इस्फाहान शहर में अहमद नाम का एक चमार रहता था। उसकी इच्छा बस यही थी कि वह अपनी ज़िन्दगी शान्ति से गुजारे और उसने ऐसा कर भी लिया होता अगर उसने एक बहुत सुन्दर लड़की से शादी न कर ली होती तो।

उस लड़की का नाम सितारा था। सितारा ने भी अहमद से शादी अपनी इच्छा से कर तो ली थी पर वह उसके सादगी भरे तरीके से रहने से सन्तुष्ट नहीं थी। वह हमेशा ही अमीर बनने के लिये और अच्छी तरह से रहने के लिये कोई न कोई बेवकूफी भरी चाल सोचती रहती।

अहमद ने भी हालॉकि उसको कभी इन चालों के लिये कोई बढ़ावा नहीं दिया पर क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था तो वह उसके लिये कुछ भी करने के लिये तैयार रहता था जिसमें उसको खुशी मिले। वह उससे लड़ना बिल्कुल भी नहीं चाहता था।

एक प्यारी सी मुस्कुराहट और हॉ में सिर हिलाना ही उसके रोज के सपनों का जवाब रहता। वह खुद हमेशा ही यह सोचती थी कि वहा बहुत अमीरी के लिये बनी हुई थी।

---

[61] Cobbler Astrologer – a folktale from Arabia, Asia. Taken from the Book "Folk-lore and Legends : Oriental", by Charles John Tibbitts. 1889. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com as e-book free of charge.

एक दिन ऐसा हुआ कि यही सोचते सोचते वह हमाम[62] में नहाने गयी तो वहाँ उसने एक स्त्री को बहुत ही आलीशान पोशाक और गहने पहने देखा। वह अपनी कई दासियों से घिरी हुई थी। उसको देख कर वह उसकी तरफ देखती ही रह गयी। सितारा हमेशा से ही इस तरीके से रहना चाहती थी।

सो जैसे ही उसने उसे देखा तो उसने उसका नाम जानने की कोशिश की जो इतना गहना पहने हुए थी और जिसकी इतनी सारी दासियाँ थीं। पूछने पर पता चला कि वह तो राजा के मुख्य ज्योतिषी की पत्नी थी।

यह सुन कर वह घर लौट आयी। उसका पति घर के दरवाजे पर ही खड़ा था। वह आते ही उसके ऊपर गुस्से से बरस पड़ी।

अहमद बेचारे ने उसे बहुत बार प्यार से सहलाया मनाया ताकि वह उसके चहरे पर मुस्कुराहट ला सके या उससे कुछ मीठे शब्द बुलवा सके पर घंटों तक वह चुप ही बैठी रही जैसे उसके ऊपर दुख का कोई बहुत भारी पहाड़ टूट पड़ा हो।

आखिर वह बोली — "यह सहलाना वहलाना छोड़ो जब तक कि तुम मुझे इस बात का सबूत न दे दो कि तुम मुझे बहुत प्यार करते हो।"

[62] Hamaam means "Bathroom" where people take shower or bath.

अहमद बेचारा यह सुन कर सन्न रह गया। वह बोला — "क्या सबूत। प्यार का तुम्हें ऐसा क्या सबूत तुमको चाहिये जो मैं तुम्हें न दे सकता हूँ।"

सितारा बोली — "तुम अपना यह चमार वाला धन्धा छोड़ दो यह बहुत ही नीचा और गन्दा काम है। इसके अलावा इसमें तुमको पैसा भी बहुत कम मिलता है – केवल दस बारह दीनार बस। तुम अब ज्योतिषी का काम करना शुरू कर दो। उससे तुम्हारी किस्मत भी बन जायेगी और मेरी भी इच्छाऐं पूरी हो जायेंगी और मैं भी खुश रहूँगी।"

अहमद बोला — "क्या कहा तुमने ज्योतिषी? क्या तुम यह भूल गयी हो कि मैं कौन हूँ? मैं चमार हूँ। क्या तुम यह चाहती हो कि बिना कुछ पढ़े लिखे मैं एक ऐसा धन्धा करूँ जिसमें बहुत कुछ पढ़ने लिखने और सीखने की जरूरत होती है।"

पत्नी गुस्से में भर कर बोली — "मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि तुम कितना पढ़े लिखे हो। मैं तो बस इतना जानती हूँ कि अगर तुमने तुरन्त ही ज्योतिषी काम शुरू नहीं किया तो बस समझ लो कि मैं कल ही तुमसे तलाक ले लूँगी।"

चमार ने उसको बहुत समझाने की कोशिश की कि वह अपनी इस हालत से ज्योतिषी कभी नहीं बन सकता पर सब बेकार। सितारा गहनों से सजी हुई और दासियों से घिरी हुई ज्योतिषी की पत्नी की शक्ल अपने दिमाग से निकाल ही नहीं पा रही थी।

सारी रात वह उसी के बारे में सोचती रही। वह सपने में भी वही देखती रही। सुबह को जब वह उठी तो उसने बोल दिया कि अगर उसके पति ने उसकी बात नहीं मानी तो वह उस दिन घर छोड़ कर चली जायेगी।

अब बेचारा अहमद क्या करे। वह कोई ज्योतिषी तो था नहीं पर वह अपनी पत्नी को बहुत ज़्यादा प्यार करता था। वह तो सपने में भी उसे अलग रहने की नहीं सोच सकता था। सो उसने उससे कहा कि वह उसकी बात मानेगा।

उसके पास जो कुछ भी थोड़ा बहुत सामान था वह उसने बेचा और उसे बेच कर एक पंचांग खरीदा बारह ग्रहों की एक लिस्ट खरीदी और ज्योतिष से सम्बन्धित कुछ और चीज़ें खरीद कर वह बाजार चला गया।

वहाँ बैठ कर वह आवाज लगाने लगा — "मैं ज़्योतिषी हूँ मैं ज्योतिषी हूँ मैं सूरज को जानता हूँ मैं चाँद को जानता हूँ मैं तारों को जानता हूँ। मैं बारह राशियों को जानता हूँ। मैं सबका स्वभाव बता सकता हूँ। मैं वह सब बता सकता हूँ जो होने वाला है।"

अहमद चमार को सब लोग जानते थे सो बहुत जल्दी ही उसके चारों तरफ भीड़ जमा हो गयी। एक बोला — "अरे यह क्या दोस्त अहमद। क्या तुम्हारा दिमाग घूम गया है।"

दूसरा बोला — "क्या तुम नीचे नीचे देखते देखते थक गये हो जो अब तुम ऊपर आसमान के ग्रहों को देखने लग गये हो।"

बेचारे चमार के कानों में ऐसे और ऐसे कई और मजाक पड़ने लगे। वह इतना सीधा था कि उसकी समझ में ये मजाक समझ में भी नहीं आये सो वह कहता ही रहा कि वह एक ज्योतिषी है। उसने सोच रखा था कि वह अपनी पत्नी को खुश करने के लिये कुछ भी करेगा।

एक दिन उधर से राजा का जौहरी गुजर रहा था। वह बहुत परेशान था क्योंकि उससे राजा के ताज में लगने वाला कीमती लाल[63] खो गया था। वह उसको सारे में ढूँढ चुका था पर वह उसको कहीं मिल ही नहीं रहा था।

जौहरी को यह भी पता था कि वह इस बात को राजा से बहुत देर तक नहीं छिपा सकता था सो उसको लग रहा था कि अब उसकी मौत निश्चित थी। इसी नाउम्मीदी की हालत में जब वह शहर में घूम रहा था तो वह अहमद के पास लगी भीड़ के पास पहुँचा और उसने भीड़ से पूछा कि क्या बात थी।

भीड़ में से एक आदमी हॅसते हुए बोला — "तुम अहमद चमार को तो जानते हो न। उसको कहीं से प्रेरणा मिल गयी है तो वह अपना चमार का काम छोड़ कर ज्योतिषी बन गया है।"

डूबते को क्या चाहिये तिनके का सहारा। जौहरी ने जैसे ही "ज्योतिषी" शब्द सुना तो वह अहमद के पास चल दिया।

[63] Translated for the word "Ruby" – it is one of the nine precious gems. See its picture above.

उसके पास जा कर उसने उसको अपनी उलझन बतायी और कहा — "अगर तुमको अपनी विद्या आती है तो तुम मेरे लाल का पता बता दोगे। तुम उसका पता बता दो मैं तुम्हें सोने के दो सौ मुहरें दूँगा। और अगर छह घंटे के अन्दर अन्दर तुम उसका पता न बता पाये तो मैं दरबार में अपना सारा ज़ोर यह साबित करने में लगा दूँगा कि तुम ज्योतिषी व्योतिषी कुछ नहीं हो बस एक धोखा देने वाले हो।"

यह सुन कर तो अहमद के ऊपर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह तो बस बिना हिले डुले बिना बोले खड़ा का खड़ा रह गया। वह अपनी बदकिस्मती के बारे में सोच सोच कर दुखी हो गया।

वह अपनी पत्नी के बारे में सोचने लगा जिसको वह इतना प्यार करता था और जिसने अपने जलन और स्वार्थ के लिये उसको आज वहाँ ला कर खड़ा कर दिया था। और जिसको खुश करने की वजह से आज वह इस मुसीबत में पड़ गया था।

यह सब सोचते सोचते उसके मुँह से ज़ोर से निकला — "ओ स्त्री। तू आदमी के लिये खुशी लाने की बजाय उसके लिये रेगिस्तान के जहरीले साँप से भी ज़्यादा खतरनाक है।"

अब हुआ क्या था कि राजा का लाल जौहरी की पत्नी ने चुराया था। अपनी इस चोरी का उसको बहुत पछतावा हुआ तो उसने अपनी एक दासी को अपने पति पर नजर रखने के लिये भेजा।

इस दासी ने देखा कि जौहरी एक ज्योतिषी से बात कर रहा था तो वह उसके पास तक चली आयी। और जब उसने अहमद को औरत को एक जहरीले सॉप से तुलना करते हुए सुना तो उसको विश्वास हो गया कि यह ज्योतिषी तो सब कुछ जानता है।

वह डर के मारे बदहवास सी तुरन्त ही अपनी मालकिन के पास दौड़ी गयी और बोली — "मालकिन मालकिन आपकी पोल खुल गयी है। सड़क पर बैठे एक बेकार के से ज्योतिषी को आपके बारे में सब कुछ पता चल गया है। छह घंटे बीतने से पहले पहले यह कहानी सबको मालूम पड़ जायेगी और आप बदनाम हो जायेंगी।

अगर आप खुशकिस्मती से आप अपनी जान बचा कर भाग भी पायीं तो भी आपको कोई ऐसा आदमी ढूँढना पड़ेगा जो आपके ऊपर दयालु रहे।"

उसके बाद उसने उसको वह सब कुछ बताया जो उसने बाजार में देखा और सुना था। अहमद का बोलना तो मालकिन के दिमाग पर भी इतना ही गहरा असर डाल गया जितना कि उसने उसकी दासी के दिमाग पर डाला था।

जौहरी की पत्नी ने तुरन्त ही अपना बुरका पहना और उस खतरनाक ज्योतिषी को ढूँढने चल दी। जब वह उसे मिल गया तो वह उसके पैरों में पड़ कर बोली — "मेहरबानी कर के मेरी ज़िन्दगी और इज़्ज़त बचाओ। मैं सब बता दूँगी।"

अहमद की समझ में कुछ नहीं आया तो वह बोला — "आपको मुझे क्या बताना है।"

जौहरी की पत्नी बोली — "कुछ नहीं। कुछ नहीं। जैसे तुम्हें कुछ पता ही नहीं है। जैसे तुम जानते ही नहीं कि राजा के ताज से लाल मैंने ही चुराया है।

यह मैंने इसलिये किया था ताकि मैं अपने पति को सजा दे सकूँ जो मेरे साथ बहुत ही बेरहमी का बर्ताव करता है। और मैंने सोचा कि इस तरह से मैं बहुत सारा खजाना भी पा लूँगी और उसको मौत की सजा दिलवा दूँगी।

पर तुम तो बहुत ही बढ़िया आदमी निकले। तुमसे तो कुछ छिपा हुआ ही नहीं है। तुमने तो उसे ढूँढ लिया और मेरा सारा प्लान चौपट कर दिया। अब मुझे तो बस तुम्हारी मेहरबानी चाहिये। मैं वही करूँगी जो तुम कहोगे।"

स्वर्ग से कोई देवदूत भी अहमद को इतना आराम नहीं दे सकता था जितना कि जौहरी की पत्नी ने उसे वहाँ आ कर दिया। उसने अपनी बहुत ही सादी सी शक्ल बनायी जो अब उसकी एक नयी शक्ल हो गयी थी।

वह गम्भीरता से बोला — "ओ स्त्री मुझे सब कुछ पता है जो तूने किया है और यह तेरे लिये अच्छी किस्मत की बात है कि तू अपने पाप को स्वीकार करने के लिये मेरे पास खुद ही चली आयी है। इससे पहले कि देर हो जाये तू अल्लाह से रहम की माँग कर।

तू अभी अभी घर लौट जा और वह लाल अपने उस काउच के तकिये के नीचे रख दे जहॉ तेरा पति सोता है। उसको दरवाजे से दूर रखना और शान्त रहना तेरा जुर्म कभी किसी को पता नहीं चलेगा।"

जौहरी की पत्नी तुरन्त ही घर लौटी और वह लाल उसने अपने पति के काउच के तकिये के नीचे रख दिया। करीब एक घंटे बाद अहमद उसके पीछे पीछे गया और जौहरी से कहा कि उसने सब कुछ गुणा भाग कर लिया है।

उसकी जानकारी के अनुसार सूरज और चॉद और तारों की जगहों के अनुसार लाल आपके काउच पर रखे तकिये के नीचे दरवाजे से काफी दूर पर रखा है।

जौहरी को तो यह सुन कर लगा कि जैसे अहमद पागल हो गया है पर जैसे सूरज की एक किरन भी स्वर्ग से आयी किरन की तरह होती है। यह सुन कर वह अपने काउच की तरफ भागा और लो उसको यह देख कर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई कि अहमद ने लाल की जगह जहॉ बतायी थी वह उसको वहीं मिल गया।

वह तुरन्त ही अहमद के पास वापस आया और उसे गले से लगा लिया। उसे उसने अपना सबसे प्यारा दोस्त और अपनी ज़िन्दगी बचाने वाला कह कर पुकारा। उसने उसको सोने की दो सौ

मुहरें दीं और कहा कि वह अपने समय का सबसे बड़ा ज्योतिषी था।

जब चमार ने अपनी ऐसी तारीफ सुनी तो उसकी तो खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह इसके लिये अपनी किस्मत के मुकाबले में अल्लाह का बहुत ऋणी था।

जैसे ही वह घर में घुसा तो उसकी पत्नी दौड़ी दौड़ी बाहर आयी और बोली — "मेरे प्यारे ज्योतिषी। आज का दिन कैसा रहा।"

अहमद ने बड़ी गम्भीरता से कहा — "यह देखो। ये दो सौ सोने की मुहरें हैं। मुझे उम्मीद है कि अब तुम सन्तुष्ट होगी। तुम अब फिर से मेरी ज़िन्दगी को उथल पुथल करने के लिये नहीं कहना जैसा कि मैंने आज सुबह किया है।"

कह कर उसने उसे वह सब कुछ बता दिया जो उस दिन उसके साथ हुआ था। पर उसकी इस कहानी का जो असर अहमद पर पड़ा था उससे उसकी पत्नी के ऊपर कोई दूसरा ही असर डाला।

सितारा को तो केवल सोना ही दिखायी दे रहा था जिसकी सहायता से वह अब राजा के मुख्य ज्योतिषी की पत्नी के दिल में जलन पैदा कर सकेगी।

वह बोली — "मेरे प्यारे पति थोड़ा धीरज रखो। आज का दिन तो इस अच्छे काम का पहला दिन था। काम करते रहो। अल्लाह तुम्हें जरूर अमीर बनायेगा। फिर हम लोग अमीर हो जायेंगे और खुशी से रहेंगे।"

यह सुन कर अहमद का दिल पिघल गया और उसने फिर दूसरी बार कोशिश करने की सोची। अगले दिन वह फिर से अपना ज्योतिष का सामान ले कर बाजार चल दिया यानी अपनी ग्रहों की लिस्ट पंचांग आदि और वहाँ जा कर चिल्लाने लगा — "मैं ज्योतिषी हूँ। मुझे सूरज चाँद और सितारे सबकी चालों का पता है। मैं बता सकता हूँ कि आगे क्या होने वाला है।"

यह सुन कर उसके चारों तरफ फिर से भीड़ इकट्ठा हो गयी पर इस बार यह भीड़ उसका मजाक बनाने के लिये इकट्ठी नहीं हुई थी बल्कि आश्चर्य की वजह से हुई थी। क्योंकि उसकी लाल ढूँढने की कहानी एक ही दिन में दूर दूर तक फैल चुकी थी।

इस तारीफ ने अहमद को इस्फ़ाहान में एक बहुत बड़े ज्योतिषी के रूप में मशहूर कर दिया था।

जब सब लोग उसकी तरफ देख रहे थे तो एक स्त्री बुरका पहने हुए उधर से गुजरी। वह शहर के एक बहुत बड़े रईस की पत्नी थी और अभी अभी हमाम से नहा कर आ रही थी। वहाँ उसका बहुत कीमती हार और कान के बुन्दे खो गये थे।

वह अब बड़ी सावधानी से घर की तरफ जा रही थी उसको डर था कि कहीं ऐसा न हो कि उसके पति को यह पता चल जाये कि वह अपने गहने अपने किसी प्रेमी को दे आयी है।

अहमद के चारों तरफ भीड़ देख कर उसने वहाँ खड़े लोगों से पूछा कि वहाँ क्या हो रहा है जो इतने सारे लोग वहाँ जमा हैं।

उन्होंने उसको उस मशहूर ज्योतिषी की कहानी बतायी कि कैसे वह पहले एक चमार था और फिर कैसे उसको यह दैवीय ज्ञान प्राप्त हुआ और अब कैसे वह अपने इन कागजों की सहायता से भविष्य बता सकता है। उसके बाद उसको राजा के जौहरी और उसके लाल की कहानी बतायी। और भी कई घटनायें बतायीं जो कभी हुई ही नहीं।

वह स्त्री उसके बारे में यह सब सुन कर बहुत प्रभावित हुई। वह तुरन्त ही अहमद के पास गयी और उससे बोली — "तुम्हारे जैसा ज्ञान और अनुभव वाला आदमी तो यह बात अच्छी तरह से बता सकता है कि मेरा गहना कहॉ है। मेहरबानी कर के मुझे बताओ कि वे कहॉ हैं मैं तुम्हें पचास सोने की मुहरें दूॅगी।"

बेचारा चमार तो यह सुन कर सन्न रह गया। वह नीचे की तरफ देखने लगा और सोचने लगा कि वह अपनी अज्ञानता की वजह से होने वाली इस बदनामी से कैसे छुटकारा पाये।

इधर जब यह स्त्री भीड़ में से गुजर रही थी तो उसका बुरका नीचे से फट गया जिसे अहमद ने देख लिया तो इससे पहले कि उससे पहले कि यह बात कोई और उसे बताये वह उसको बड़ी नम्रता से बताना चाह रहा था।

वह बोला — "मैम ज़रा नीचे छेद की तरफ देखिये।"

उस स्त्री के दिमाग में तो उस समय बस अपने गहने खोने की बात ही घूम रही थी। वह उस समय यह याद करने की कोशिश कर रही थी कि यह सब हुआ कैसे।

अहमद की बात सुन कर उसको कुछ होश आया तो वह खुश होती हुई बोली — "ज़रा रुको। तुम तो बहुत ही बड़े ज्योतिषी हो। मैं अभी तुम्हारा इनाम ले कर वापस आती हूँ जिसके तुम अधिकारी हो।" यह कह कर वह तुरन्त ही वहाँ से चली गयी और कुछ ही देर में लौट भी आयी।

उसके एक हाथ में हार और कान के बुन्दे थे और दूसरे हाथ में एक बटुआ था जिसमें पचास सोने की मुहरें थीं। वह बोली — "लो यह तुम्हारे लिये सोना है। तुम तो बहुत ही बढ़िया ज्योतिषी हो जिसको प्रकृति के सारे भेद मालूम हैं।

मैं तो बिल्कुल भूल ही गयी थी कि मैंने अपने गहने कहाँ रखे हैं। तुम्हारे बिना तो मैं इनको बिल्कुल भी नहीं पा सकती थी। जब तुमने मुझसे नीचे छेद की तरफ देखने के लिये कहा तो मुझे याद आया हमाम की दीवार के नीचे वाला छेद जहाँ मैंने नहाने से पहले कपड़े उतारते समय इनको वहाँ रख दिया था।

अब मैं शान्ति और आराम से घर जा सकती हूँ केवल तुम्हारी वजह से। तुम सब अक्लमन्द आदमियों में सबसे ज़्यादा अक्लमन्द हो।"

यह कह कर वह वहॉ से अपने घर चली गयी और अल्लाह का धन्यवाद करते हुए अहमद अपने घर वापस लौट आया। उसने यह पक्का इरादा कर लिया था कि वह अब ज्योतिषी बनने की कोशिश कभी नहीं करेगा और इस पैसे के लालच में नहीं पड़ेगा।

पर उसकी सुन्दर पत्नी अभी तक राजा के मुख्य जौहरी की पत्नी को पहनावे ओढ़ावे में मात नहीं दे सकी थी सो उसने अहमद से अपनी मॉगें और धमकियॉ जारी रखीं ताकि वह अपने प्यारे पति को ज्योतिषी का काम जारी रखने के लिये उकसा सकें।

इन्हीं दिनों की बात है कि राजा के खजाने से सोने और जवाहरातों के चालीस बक्से लूट लिये गये। इससे देश के खजाने का काफी हिस्सा लूट लिया गया था।

मुख्य खजांची और दूसरे औफीसर लोग बड़ी मेहनत से चोर की खोज में लगे हुए थे पर उनका कुछ पता ही नहीं चल पा रहा था। राजा ने अपने ज्योतिषी को बुलवाया और उससे कहा कि अगर उसने फलॉ फलॉ समय तक चोरों का पता नहीं चलाया तो वह और उसके मुख्य मुख्य मन्त्री लोगों को मार दिया जायेगा।

समय बीतता जा रहा था। निश्चित समय में अब केवल एक दिन बाकी बचा था। उन सबकी सब कोशिशें बेकार हो चुकी थीं। राजा के मुख्य ज्योतिषी के सारे गुणा भाग बेकार हो चुके थे। उसने अपना सारा ज्ञान लगा कर देख लिया था पर चोर का पता ही नहीं चल रहा था।

तब उनमें से एक आदमी ने कहा कि हमको उस चमार को बुलवाना चाहिये जो कुछ ही दिनों में इतना मशहूर ज्योतिषी हो गया है। हो सकता है कि वह हमें उनके बारे में कुछ बता दे। सब लोग इस बात पर राजी हो गये सो तुरन्त ही दो आदमियों को अहमद को लाने के लिये भेज दिया गया और उनसे कहा कि वे अहमद को अपने साथ ले कर आयें।

चमार अपनी पत्नी से बोला — "लो देखो अपनी इस इच्छा का फल। मैं अब मरने जा रहा हूँ। राजा के ज्योतिषी ने मेरे बारे में सुन लिया है और अब वह मुझे जाली ज्योतिषी बनने के जुर्म में मार देना चाहता है।"

जब वह मुख्य ज्योतिषी के महल में घुसा तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा का मुख्य ज्योतिषी खुद उसको लेने के लिये बाहर चला आ रहा है।

उसने उसको अन्दर ले जा कर एक बड़ी इज़्ज़त वाली कुर्सी पर बिठाया और इतनी धीमी आवाज में बोला जितनी कि वह खुद ही सुन सके — "ओ सबसे होशियार अहमद। अल्लाह के तरीकों को कोई नहीं जान सकता। जो बहुत ऊँचे होते हैं उनको नीचा देखना पड़ता है और जो नीचे होते हैं वह उनको ऊपर बिठा देता है।

यह सारी दुनियॉ सबकी अपनी अपनी किस्मत के अनुसार चलती है। आज किस्मत से नीचा देखने की मेरी बारी है और किस्मत से ऊपर उठने की तुम्हारी बारी है।"

तभी राजा का एक दूत वहाँ आ गया जिसने उनकी बातों को बीच में ही रोक दिया। उसने चमार की ज्योतिष के बारे में ऊँचा सुन कर यह चाहा कि उसको उसके सामने पेश किया जाये।

बेचारा अहमद यह सुन कर तो काँप ही गया। उसको लगा कि बस उसकी ज़िन्दगी आज तक ही की है। फिर भी राजा का हुक्म तो हुक्म था सो वह उस दूत के पीछे पीछे चल दिया। रास्ते भर वह अल्लाह से यही प्रार्थना करता जा रहा था कि वह उसे इस खतरे से निकाल ले।

जब वह राजा के सामने आया उसने राजा को जमीन तक झुक कर आदाब किया और राजा के अमीर और लम्बी उम्र की इच्छा की। राजा ने उससे पूछा — "अहमद तुम बताओ कि मेरा खजाना किसने चुराया है।"

कुछ सोच कर अहमद ने जवाब दिया — "सरकार यह किसी एक आदमी का काम नहीं है। इस चोरी में चालीस चोर शामिल थे।"

राजा बोला — "बहुत अच्छे। पर वे थे कौन और उन्होंने मेरे सोने और जवाहरातों का क्या किया।"

अहमद बोला — "हुजूर इन सवालों का जवाब मैं अभी नहीं दे सकता पर मैं आशा करता हूँ कि मैं सरकार को इन सवालों के जवाब दे सकता हूँ। अगर आप मुझे हिसाब किताब करने के लिये चालीस दिन दें।"

राजा बोला — "ठीक है। मैं तुम्हें चालीस दिन देता हूँ पर जब ये दिन गुजर जायेंगे और अगर मेरा खजाना नहीं मिला तो तुम्हें अपनी ज़िन्दगी देनी पड़ेगी।"

अहमद खुशी खुशी घर लौट आया क्योंकि अब उसके पास इतना समय था कि वह उस जगह से भाग कर कहीं और जा सकता था जहॉ उसका मशहूर होना उसकी बदकिस्मती न बन रही हो।

जब वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि दरबार की क्या खबर है। वह बोला कोई खबर नहीं है सिवाय इसके कि चालीस दिन के बाद अगर मैंने राजा के शाही खजाने से चुराये गये सोने और जवाहरात के चालीस बक्से ढूँढ कर नहीं दिये तो मुझे मरवा दिया जायेगा।"

"लेकिन तुम चोरों को ढूँढोगे।"

"मगर कैसे। और मैं उनको कैसे ढूँढूँगा।"

"उसी तरीके से जैसे तुमने जौहरी का लाल ढूँढा था और उस स्त्री का गहना ढूँढा था।"

अहमद बोला — "क्या उसी तरीके से? ओ बेवकूफ औरत। तुझे अच्छी तरह मालूम है कि मुझे ऐसी कोई तरकीब नहीं आती। वह सब तो मैंने तुझे खुश करने के लिये बहाना बनाया था।

पर इतनी तरकीब तो मुझे आती थी कि उसे ढूँढने के लिये मैंने राजा से चालीस दिन मॉग लिये हैं। अब इस समय में आसानी से किसी दूसरे शहर भाग जाऊँगा और जितना पैसा अभी मेरे पास है

उससे और अपने पुराने काम की सहायता से हम फिर से ईमानदारी की ज़िन्दगी बिता पायेंगे।"

उसकी पत्नी बोली — "उँह ईमानदारी की ज़िन्दगी। क्या तेरा यह चमार का धन्धा मुझे मुख्य ज्योतिषी की पत्नी को बराबर में कहीं रख पायेगा। तू मेरी बात सुन ले अहमद। तू केवल राजा का खजाना ढूँढने पर अपना दिमाग लगा।

लाल और उस स्त्री के गहने ढूँढने की तरह तुझे यह एक बहुत अच्छा मौका मिला है। मैं हर समय देखती रहूँगी कि तू कहीं भाग न जाये। और अगर तूने भागने की कोशिश की तो मैं राजा के औफीसरों को खबर कर दूँगी। वे आ कर तुझे ले जायेंगे और फिर चालीस दिन पूरे होने से पहले ही तुझे मार डालेंगे।

तू मुझे अच्छी तरह से जानता है अहमद कि मैं कोई बात ऐसे ही नहीं कहती। सो हिम्मत कर और इस काम को कर। किस्मत चमकने का यह मौका हाथ से न जाने दे। तू मेरी ज़िन्दगी वैसी ही बना दे जैसी कि मुझ जैसी किसी सुन्दर स्त्री की होनी चाहिये।"

चमार बेचारा तो उसकी यह स्पीच सुन कर बहुत दुखी हुआ पर उसको यह भी पता चल गया था कि उसकी पत्नी का फैसला बदला नहीं जा सकता था सो वह बोला — "ठीक है। तुम्हारी इच्छा पूरी की जायेगी। मेरी तो बस अब यही इच्छा है कि अपनी ज़िन्दगी के बचे हुए दिन खुशी और शान्ति से गुजार लूँ।

तुम्हें मालूम है कि मैं कोई पढ़ा लिखा आदमी नहीं हूॅ और न ही मुझे हिसाब की कोई जानकारी है। मेरे पास केवल चालीस दिन हैं। तुम चालीस दिन की चालीस परचियॉ बना कर रख लो।

जब मैं अपनी रोज की रात की प्रार्थना कर लूॅ तो तुम मुझे रोज एक तारीख की परची पकड़वा देना ताकि मैं उसे एक शीशी में बन्द कर के रख लूॅ और उन्हें गिन कर यह जान सकूॅ कि अब मुझे कितने दिन और जिन्दा रहना है।"

उसकी पत्नी यह सुन कर बहुत खुश हुई कि उसके पति ने उसकी बात मान ली है। उसने चालीस तारीखें डाल कर चालीस परचियॉ बनायीं और जैसा उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था वैसा ही करने का उससे वायदा किया।

इस बीच वे चोर जिन्होंने राजा का खजाना चुराया था पहचाने जाने और फिर पकड़े जाने के डर से शहर के बाहर नहीं भाग पा रहे थे। पर उनको भी अपने ढूॅढने की कोशिशों की सारी सूचना सही सही मिल रही थी।

जब राजा ने अहमद को बुलवा भेजा था तो उनमें से एक चोर महल के सामने लगी भीड़ में था। उसने जब यह सुना कि चमार ने उनकी संख्या बिल्कुल ठीक बता दी थी तो वह तो बहुत डर गया और अपने साथियों की तरफ दौड़ गया।

वहाँ जा कर उसने उनको बताया कि हम लोग तो पकड़े जा चुके हैं। इस नये ज्योतिषी अहमद ने तो हमारी संख्या भी बिल्कुल ठीक बता दी है कि हम लोग चालीस चोर हैं।

उन चोरों के समूह के सरदार ने कहा — "इस बात को बताने के लिये किसी ज्योतिषी की जरूरत नहीं थी। असल में यह अहमद तो अपने सीधे होने के बावजूद बहुत ही जिद्दी किस्म का आदमी ही।

जब उसने देखा कि राजा के खजाने के चालीस बक्से चोरी चले गये हैं तो उसने सोचा कि चालीस आदमी ही इतना सारा सामान ले कर जा सकते हैं एक चोर यह काम कैसे कर सकता है। और उसने यह गिनती ठीक ही बतायी। बस ऐसा ही कुछ हुआ। फिर भी उस पर नजर रखना जरूरी है क्योंकि उसने हमारे बारे में कुछ अजीब अजीब सी खोजें की हैं।

हममें से एक को आज रात को अँधेरा होने के बाद उस ज्योतिषी अहमद के घर की छत पर जाना चाहिये और उसकी अपनी पत्नी के साथ बातचीत सुननी चाहिये क्योंकि वह उसको बहुत पसन्द करता है। और मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि वह उसे अपनी सफलता की कहानी जरूर बतायेगा।"

हर एक ने उसकी बात को माना और जैसे ही रात को अँधेरा हो गया उन चालीस चोरों में से एक चोर अहमद के घर की छत पर

था। वह वहाँ उसी समय पहुँचा था जब अहमद अपनी रात की प्रार्थना खत्म करके चुका था।

प्रार्थना खत्म होने के बाद सितारा ने जैसा कि उन दोनों के बीच तय हुआ था उसको तारीख लिखा हुआ पहला कागज दिया। अहमद ने वह कागज अपने हाथ में लिया और बोला — "आह। सो चालीस में से यह पहला है।"

जैसे ही छत पर बैठे चोर ने यह सुना तो वह तो डर के मारे वहाँ से उठ कर अपने साथियों के पास भाग लिया। वहाँ जा कर उसने उनको बताया कि जैसे ही वह वहाँ पहुँचा तो अहमद ने अपनी दैवीय ताकत से उसके वहाँ होने के बारे में जान लिया। उसने अपनी पत्नी से तुरन्त ही कहा "सो चालीस में से यह पहला है।"

इस चोर की कहानी पर किसी ने विश्वास नहीं किया। किसी ने कहा "तुम डर गये होगे।"। किसी ने कहा "तुम्हें गलती लग गयी होगी।"

इसके बाद यह तय पाया गया कि अगले दिन रात को दो आदमी जायेंगे और वे भी उसी समय जिस समय आज वह आदमी गया था और फिर देखेंगे कि क्या होता है।

अबकी बार अगले दिन दो चोर अहमद के घर पर पहुँचे। उसी समय अहमद अपनी रात की प्रार्थना करके चुका था सो सितारा ने उसको दूसरी तारीख की परची थमायी तो अहमद बोला — "प्रिये

आज वहाँ दो हैं।" और यह कह कर उसने उसे उसी बोतल में डाल दी जिसमें उसने पहले दिन पहली तारीख की परची डाली थी।

दोनों चोरों ने यह सुना और आश्चर्य के मारे डर कर वहाँ से भाग लिये कि इसको तो पता चल गया कि यहाँ दो चोर छिपे हैं। वे भाग कर अपने साथियों के पास आये और उन्हें सब बताया जो अहमद के घर में हुआ था तो उन्होंने भी दाँतों तले उँगली दबा ली।

इस तरह तीसरे दिन तीन आदमी भेजे गये चौथे दिन चार आदमी भेजे गये और सबका कहना वही था कि उसको पता नहीं कैसे पता चल जाता है कि आज वहाँ कितने चोर हैं और वह उनकी संख्या ठीक ठीक बता देता है।

पकड़े जाने के डर से वे लोग उसके घर शाम के बाद अँधेरा हो जाने के बाद ही जाते थे। वही समय अहमद की रात की प्रार्थना का होता था और प्रार्थना के बाद सितारा उसको परची देती थी।

जैसे ही सितारा उसको परची देती थी अहमद अपनी परचियों का नम्बर गिन कर बोल देता था। यह सुन कर चोरों को विश्वास हो गया कि अहमद को उनके वहाँ होने का पता चल जाता था।

आखिरी दिन चालीसों चोर यह चमत्कार देखने के लिये अहमद के घर गये। उस दिन अहमद अपनी आखिरी चालीसवीं परची लेने के बाद चिल्लाया — "ओह आज तो यह संख्या पूरी हो गयी। आज की रात तो चालीसों यहाँ हैं।"

अब तो सारे शक दूर हो गये थे क्योंकि यह तो किसी भी तरह मुमकिन नहीं था कि अहमद को उन सबके वहाँ होने का कोई तरीका पता था। यह तो केवल दैवीय ताकत से ही मुमकिन हो सकता था कि वह रोज उनके वहाँ होने का ठीक ठीक नम्बर पता कर लेता था। यह सब जरूर उसने अपने ज्योतिष की जानकारी से सीखा होगा।

चोरों के सरदार ने भी यह मान लिया कि इतने बड़े अक्लमन्द आदमी को धोखा देना नामुमकिन है। सो उन्होंने आपस में सलाह की कि वे अहमद को अपनी सब बातें बता दें और उससे दोस्ती कर लें। इस बात को छिपाने के लिये वह अपने चुराये हुए धन में से उसको भी कुछ हिस्सा दे देंगे।

उसकी सलाह मान ली गयी और सुबह होने से एक घंटा पहले अहमद के घर का दरवाजा खटखटाया। गरीब आदमी बेचारा अपने बिस्तर से कूद कर बाहर आया।

उसको लगा कि आज चालीस दिन पूरे हो चुके हैं और राजा के आदमी अब मुझे सजा देने के लिये पकड़ने आये हैं सो वह चिल्लाया — "मेहरबानी कर के ज़रा रुको। मुझे मालूम है कि तुम लोग यहाँ क्यों आये हो। यह एक बहुत ही बुरा और नीच काम है।"

चोरों का सरदार बेला — "तुम तो बहुत ही बढ़िया आदमी निकले। हम पूरी तरह से तुम्हारा विश्वास करते हैं कि तुम जानते हो कि हम यहाँ क्यों आये हैं। हम अपने उस काम के लिये भी कोई

दलील देने नहीं आये हैं जिसके बारे में तुम कुछ कहने जा रहे हो। लो ये दो हजार सोने की मुहरें लो ये हम तुम्हें दे रहे हैं इस शर्त पर कि तुम कसम खाओ कि इस बारे में तुम किसी से कुछ नहीं कहोगे।

अहमद बोला — "क्या कहा तुमने कि मैं यह बात किसी से न कहूँ? तुम क्या यह सोचते हो कि मैं इतनी बुरी बात को बिना शिकायत किये सहूँगा और दुनियाँ को नहीं बताऊँगा।"

चोर अपने घुटनों पर बैठते हुए बोले — "मेहरबानी कर के हम पर दया करो। हमारी जान बचाओ। हम कसम खाते हैं कि हम राजा का सारा शाही खजाना वापस कर देंगे।"

यह सुन कर अहमद चौंक गया। उसने यह देखने के लिये अपनी आँखें मलीं कि वह सो रहा था या फिर जाग रहा था। यह पक्का करने के बाद कि वह सो नहीं रहा था जाग रहा था और उसके सामने सच्चे चोर खड़े थे वह गम्भीर आवाज में बोला —

"ओ अपराधियों तुम्हारा तो दूर तक पीछा किया जायेगा ताकि तुम मुझसे बच कर न भाग सको। क्या तुम्हें मालूम है कि मेरी पहुँच सूरज और चाँद तक है। और मुझे आसमान के हर तारे का पता है कि वह कहाँ है। अच्छा हुआ तुम समय रहते पछतावा करने के लिये आ गये इसने तुम्हें बचा लिया।

पर अभी तुम सब यहाँ से चले जाओ और जा कर राजा का शाही खजाना राजा को वापस कर दो। तुम यहाँ से सीधे चले जाओ

और खजाने के चालीसों बक्से राजा को वैसे के वैसे ही वापस कर दो जैसे तुम उनको उठा कर लाये थे।

उन सब बक्सों को ले जा कर राजा के महल से दूर जो पुराना हमाम है उसके खंडहर की दक्षिणी दीवार के पास एक फुट गहरे जमीन में गाड़ दो। अगर तुमने यह काम अभी अभी ठीक से कर लिया तो तुम्हारी ज़िन्दगी बच जायेगी।

और अगर तुमने ज़रा सा भी इधर उधर किया तो तुम्हारे और तुम्हारे परिवारों पर पहाड़ टूट पड़ेगा।"

चोरों ने वायदा किया कि वे वैसा ही करेंगे जैसा कि अहमद ने उनसे करने के लिये कहा था और वहॉ से चले गये। उनके जाते ही अहमद अपने घुटनों पर बैठ कर अल्लाह की इस कृपा का धन्यवाद देने लगा।

दो घंटे बाद राजा के सिपाही आये और उन्होंने अहमद से अपने साथ चलने के लिये कहा।

उसने कहा कि वह अपनी पत्नी से विदा ले कर अभी उनके साथ आता है। उसके लिये उसने सोच रखा था कि वह उसको अकेला छोड़ कर नहीं आयेगा जब तक कि वह यह न देख ले कि उसके किये का क्या नतीजा रहा।

उसने बड़े प्यार से उसको विदा कहा। सितारा ने भी इस इम्तिहान के मौके पर अपने आपको बहुत सॅभाल कर रखा। अपने

पति को खुश रहने के लिये कहा और अल्लाह की अच्छाइयों के बारे में कुछ शब्द कहे।

पर सच बात तो यह थी कि सितारा को शक था कि अल्लाह ने उसके चमार पति को कोई सहारा दिया था। वह हमेशा यही सोचती रहती थी कि उसकी सुन्दरता तो उसकी तरफ कोई अमीर प्रेमी आकर्षित कर सकती थी जो उसको हमाम तक खूब शान शौकत से अच्छे कपड़े और कीमती गहने पहना कर और दासियों से घिरी हुई भेजता जैसे कि मुख्य ज्योतिषी की पत्नी जाती थी। उसकी छवि अभी उसकी याद से गयी नहीं थी।

अल्लाह के नियम बड़े ठीक होते हैं। अहमद और उसकी पत्नी सितारा को जो चाहिये था वह उसके पास तैयार था। भला आदमी अहमद राजा के सामने खुश खुश खड़ा था और राजा उसका बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

अहमद के आते ही राजा बोला — "अहमद तुम्हारे चेहरे से तो लगता है कि तुमको अपने काम में सफलता मिल गयी है। तुमको शाही खजाने का पता चल गया है।"

चमार पढ़ा लिखा तो नहीं था पर होशियार बहुत था। वह अपने ज्योतिष के गुणा भाग की तरफ देखता हुआ बोला — "सरकार आपको चोर चाहिये या खजाना? मेरे सितारे मुझे दोनों में से केवल एक चीज़ देने के लिये ही कहते हैं। योर मैजेस्टी दोनों में

से किसी एक को चुन लें। मैं आपको केवल एक चीज़ ही दे सकता हूँ दोनों नहीं।"

राजा बोला — "मुझे बहुत दुख होगा अगर मैंने चोरों को सजा नहीं दी तो पर तुम अगर ऐसा ही चाहते हो तो ऐसा ही सही। मैं अपना खजाना लेना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

अहमद बोला — "और फिर आप चोरों को आजाद कर देंगे?"

राजा बोला — "हॉ अगर वे मेरा खजाना बिल्कुल अनछुआ वापस कर दें तो।"

अहमद बोला — "तब चलिये सरकार मेरे साथ चलिये। आपका खजाना आपको मिल जायेगा।"

राजा उसके दरबारी और अहमद सब लोग पुराने हमाम के खंडहर की तरफ चल दिये। रास्ते में अहमद ने आसमान की तरफ मुँह कर के कुछ पढ़ा जो देखने वालों को ऐसा लगा जैसे वह कोई जादू के शब्द पढ़ रहा हो। जबकि वह अपने सच्चे दिल से अल्लाह की प्रार्थना कर रहा था।

जब उसकी प्रार्थना खत्म हो गयी तो उसने हमाम की दक्षिणी दीवार की तरफ इशारा किया और मैजेस्टी से कहा कि वह वहॉ पर खुदायी करें तो उनको उनका खजाना वहीं मिल जायेगा।

राजा के लोगों ने बहुत थोड़ी सी ही खुदायी की थी कि उनको अपने सारे बक्से उसी हालत में मिल गये जिसमें वे चुराये गये थे। यानी उन पर खजॉची की सील भी अभी तक लगी हुई थी।

बक्से देख कर राजा की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा। उसने अहमद को गले लगा लिया और तुरन्त ही उसको अपना मुख्य ज्योतिषी नियत कर दिया।

उसने उसको अपने महल में रहने के लिये एक घर दे दिया और घोषित किया कि अब इसको राजा की एकलौती बेटी से शादी कर लेनी चाहिये क्योंकि यह उसका कर्तव्य था कि जिसने उसकी इतनी सहायता की वह उसको आगे बढ़ाये। अल्लाह के उस बन्दे को आराम पहुँचाये जिसने उसके राज्य के खजाने को वापस लाने में सहायता की।

पर उसकी नौजवान बेटी जो चॉद के जैसी सुन्दर थी अपने पिता के इस फैसले से असन्तुष्ट नहीं थी क्योंकि उसका दिमाग तो धर्म और गुणों की तरफ लगा हुआ था।

उसने धरती पर जीने के लिये जिन चीज़ों की जरूरत होती है उससे ऊपर उठ कर दैवीय गुणों का आदर करना सीख लिया था। उसको विश्वास था कि अहमद के पास वे सब गुण थे।

जैसे ही यह तय किया गया सब इस शाही हुक्म के पालन करने में लग गये। किस्मत ने **180** डिग्री का पलटा खा लिया था। सुबह को अहमद अपने बिस्तर से बड़े दुखी मन से उठा था कि शायद

आज उसको अपनी जान गॅवानी पड़ेगी पर शाम तक तो वह एक महल में रह रहा था और एक ताकतवर राजा की अकेली बेटी से शादी किये बैठा था।

पर इस बदलाव ने उसके चरित्र में कोई बदलाव नहीं लाया। जैसे जब वह गरीब था तो वह बहुत ही नम्र था और जब वह अमीर हो गया तब वह बहुत ही भला और तमीजदार हो गया। उसको अपनी अज्ञानता का पता था इसलिये वह अपनी खुशकिस्मती को अल्लाह की कृपा ही मानता रहा।

वह रोज ब रोज सुन्दर और गुणवती राजकुमारी को ज़्यादा और और ज़्यादा प्यार करता रहा। इससे वह अपनी पुरानी पत्नी के साथ के बर्ताव को बदलने से रोक नहीं सका। उसने अब उसको प्यार करना छोड़ दिया था। वह अब उसकी बेकार की शान के बदले में खुद बहुत तरीके की बात करने लगा था।

30 बहरा परिवार[64]

एक बार की बात है कि एक परिवार था – एक आदमी उसकी पत्नी और उनकी बेटी। वे तीनों ही नहीं सुन सकते थे। एक दिन पति ने सोचा कि वह अपने गधे को नदी पर उसको पानी पिलाने के लिये ले जाता है। सो उसने अपना गधा लिया और उसको नदी की तरफ ले चला।

जब वह नदी के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ तो बहुत सारे चरवाहे अपने अपने जानवरों को पानी पिलाने के लिये लाये हुए हैं।

जब वह अपने गधे को उस नदी में पानी पिलाने लगा तो दूसरे चरवाहे बोले — "यहाँ हम अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं क्योंकि तुम्हारा गधा है सो तुम अपने गधे को बाद में पानी पिलाना।"

बहरा बोला — "मुझे अफसोस है कि मेरा गधा बिकाऊ नहीं है।"

यह जवाब सुन कर वे सोचने लगे कि इसको क्या हो गया है। वे फिर बोले — "हमें इससे कोई मतलब नहीं है कि तुम्हारा गधा बिकाऊ है या नहीं हम तो बस यह चाहते हैं कि तुम्हारा गधा हमारे

[64] The Deaf Family – An Afar folktale from Ethiopia. Taken from : http://www.ethiopianfolktales.com/en/afar/26-the-deaf-family

जानवरों से पहले पानी न पिये।" क्योंकि जानवर गधे से ज़्यादा इज़्ज़त वाले होते हैं।

आदमी फिर बोला — "तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा। मैंने कहा मेरा गधा बिकाऊ नहीं है।"

उन लोगों ने सोचा कि यह आदमी तो लगता है कि पागल है सो वे चुप रह गये। जब गधे ने पेट भर कर पानी पी लिया तो वे दोनों वहाँ से चले गये।

घर पहुँच कर वह अपनी पत्नी के पास रसोईघर में गया और बोला — "क्या तुम मेरा विश्वास करोगी कि आज मुझे कुछ सौदागर मिले। वे मुझसे जिद कर रहे थे कि मैं उनको अपना गधा बेच दूँ पर मैंने उनको मना कर दिया कि मेरा गधा बिकाऊ नहीं है।"

पत्नी ने ऊपर की तरफ देखा। उसने तो एक शब्द भी नहीं सुना था फिर भी वह बोली — "अगर तुम मुझे तलाक देने पर ही तुले हो तो मैं अब तुम्हारे घर में एक रात भी नहीं रुकूँगी। मैं अपने पिता के घर जा रही हूँ।"

इतना कह कर वह वहाँ से चली गयी और जा कर अपनी चीज़ें सँभालने लगी। जब वह अपनी चीज़ें सँभाल रही थी कि उनकी बेटी आ गयी। पत्नी ने ऊपर की तरफ देखा और बोली — "क्या तू विश्वास करेगी कि इतने साल बाद तेरे पिता मुझे घर जाने के लिये कह रहे हैं।"

बेटी ने भी ऊपर देखा और एक शर्मीली मुस्कान के साथ कहा — "आप लोग मेरे माता पिता हैं। और अगर आप मेरी शादी पक्की करना चाहते हैं तो मैं आपकी मर्जी के खिलाफ थोड़े ही जा सकती हूँ।"

List of Stories of "Humor in Folktales-1"

1. Live Your Life Wisely
2. Two Losses
3. Full of Bologna
4. Horse Sense
5. Nine Brothers
6. The Seven Happy Villagers
7. Nine Foolish Brothers
8. Three Sillies
9. The Pot That Wouldn't Walk
10. The Grandfather of Peter
11. Yaounde Goes to Town
12. Donald and His Neighbors
13. Obstinate Wife
14. One is Mine and One is Yours
15. A Calf That Was Sold Three Times
16. Egory the Brave and the Gypsy
17. A Monk and a Student
18. Mega Herb
19. A Man Learnt Stealing
20. Justful King Firdi
21. Why Male Mosquitoes Do Not Bite
22. The Beggar and the Bread
23. Spirit of a Priest
24. It is quite true
25. The Pot of Marjoram
26. Tikki Tikki Tembo
27. The Peasant Astrologer
28. Dimian the Peasant
29. Cobbler Astrologer
30. The Deaf Family

List of Stories of "Humor in Folktales-2"

1. The Golden Goose
2. Two Conmen
3. Three Deaf People
4. Ras Hailu in Geneva
5. King Tewodros and the Thief
6. The Porridge Pot
7. A King With Donkey Ears
8. The Wise Servant
9. The Woman Without Stockings
10. Qazi of Jaunpur
11. Guru Paramarth and His Five Foolish Disciples

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022